दैनिक भविष्य और अंक

लेखक

राधाकृष्ण श्रीमाली

प्रकाशक

कुसुम प्रकाशन

१७, शिवचरन लाल रोड

इलाहाबाद—३

प्रकाशक
कुसुम प्रकाशन
१७, शिवचरन लाल रोड
इलाहाबाद—३

दैनिक भविष्य और अंक
राधाकृष्ण श्रीमाली

प्रथम संस्करण :—जनवरी, १९७८

मूल्य : तीन रुपये मात्र

मुद्रक
जनरल आफसेट प्रिंटिंग प्रेस,
इण्डस्ट्रियल स्टेट नैनी
इलाहाबाद

दो शब्द आप से

मेरे परम प्रिय पाठक बंधु !

शुभ कामनाओं के लिए धन्यवाद !

ज्योतिष जगत के अथाह समुद्र में फल कथन रूपी रत्न को ढूंढ़ कर निकालना सचमुच टेढ़ी खीर है। अनेकों ने इस समुद्र को खंगलाने का प्रयास किया है और दुस्साहस मैंने भी किया है। कितना सफल, कितना विफल रहा, इसका निर्णय तो प्रबुद्ध, जागरूक पाठकों पर छोड़ता हूँ।

फल कथन की अनेक प्रचलित-अप्रचलित विधियों से मैं परिचित हूँ चाहे वह सामुद्रिक शास्त्र हो या जन्म चक्र, मुखाकृति विज्ञान हो या हस्ताक्षर विज्ञान, अंक शास्त्र हो अथवा रमल, पासे हो या प्लेइंग कार्ड्स ! हर विधि को सत्यापन की कसौटी पर कसा है। पीढ़ी दर पीढ़ी ज्योतिष प्रिय विषय रहा है। जीवन का बहुत बड़ा भाग मैंने खर्च किया है इस ओर। अपने विस्तृत संग्रहालय में हजारों की संख्या में गण मान्यों की कुण्डलियाँ संग्रहीत है। संग्रह में राजनीतिज्ञ, इतिहास विज्ञानवेता, पुरातत्व वेत्ता, धार्मिक, चोर, डाकू, आस्तिक, नास्तिक, भिक्षुक, शिक्षक, व्यापारी, नौकरी पेशा, फिल्मी हस्तियाँ, डाक्टर, इंजीनियर, वकील, बैरिस्टर, अध्यापकों की कुण्डलियाँ संग्रहीत है। कहने का तात्पर्य यह है कि मेरा साबका हर वर्ग के लोगों से निकट का, निकटतम रहा है। सभी स्तर के लोगों से संपर्क है।

लम्बी मंजिल चलने के बाद यही पाया है कि अंक ज्योतिष सत्यापन के कहीं अधिक निकट है और इसका प्रत्यक्ष उदाहरण 'अंक ज्योतिष और भविष्य' प्रकाशक—'कुसुम प्रकाशन है। हजारों पाठकों ने इसे सराहा है। साधुवाद उन्हें। पत्र के साथ अनेक पाठकों ने यह जिज्ञासा प्रकट की है कि—'पंडित जी ! क्या

ऐसी कोई पुस्तक आप नहीं दे सकते हमें जो Daily Guide का कार्य करे।' उनमें भी नेपाल से लिखे एक भाई का आग्रह सोचने पर मजबूर कर गया फलतः यह पत्रं-पुष्पं समर्पित है।

अंक ज्योतिष विदेशों में खूब फैलता जा रहा है एवं नवीनतम अनुसंधान इस पर हो रहे हैं। तथ्य एवं आंकड़े भी एकत्र किए जा रहे हैं। अस्तु ! इस ओर यह प्रयास कर पाया। मात्र १ से ९ तक के अंकों के आधार पर भूत-भविष्य व वर्तमान आंका जाता है। है न ! अद्भुत बात ! आश्चर्य जनक। हम २७ नक्षत्रों की गणना करते हैं। अंग्रेजी में २६ वर्ण हैं २७ योग हैं १६ तिथियाँ २ पक्ष १२ महीने ३६५ दिन का वर्ष ६ ऋतुएँ १५ वर्ष की आयु, सभी तो गणना पर, अंकों पर निर्भर है।

मैं लम्बे समय से पाठकों की सुविधा के लिए एक सहज, सरल, सुबोध, पुस्तक लिखने की इच्छा कर रहा था जिसके माध्यम से जन सामान्य लाभ उठा सके। अतः समर्पित है यह पुष्प !!

पुस्तक के इतने सुन्दर रूप एवं शीघ्र प्रकाशन के लिए मैं प्रकाशक महोदय एवं श्री रमेश चंद्र श्रीवास्तव का कृतज्ञ हूँ, आभारी हूँ जिनकी प्रेरणा, सद्भावना से आपके हाथों इन पन्नों को पहुँचा रहा हूँ !

पाठकों को प्रस्तुत पुस्तक में कहीं भी किसी भी प्रकार की भ्रांति हो अथवा वे किसी प्रकार की जिज्ञासा का समाधान चाहते हों तो मुझे निःसंकोच पत्र लिख सकते हैं। मैं अपने हर पाठक के पत्र का उत्तर देना नैतिक कर्त्तव्य मानता हूँ। यथा संभव उनकी शंकाओं का समाधान करने का प्रयास करूँगा ! धन्यवाद !

श्रीमाली सदन
लूनी जंकशन (राजस्थान)

आपका
राधाकृष्ण श्रीमाली

विषय-सूची

लेखक—राधाकृष्ण श्रीमाली द्वारा रचित ज्योतिष-शास्त्र की महत्वपूर्ण पुस्तकें :—

१—अंक ज्योतिष और भविष्य

२—प्रारम्भिक ज्योतिष

३—दशाफल दपर्ण

४—यंत्र साधना

५—आपका भविष्य १९७८

६—१९७८ में आपका राशिफल

"अंकों का रहस्य"

वर्तमान युग की सर्वोत्तम उपलब्धि है तो वह है अंक। अनेका नेक विज्ञानों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण, कटुसत्य, प्राचीनतम तदमपि नवीनतम विज्ञान है, वह है अंक। प्राचीन इस रूप में कि भारतीय मनीषियों, देवज्ञों, वेदज्ञों, खगोल शास्त्र वेत्ताओं, भविष्य वक्ताओं, वैज्ञानिकों ने इसका साँगोंपाँग अध्ययन, मनन चिन्तन किया, सोचा-समझा और जीवन में ढाला तथा नवीन इस रूप में कि आज इस पर विश्वस्तर पर सर्वाधिक मनन सर्वाधिक अध्ययन, चिन्तन हो रहा है। अस्तु यह स्तुत्य है। अंक हमारे जीवन का सच्चा साथी ही नहीं सहोदर कहूँ तो अत्योक्ति न होगी। मानव मात्र का हम दर्द अंक मित्र हूँ। सहचर एवं सुख-दुःख का साथी है। अंक पथ प्रदर्शक है। अंक भूत-वर्तमान-भविष्य का द्रष्टा किंवा श्रृष्टा है। घड़ी में पाँच बजे हैं। स्कूल सात बजे जाना है। दस रुपये की शक्कर लानी है। शहर ५० कि० मी० दूर है। नक्षत्र २७ व ग्रह ६ हैं। छः ऋतुएँ हैं। माला में मनिए १०८ हैं। सूर्य के दशा वर्ष ६ और शुक्र के दशा वर्ष २० हैं। इस पुस्तक का मूल्य चार रुपया है सजय ने १० पुस्तकें लिखी हैं। १०.२० पर गाड़ी जाती है। सोहन चालीस वर्ष का है उसके दो पुत्र हैं। मेरी जन्म तिथि १५।१०।१९३८ है। उसके पास ५ आम व ३ नारंगी है। इस प्रकार पायेंगे कि जीवन में हर क्षण, हर पल संख्या या अंक का महत्व सर्वोपरी है।

समस्त विश्व सचराचर एक अलौकिक, अदृश्य शक्ति से संचालित है। विश्व मूल रूप में ५ तत्वों से निर्मित है।

१. अग्नि
२. जल
३. वायु

४. पृथ्वी
५. नभ

अदृश्य या दृश्य सब कुछ इन उपरोक्त पाँच तत्वों से बना है। मनुष्य भी पाँच ही तत्वों से बना है। ग्रहों का प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष प्रभाव न्युनाधिक मनुष्य पर पड़ता है और स्पष्टता पड़ता है। पूर्णिमा को पागलों का पागलपन चरमावस्था पर पहुँच जाता है जबकि समुद्र में ज्वार आता है। हमारे ऋषि-महर्षियों ने बलाबल के आधार पर प्रत्येक ग्रह की जप संख्या निर्धारित की—

सूर्य की ७,०००
चन्द्रमा की ११,०००
मंगल की १०,०००
बुध की ६,०००
गुरु की १६,०००
शुक्र की १६,०००
शानि की २३,०००
राहु की १८,००० तथा
केतु की १६,०००

इन संख्या भेदों में भी परोक्ष-अपरोक्ष अंक ही तो प्रयोग में आते हैं। मंत्रों के मूल में भी अंक प्रधान हैं। गायत्री के २४ अक्षर हैं। नवाक्षर मंत्र में ६ अक्षर है। दुर्गा के नवार्ण मंत्र में ६ अक्षर है। मंत्रों के लिए त्रिकोण, चतुरकोण, षोड़पकोण, अष्ट दल बनते है उनमें भी अंक प्रधान है। जन्म पत्री रचना में होरा, नवमांश, सपृडश द्वादशांश, षोड़शांश, विशांश, चतुर्विशोश, खवेदोश सब में स्पष्टत: अंक प्रधान हैं।

गौरीयामल तंत्रानुसार यंत्र ४ प्रकार के हैं भूपृष्ठ कूर्मपृष्ठ, पद्मपृष्ठ व मेरू पृष्ठ। ६ पीठ शक्तियाँ हैं। सिद्धियाँ आठ व निद्धियाँ ६ तथा समुद्र से निकले रत्न १४ श्री, रंभा, विष, वारुणी अमृत, शंख, गजरात, धेनु, धनु, धनवन्तरी कल्पतरू, शशि, मणि बाज। बौद्धि विकाशार्थ ६ अक्षर का गणपति मंत्र है—'ॐ गं गणपतये नम:। विनायक शक्ति मंत्र में ४ अक्षर हैं—ॐ ह्रीं ग्रीं ह्रीं। शक्ति गणपति एकादशाक्षर मंत्र है—ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय

स्वाहा। इसी प्रकार द्वादश अक्षर शक्ति गणपति मंत्र है—ह्रीं गं ह्रीं महागणपतये स्वाहा स्वार्थ सिद्धि हेतु २७ मणियों की माला फेरने का विधान है तो मोक्ष प्राप्ति वास्ते २५ मणियों की माला का, लक्ष्मी प्राप्ति हेतु ३० मणियों की माला का, प्रेमी-प्रेमिका प्राप्ति वास्ते ५४ मणियों की माला तथा सर्व कार्य सिद्धि हेतु १०८ मणियों की माला का विधान है। प्रत्येक शुभ कर्म-यज्ञादिक में, सिद्धि कार्य में जपादि में १०८ मणियों की माला को प्रधानता दी गई है।

९ ग्रह और प्रत्येक ग्रह की दशा वर्ष भी भिन्न-भिन्न स्वीकार किए गए हैं—

दशा स्वामी	विशोंतरी दशा वर्ष	अष्टोत्तरी दशा वर्ष
सूर्य	६ वर्ष	६ वर्ष
चंद्र	१० वर्ष	१५ वर्ष
मंगल	७ वर्ष	८ वर्ष
बुध	१७ वर्ष	१७ वर्ष
गुरू	१६ वर्ष	१९ वर्ष
शुक्र	२० वर्ष	२१ वर्ष
शनि	१९ वर्ष	१० वर्ष
राहु	१८ वर्ष	१२ वर्ष
केतु	७ वर्ष	—

काल गणना तक में हमारे महर्षियों ने अंकों का ही आश्रय लिया। जीवन का मूलाधार सूर्य को माना जो १ माह में अपना एक वृत्त संपूर्ण कर लेता है। खगोल वृत्त ३६०^{2} अंशों पर आधारित है और उनकी कलाएँ भी ३६०×६०=२१६०० स्पष्ट होती है। सूर्य ६ माह उत्तरायण में व ६ माह दक्षिणायन में रहता है। इस प्रकार १ वर्ष में २ अयन (i) उत्तरायन (ii) दक्षिणायन और प्रत्येक अयन का सार २१६००÷२=१०८०० सिद्ध होता है। गणीतीय पद्धति में 'O' को यदि व्याज्य कर दें तो शुद्ध प्राप्त संख्या १०८ ही बच रहती है, यही कारण है कि महर्षियों ने १०८ की माला को प्रधानता दी।

काल मान में अंकों का प्रयोग देखें—

२ निमेष = १ त्रुटि = २४ प्रति सैकंड = १/१० असु = १ विपल
१० त्रुटि = १ प्राण = ४ सैकंड = १ असु = १० विपल
६ प्राण = १ पल = २४ ,, = असु = ६० विपल
२½ पल = १ मिनिट = ६० ,, = १५ ,,
६० पल = १ घटी = २४ मिनट = ३६० असु
२½ घटी = १ घंटा = ६० ,, = २०० ,,
६० घटी = २४ घंटा = १ अहोरात्र (दिन-रात)
२½ विपल = १ सैकंड = ६० प्रति सैकंड
६० विकला = १ कला
६० कला = १ अंश
३० अंश = १ राशि
१२ राशि = १ भगण

यह विज्ञान सम्मत बात है कि समधर्मी वस्तुएँ परस्पर आकर्षण करती है तथा ठीक इसी प्रकार प्रत्येक संख्या या हर मूलांक समान धर्मी अंक को अपनी ओर आकर्षित करता है। एक का अंक एक से संबंधित व्यक्ति को तो ५ का अंक ५ से संबंधित व्यक्ति को अपनी ओर आकर्षित अवश्य ही करता है। इनमें परस्पर प्रगाढ़ मैत्री, बल, विश्वास, सौहार्द्ध अनुभव करेंगे। परस्पर विरोधी अंकों का प्रतिनिधित्व करने वाले व्यक्तियों में परस्पर शत्रुता, विकर्षण, विरोध, होगा। परस्पर अविश्वास की भावना प्रबल रहती है। इनमें दोस्ती निभ ही नहीं सकती। ऐसे युगलों के दाम्पत्य जीवन में सदैव कटुता बनी रहती है।

यों कोई भी अंक स्वयं अपने में बुरा या भला नहीं होता, अशुभ या शुभ नहीं होता। जिस प्रकार जातक की जन्म कुण्डली में सदैव राहु, मंगल या शनि आदि सर्वत्र बुरे नहीं होते, भला परिणाम, प्रभाव भी देते हैं, ठीक इसी प्रकार प्रत्येक अंक भी स्वयं में भले या बुरा भाव के कारण विभिन्न व्यक्तियों पर शुभाशुभ प्रभाव स्पष्ट करता है। अंकों की भी एक गति है, सुनिश्चित योजना है, एक क्रम बद्धता है आवश्यकता उन्हें भली प्रकार समझाने का है। कुछेक उदाहरण देना आवश्यक समझता हूँ—

निम्न उदाहरण में आप देखेंगे कि किस प्रकार एक के बाद

एक घटनाएँ ५३९ वर्ष के अन्तर से घटित हुई हैं।

(१) सेंट लूई का जन्म— २३ अप्रैल १२१५
२३ = २ + ३ = ५ + ५३९
१७५४

(२) लूई सोलहवें का जन्म—२३ अगस्त सन् १७५४
२३ = २ + ३ = ५

(३) सेंट लूई की बहिन इसा बेला का जन्म १२२५
+ ५३९
१७६४

(४) लूई १६वें की बहिन ईसाबेला का जन्म १७६४ में

(५) सेंट लूई के पिता की मृत्यु १२२६
+ ५३९ = १७६५

(६) लूई १६वें के पिता डाफिन की मृत्यु १२२६ + ५३९ = १७६५ में

(७) सेंट लूई की बादशाही का प्रारंभ काल १२२६

(८) लूई १६वें की बादशाही का प्रारंभ काल १२२६ + ५३९ = १७६५

(९) सेंट लूई का विवाह १२३१ में

(१०) लूई १६वें का विवाह १२३१ + ५३९ + १७७०

(११) सेंट लूई का वयस्काधिकार प्राप्त १२३५

(१२) लूई १६वें गद्दीनसीन हुए १२३५ + ५३९ = १७७४

(१३) विजेता सेंट लूई और इंगलैंड के बादशाह हेनरी III में परस्पर युद्धोपरान्त संधि १२४३ में

(१४) विजेता लूई और इंगलैंड के बादशाह जार्ज III में संधि हुई १२४३ + ५३९ = १७८२

(१५) एक पूर्व देशीय राजकुमार ईसाई बनने के लिए सेंट लूई के पास पहुँचा सन् १२४९ में

(१६) एक पूर्वदेशीय राजकुमार ने उपर्युक्त कार्य के लिए अपना

राजदूत लूई १६ के पास भेजा १२४६
+५३६
१७८८

(१७) सेंट लूई की हार! साथियों द्वारा उसे छोड़ना व बंदी १२५० में

(१८) लूई १६वें का उसके दल द्वारा परित्याग व लूई का भागना पर बंदी बनाया जाना १२५०
+५३६
१७८९ में

(१९) नवीन धर्मवादियों द्वारा क्रान्ति १२५० में

(२०) 'जैकब' धर्मवादियों द्वारा धार्मिक क्रान्ति १२५०
+५३६
१७८९ में

(२१) सेंट लूई की माँ का देहान्त १२५३

(२२) फ्रांस से सफेद लिली का अंत १२५३
+५३९
१७९२ में

(२३) सेंट लूई ने जेकोबियन कर विश्राम चाहा सन् १२५४ में

(२४) जेकोबियन द्वारा लूई १६ वें का अंत १२५४
+५३९
१७९३

एक और उदाहरण देखें—

(i) संयुक्त राज्य अमेरिका में जार्ज वाशिंगटन का प्रारंभिक सत्कार १३ तोपों की सलामी से किया गया।

(ii) राष्ट्रीय ध्वज में १३ पत्तियाँ हैं।

(iii) राष्ट्रीय ध्वज में १३ बाण हैं।

(iv) राष्ट्रीय ध्वज के ईंगल पर १३ सितारे हैं।

(v) ईगल के प्रत्येक डेने में १३ पंख हैं।

(vi) अमेरिका में सर्व प्रथम १३ ही राज्य थे।

(vii) १३ प्रतिनिधियों ने स्वतन्त्रता घोषणा के राज्य पत्र

पर हस्ताक्षर किये थे।

(viii) अमेरिकन झण्डे में १३ धारियां हैं।

पूज्य बापू के जीवन में अंक २ व ४ का महत्व गजब का है—

(१) जन्म=२ अक्टूबर=अंक २

(२) कस्तूरबा से विवाह १८८३ में=

१+८+८+३=२०—२+०=२.

(३) पिता का स्वर्गवास १८८५ में

=१+८+८+५=२२=२+२=४

(४) राजकोट व बंबई में वकालात १८९२

=१+८+९+२=२०=२+०=२

(५) भारत आगमन १९०१=१+९+०+१=११=

१+१=२

(६) ट्रांसवाल ब्रिटिश इंडिया एसोसियेसन की स्थापना

१९०३=१+९+०+३=१३=१+३=४

(७) तिलक स्वराज्य फण्ड की स्थापना २ अक्टूबर=२

(८) कस्तूरबा की मृत्यु २२ फरवरी=२+२=४

(९) महा प्रयाण १९४८=१+९+४+८=२२=२+

२=४

एक ताज्जुब देखें हिटलर की जन्म तारीख, मास, वर्ष को संयुक्त करें तो मृत्यु वर्ष स्पष्ट हो जाता है।

जन्म २० अप्रेल १८८९

२+०+४+१+८+८+९=३२

२+४+१८८९

संयुक्तांक ३२

जन्म तारीख २०

माह ४

अर्थात् १९८९

+ ३२
+ २०
+ ४
―――
१९४५ हिटलर की मृत्यु

तात्पर्य यह कि प्रत्येक पाठक स्वयं अपने, अपने परिवार के सदस्यों, अपने इष्ट मित्रों, व्यापार में भागी दारों, उच्चाधिकारियों व परिचितों के जीवन को टटोलें एवं देखें तो आप आश्चर्य जनक सामञ्जस्य, अद्भुत संयोग चमत्कारिक अंकों का स्वरूप पायेंगे !

स्वयं मैं जब अपना जीवन टटोलता हूँ तो अनोखा रूप नजर आता है—

जन्म १५ = १ + ५ = ६
पिता का स्वर्गवास ६ तारीख को
पाकिस्तान से भारत आगमन १५ ता: = १ + ५ = ६
बहिन का जन्म १२ अगस्त १ + २ = ३
बहिन का विवाह १८ = १ + ८ = ९
नौकरी प्रारंभ ३०.७.१९६० = ३० = ३ + ०
कुल भाई बहिन ३
कुल सन्तान ३
नाभाक्षर—राधा कृष्ण = ६
पिता के नामाक्षर—मुल्तान चंद = ६
भ्रातृ नामाक्षर ६
बहिन नामाक्षर सावित्री ३
कुसुम प्रकाशन इलाहाबाद नामाक्षर १२ = १ + २ = ३
कुसुम प्रकाशन से कांट्रेक्ट = १५ ता: को = ६
प्रथम पुस्तक—अंक ज्योतिष और भविष्य'—नामाक्षर १२
= १ + २ = ३
अन्य पुस्तक, ज्योतिष योग दर्पण—९
१९७७ का भविष्य = ९
प्रारंभिक ज्योतिष = ९
ज्योतिष और लॉटरी = ९
ज्योतिष और यन्त्र = ९

अंक और दैनिक भविष्य = ३

इस प्रकार मेरे जीवन में ३ और मित्र अंक ६—९ का बाहुल्य रहा है।

नि: सन्देह ज्योतिष कठिन है, इसे समझना हर व्यक्ति के बूते की बात नहीं पर नि: सन्देह अंक विद्या एक सरल प्रक्रिया है, इसे समझना सरल है और समझ कर समस्याओं की दुर्लभ गुत्थियों का सुलझाना भी कठिन नहीं है। आप यदि इस पुस्तक को पढ़ कर समझ लें तो दैनिक जीवन में यह पुस्तक गाइड का कार्य करेगा।

अंक एवं ग्रह

अंकों का अपना बल है तथा स्वयं अंकों में असीम शक्ति का भण्डार भरा है। शून्य तक महत्व कम नहीं। शून्य बढ़ाते जायें इकाई, दहाई; सैंकड़ा, हजार, दस हजार, लाख, दश लाख, करोड़, दस करोड़, अरब, दस अरब, खरब, दस खरब और इस प्रकार बड़ी से बड़ी संख्या बनती चली जाती है। अंकों के प्रयोग से जहाँ एक ओर वर्तमान का स्वरूप निर्धारित होता है, वहीं अतीत की दुर्गम, गहरी घाटियों में उतर कर स्पष्टता जान जाते हैं। ग्रहों की व्यापकता भी अंकों में सिमटी है। सर्व प्रथम मैं नीचे ग्रहानुसार अंकों के प्रतिनिधित्व को स्पष्ट कर रहा हूँ। इन ग्रहों में राहु और केतु छाया ग्रह मात्र है एवं सूर्य-चन्द्र से सम्बन्धित दो-दो अंक हैं उनमें एक धनात्मक व द्वितीय ऋणात्मक है।

क्र०सं०	ग्रह	अंक	ऋणात्मक/धनात्मक
१	सूर्य	१	धनात्मक
२	सूर्य	४	ऋणात्मक
३	चंद्र	७	धनात्मक
४	चंद्र	२	ऋणात्मक
५	मंगल	९	धनात्कक
६	बुध	५	धनात्मक
७	गुरु	३	धनात्मक
८	शुक्र	६	धनात्मक
९	शनि	८	धनात्मक

कई एक विद्वान हर्षल का अंक चार (४) तथा नेप्च्यून का अंक सात (७) भी घोषित करते हैं परन्तु गहराई में जाने पर ऐसा स्पष्ट होता है कि चार अंक सूर्य का ऋणात्मक तथा

७ अंक चन्द धनात्मक है और इन पर सूर्य-चन्द्र का ही विशेष प्रभाव रहता है। ठीक इसी प्रकार वारों का आधिपत्य भी देखा जा सकता है। कुछ आगे कहूँ उससे पूर्व प्रत्येक ग्रह से सम्बन्धित कुछ गुण धर्म मैं स्पष्ट करना अपना दायित्व समझता हूँ।

सूर्य—

पर्याय—हेली, दिनकर, भानु, रवि, आदित्य, पूषन्, अर्क, भास्कर, हिमांशु, तरणि, आदित्य, दिवाकर, गृहपति, प्रभाकर, दिनेश, सर सविता, मार्तण्ड।

अरबी—शम्स, आफताब।

आँग्ल—सन (Sun)

यह पुरुष जाति, रक्तवर्ण, पित्त प्रकृति, पूर्व दिशा स्वामी पृथ्वी से १३ लाख गुना बड़ा, ९२ हजार मील व्यास, पृथ्वी से दूरी ९५९,००,००० मील, एक राशि पर १ मास या ३० दिन तक परिभ्रमण करता है। कृतिका, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा इनके नक्षत्र उच्च स्थान मेष व नीच स्थान तुला राशि है। मित्र राशियाँ वृश्चिक, धनु, कर्क एवं मीन तथा शत्रु राशियाँ वृष, मकर व कुंभ तथा स्वराशि सिंह है।

सूर्य का गुरु या बृहस्पति के साथ सात्विक भाव है चन्द्रमा के साथ राजस, मंगल के साथ तामस मैत्री सम्बन्ध है सूर्य काल पुरुष की आत्मा माना गया है। सप्तम भाव में बली मकर से ६ राशि तक अर्थात् मकर, कुंभ, मीन, मेष, वृष, मिथुन तक चेष्टा-बली रहता है। सूर्य पाप ग्रही, क्रूर पर सात्विक है। देह में मेरु दण्ड, स्नायु, कलेजा, नेत्रादि पर इनका प्रभाव रहता है। दैहिक रोग आदि विषयों पर सूर्य से विचार किया जाता है।

चंद्र—

पर्याय—सोम, शशि, हिमांशुमाली, शीतांशुमाली इन्द्र, ग्लौ, मृगाङ्क उडुपति, निशाकर, रजनिपति, निशा नाथ, तारेश, कलाधर, कलानिधि, द्विजराज मयंक, राकेश, रजनीश, शशांक, विधु, शशधर, सुधाकर, हिमांशु, चंद्र।

अरबी—कमर, माह, फार

आँग्ल मून (Moon)

पृथ्वी का निकटतम ग्रह पृथ्वी से छोटा ग्रह है २१५३ मील व्यास तथा पृथ्वी से २,३८,८०० मील दूर चंद्रमा स्त्री जाति, श्वेत वर्ण, जल तत्व, पश्चिमोत्तर दिशा का स्वामी है मानव रक्त परिभ्रमण से निकट का इसका सम्बन्ध है। काल पुरुष के हृदय पर बिराजमान चन्द्र मनः, चित्त वृत्ति, स्वास्थ्य, पुरुषार्थ, राज्यानुग्रह, माता-पिता, संपत्ति, मानसिक तनाव, उद्वेग कुंठा, संत्राश, जलीय रोग, स्त्रियोचित्त रोग, व्यर्थ भ्रमण एवं मानव मस्तिष्क पर चंद्र से विचार किया जाता है। पैतृक सम्पत्ति, कृशता, कफ़ जनित रोग, उदर पीड़ा की जानकारी चंद्र से संभव है।

कर्क स्वामी, उच्च स्थान वृष व नीच स्थान वृश्चिक है। ७ वें भाव पर पूर्ण दृष्टि तथा मेष, तुला, वृश्चिक, मीन लग्न में योग कारक, रोहिणी, हस्त श्रवण, पुनर्वसु, विशाखा, पूर्वाभाद्रपद नक्षत्रों पर जहाँ श्रेष्ठ; उतम फल देता है वहीं कृत्तिका, उत्तरा फाल्गुनी, आश्लेषा, ज्येष्ठा, उत्तराषाढा, रेवती भी शुभ है।

लग्न से सुखभाव अर्थात् चतुर्थ स्थान पर बली तथा मकर से ६ राशि पर्यन्त अर्थात् मकर, कुंभ, मीन, मेष, वृष, मिथुन तक चेष्टाबली, कृष्ण पक्ष की षष्ठी, सप्तमी, अष्टमी, नवमी, दशमी, एकादशी, द्वादशी, त्रयोदषी, चतुरदशी, अमावस्या, शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी, सप्तमी, अष्टमीं, नवमी व दशमी तक क्षीण रहता है। इस अवधि में चंद्रमा पाप ग्रही हो निष्फल रहता है तथा शुक्ला १० से कृष्णा पंचमी तक पूर्ण ज्योतिर्मय होने के कारण बलवान व शुभ फल दायी रहता है।

मंगल—

पर्याय—भौम, भूसुत, भूतनय, अंगारक, वक्र, क्षितिज, रुधिर, कुपुत्र, धराज, भूपुत्र, क्रूरनेत्र, आर, कुज, लोहितांग, अव निज, क्षितिनन्दन।

अरबी—मारील, मिर्रीख। **फारसी**—बेहराम।

आँग्ल—मार्स (mars)

मंगल का व्यास चार हजार दो सौ पन्द्रह मील एवं पृथ्वी से मंगल की दूरी ३ करोड़ ५० लाख मील दूर है। दक्षिण दिशा

का स्वामी, पित्त प्रकृत्ति, रक्तवर्ण, अग्नि तत्व एक पुरुष जाति, तामसी स्वभाव युक्त पापग्रही होने पर भी यह धैर्य एवं पराक्रम का स्वामी है। भाई-बहिन, पित्तरोग, शूल रोग, मूर्छा, मृगी, रक्त विकार, दुर्घटना, दारिद्रय, गर्भाशय सम्बन्धी रोग, शौर्य, कुटिलता, चालाकी, अग्रज सुख, ईमानदारी, मानसिक आघात, छल-कपट, द्वेष, ईर्ष्या, धोखा चोरी, भूमि, खेत-खलिहान, कृषि पशु व्यवसाय पर विचार किया जाता है।

मंगल मेष-वृश्चिक का स्वामी, वृश्चिक राशि पर सर्वाधिक बलवान, मकर में उच्च व कर्क राशि पर नीच रहता है।

मंगल को मित्रता सिंह, धनु, मीन राशियाँ तथा कन्या, मिथुन से शत्रुता भाव रखता है। गूरू के संग सात्विक भाव, सूर्य के साथ राजस व बुध के साथ शत्रु भाव की प्रबलता रखता है। ३।६ भाव में बलवान, कर्मस्थ दिग्बली, चंद्र के साथ चेष्टाबली, द्वितीयस्थ निर्बल रहता है। स्व स्थान से ४।७।८ वें भाव को पूर्ण दृष्टि से देखता है।

बुध—

पर्याय—सौम्य, तारातनय, विद्, बोधन, इन्दु सुत, शशि पुत्र, चन्द्रात्मज, रोहिणेय, हेम्न, तारासूनु, वित, चन्द्र पुत्र !

अरबी—उतारद

फारसी—तीर

आंग्ल—मर्करी (Mercury)

बुध का व्यास ३१४० मील तथा पृथ्वी से ३ करोड़ ७० लाख मील दूरी पर स्थित, उत्तर दिशा का स्वामी, श्याम वर्ण सात्विक गुणधर्मी, नपुंसक लिंगी, पृथ्वी तत्व, त्रिदोष-प्रकृति बुध रहता है। काल पुरुष के स्कन्ध तथा ग्रीवा पर अपना प्रभुत्व बनाए रखता है। जातक की बुद्धि चातुर्य, विवेक शक्ति, त्वचारोग, दाद, खाज, खुजली, से ग्रहिणी, कुष्ठ, मूकता, वातरोग, पाण्डुरोग, गुप्ताङ्ग सबंधी रोग, ज्योतिष, कानून, शिल्प, व्यवसाय, साक्षी, चिकित्सा, वाचा शक्ति, जिह्वा पर अपना वर्चस्व बुध बनाए रखता है। आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती अपने नक्षत्र हैं। मिथुन व कन्या स्वयं की राशि, कन्या में उच्च व मीन में नीच तथा

स्वस्थान से सप्तम भाव को देखता है। वृष-तुला-सिंह राशि से मित्रता, कर्क से शत्रुता। शुक्र के साथ राजसी संबंध, चंद्र से शत्रुता रखता है। आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती, रोहिणी, हस्त, श्रवणादि नक्षत्रों पर शुभ फलदायी एवं आर्द्रा, स्वाति, पुण्य, अनुराधा, चित्रा, मघा, व मूल पर यह अशुभ फल देता है। धनु व मीन अर्थात् गुरू की राशि पर सर्वथा निर्बल रहता है।

गुरू-चंद्र के साथ बैठ कर शुभत्व प्रदान करता है वहीं शुक्र के साथ सम भाव रखता है। सूर्य, राहु-केतु-शनि मंगल के साथ रहकर अशुभ फल देने से नहीं चूकता सुखभावस्थ सर्वथा निष्फल।

बृहस्पति—

पर्याय—गुरू, वाचस्पति, देवगुरू, सुराचार्य, मन्त्री, ईज्य, अमर मन्त्री, देवेज्य, अंगीरस, आंगिरा, आर्य, जीव, सुरसरीय आदि।

अरबी—मुश्तरी, अइरमनन्द।

आँग्ल—जुपीटर (Jupiter)

गुरू का व्यास २ लाख ७५ हजार मील तथा पृथ्वी से दूरी ४८,५०,००,००० मील है। यह पीत वर्ण, आकाश तत्व, पुरुष जाति, पूर्वोत्तर दिशा का स्वामी है। यह सौम्य, सात्विक तथा अति शुभग्रह है।

यह कफ, धातु, चर्बी में वृद्धि करने वाला, हृदय शक्ति का कारक है। शोथे, गुल्म, विद्या, पारलौकिकता, आध्यात्मिक सुख, सम्पन्नता, पुत्र-पौत्र, राज्य सम्मान, लाभ, पैतृक सम्पत्ति, यश, कीर्ति, पवित्र व सौम्य व्यवहार, इन्द्रिय निग्रह, का विचार देव गुरू द्वारा किया जाता है। धनु व मीन राशि इनकी स्वय की है। कर्क में उच्च का व मकर में नीच एवं ५।७।९वें भाव को पूर्णतः देखता है। धनु राशि पर विशेष बलवान, मेष, सिंह, कन्या व वृश्चिक इनकी मित्र राशियाँ हैं वहीं वृष, मिथुन, तुला शत्रु राशियाँ हैं। सूर्य के साथ सात्विक चंद्रमा के साथ राजस मंगल के साथ तामस, बुध-शुक्र के साथ शत्रुता भरा व्यवहार रखता है। लग्नस्थ बलवान, केंद्रस्थ सर्वदोष निवारक, द्वितीय भावस्थ सर्वाधिक अनुकूल व शुभ चंद्र युक्त चेष्टाबली हो जाता है।

पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराषाढा, पुनर्वसु पूर्वा भाद्रपद, विशाखा नक्षत्रों में शुभ फलदायक है। स्वदशा में चर्बी व कफ पर प्रभावी होता है।

शुक्र—

पर्याय—भृगुसुत, भृगु, सित, अशनस्, अच्छ, दान वेज्य, असुराचार्य, आस्फुजित्, भार्गव, दैत्यगुरु, सूरि, काण।

अरबी—जुहरी

आँग्ल—वीनस (Venus)

शुक्र का व्यास ७ हजार ७ सौ मील तथा पृथ्वी से दूरी ६ करोड़ ४० लाख मील है। सूर्योपरान्त सर्वाधिक दैदिप्यवान ग्रह शुक्र श्याम वर्ण पर श्याम गौर वर्ण, स्त्री लिंगी, राजसी स्वभाव युक्त, जलतत्वी, दक्षिण-पूर्व दिशा का स्वामी है। कफ, वीर्य, हृदय शक्ति, धातु, काव्य, संगीत, ऐश्वर्य प्रसाधन, मनोरंजन, भोग, वाहन, शय्या, वस्त्राभूषण कामेच्छा, आँख, पत्नी का कारक है। शोथ, गुल्म, प्रमेह, आदि रोग, पारलौकिक, आध्यात्मिक सुख, पुत्र-पौत्र, घर, मकान, शरीर बल, विपत्ति, ऐश्वर्य, नौकरी, विवाह, प्रेम, ललित कला, चित्र कला, छल-कपट, छूत, क्रीड़ा, स्निग्धता जैसे विषयों पर विचार होता है।

वृष व तुला राशि का स्वामी, मीन में उच्च व कन्या राशि में नीच का, तुला राशि पर विशेष बलवान होता है भरणी, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढा इनके अपने नक्षत्र हैं। धनु व मकर मित्र राशियाँ, कर्क, सिंह शत्रु राशियाँ बुध के साथ सात्विक भाव शनि-राहु के साथ तामस चंद्र-सूर्य-मंगल के साथ शत्रु वत्त व्यवहार रखता है ७वें भाव पर पूर्ण दृष्टि डालता है।

मिथुन, कन्या, मकर, कुंभ लग्न में योग कारक, आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती, कृतिका, स्वाति, आर्द्रा में शुभ भरणी पूर्वा फाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा नक्षत्रों में अशुभ फल देता है।६ठे निष्फल, ७वें अनिष्ट फल देता है।

शनि—

पर्याय—शनिश्चर, थावर, मन्द, आर्कि, सूर्य पुत्र, कोठा, छायासूनु, पंगु, असित, सौरि, तरणितनय, छायात्मज, रविज,

भास्करि ।

अरबी—जुदुल

फारसी—दवान

आँग्ल—सैटर्न (Saturn)

शनि का व्यास २ लाख ५० हजार मील तथा पृथ्वी से दूरी ८६ लाख मील है। शनि कृष्ण वर्ण, वायु तत्व, बात श्लेष्मिक प्रकृति युक्त, नपुंसक तथा पश्चिम दिशा का स्वामी है। शनि से शारीरिक बल, आयु, दृढ़ता, विपत्ति, विदेशी भाषा, नौकरी, भक्ति, मोक्ष, धर्म, योगाभ्यास, श्रम, शक्ति, साहस पराक्रम, मोटापा, व्यय, शत्रुभाव, आयु, चिन्ता, शोक, दुःख अभाग्य, आकस्मिक संकट, विलासिता का विचार किया जाता है।

शनि सर्वथा क्रूर व पापी ग्रह है पर इसका अंतिम परिणाम सदैव सुखद रहता है। मनुष्य को दुर्भाग्य व संकट के चक्कर में डाल कर अन्त में शुद्ध व सात्विक बना देता है।

मकर व कुंभ का स्वामी तथा मकर में विशेष बलवान होता है। पुण्य अनुराधा, उत्तरा भाद्रपद स्वयं के नक्षत्र है। तुला में उच्च एवं मेष में नीच का, वृष-मिथुन से मित्रता कर्क सिंह—वृश्चिक से शत्रुता रखता है। ३।७।१०वें भाव पर पूर्ण दृष्टि डालता है।

बुध के साथ सात्विक, शुक्र के साथ राजस, सूर्य चंद्र के साथ शत्रुता रखता है। सर्वाधिक बलवान ग्रह वृष-तुला लग्न में योग कारक, सप्तम भाव में बलवान, किसी वक्री ग्रह या चंद्र के साथ बली हो जाता है।

राहु—

पर्याय—सौंहिकेय, सर्प, तम, असुर, अगु, स्वर्भानु, अमि, कृष्णांग कपिलास, दीर्घ, गुह, आगव।

अरबी—रास

आंग्ल—ड्रेगन्स हैड(Dreagons Head)

यह पृथ्वी की छाया गृह है। व्यास ३,००,००० मी तथा पृथ्वी से दूरी ९०,००,००,००० मील मानते हैं। यह कृष्ण वर्ण, क्रूर, स्त्रीलिंग तामसी, दक्षिण दिशा अधिपति है। शनि राशि

मकर पर भी अधिपत्य स्वीकार किया जाता है। कुछ विद्वान वृष पर व कुछ मिथुन पर उच्च का मानते हैं। आर्द्रा, स्वाति सतमिषा नक्षत्रों पर शुभ फलदायी, शत्रु-बुध से मित्रता, सूर्य-चंद्र से शत्रुता, मिथून, कन्या, तुला, धनु, मकर, मीन राहु के मित्र, कर्क व सिंह शत्रु राशि, वृष व तुला लग्न में योग कारक माना गया है। जन्म कुण्डली में जहाँ बैठता है उस भाव की वृद्धि में सदैव अवरोध उत्पन्न करता है। ७ वे भाव को देखता है। सदैव वक्री रहता है। ५।९ भाव को भी विशेष दृष्टि से देखता है। ८।९वें भाव में प्रबलता रखता है।

शारीरिक शक्ति, शौर्य, साहस, श्रमशीलता, मुटापा पाप कर्म-विलासिता दुःख, दुर्भाग्य, अन्याय, आकस्मिक संकट व्यर्थ चिन्ता, शत्रुता का विचार राहु द्वारा किया जाता है। काल पुरुष के पैरों पर इसका प्राबल्य रहता है। यह गुप्त युक्ति बाल, कष्ट व त्रुटियों का कारक है।

केतु—

पर्याय—शिखी, ध्वज, राहु पुच्छ।

अरबी—जनब

आंग्ल—ड्रेगन्स टेल (Dreagons Tail)

राहु सम यह भी छाया ग्रह ही है। सौर मंडल में इसका न तो कोई पिंड है और न ही कक्ष। पर कई विद्वान इसका व्यास ३ लाख मील तथा पृथ्वी से दूरी ९० करोड़ मील मानते हैं। राहु मस्तक व केतु धड़ माना जाता है। यह वक्री ग्रह राहु से सदैव सातवें भाव मे रहता है।

स्वभावतः तामस, कृष्ण वर्ण, नापुंसक लिगि, उत्तर पूर्व दिशा का स्वामी, छूर, मोक्षप्रद तथा शुभ फलदायक केतु से अद्‌भुत प्रकार के स्वप्न, दुर्घटना, कारावास, चर्म रोग, कुण्ठ, मृत्यु, अशुभ बातों का विचार किया जाता है कठिन कर्म, गुप्त युक्ति बल, भय व कमी का कारक तथा काल पुरुष के तलवों पर अधिकार माना जाता है।

अश्विनी, मघा, मूल इसके अपने नक्षत्र हैं वृश्चिक उच्चस्थान या धनु तथा नीच स्थान वृष या मिथुन। मिथुन, कन्या, धनु,

मकर व मीन मित्र राशियाँ कर्क, सिंह शत्रु राशियाँ, गुरु के साथ सात्विक, सूर्य-चंद्र के साथ शत्रुवत व्यवहार रखता है। शनि-शुक्र इनके मित्र हैं। स्वस्थित भाव को यह सदैव नष्ट करता है पर सप्तम भावस्थ वृश्चिक का होने पर शुभ फल देता है २।३ में केतु प्रबल होता है।

वार और अंक

क०सं०	वार	अंक	ग्रह
१	रविवार	१	सूर्य
२	सोमवार	७	चंद्र
३	मंगलवार	९	मंगल
४	बुधवार	५	बुध
५	बृहस्पतिवार	३	गुरु
६	शुक्रवार	६	शुक्र
७	शनिचरवार	८	शनि

वार : अन्य जानकारी—

क० सं०	हिन्दी नाम	अंग्रेजी नाम	शुभत्व
१	रविवार	Sunday	अशुभ
२	सोमवार	Monday	शुभ
३	मंगलवार	Tuesday	अशुभ
४	बुधवार	Wednesday	शुभ
५	गुरुवार	Thursday	शुभ
६	शुक्रवार	Friday	शुभ
७	शनिवार	Saturday	अशुभ

अब मैं व्यक्ति के नाम राशिनुसार ग्रहाधिपति एवं प्रतिनिधित्व करने वाले अंक स्पष्ट करता हूँ—

क० सं०	राशि नाम	अधिपति ग्रह	प्रतिनिधि अंक
१	मेष	मंगल	९
२	वृष	शुक्र	६
३	मिथुन	बुध	५
४	कर्क	चंद्र	७
५	सिंह	सूर्य	१

६	कन्या	बुध	५
७	तुला	शुक्र	६
८	वृश्चिक	मंगल	९
९	धनु	गुरु	३
१०	मकर	शनि	८
११	कुंभ	शनि	८
१२	मीन	गुरु	३

सर्व प्रथम आप यह जानने का प्रयास करें कि आपकी राशि क्या है ? जन्म नक्षत्र क्या है ? जन्माक्षर क्या है ? राशि क्या है ?

मैं इन्हीं बातों की जानकारी यहाँ दे रहा हूँ जिससे आप अपनी राशि जान सकें—

क्र० सं०	नक्षत्र	जन्माक्षर	राशि
१	अश्विनी	चू चे चो ला	मेष
२	भरणी	लो लू ले लो	मेष
३	कृतिका	अ इ उ ए	मेष-बृष
४	रोहिणी	ओ वा वी वू	वृष
५	मृगशिरा	वे वो का की	वृष-मिथुन
६	आर्द्रा	कू घ ङ छ	मिथुन
७	पुनर्वसु	के को हा ही	मिथुन-कर्क
८	पुष्य	हू हे हो डा	कर्क
९	आश्लेषा	डी डू डे डो	कर्क
१०	मघा	मा मी मू मे	सिंह
११	पूर्वाफाल्गुनी	मो टा टी टू	सिंह
१२	उत्तरा फाल्गुनी	टे टो पा पी	सिंह-कन्या
१३	दृस्टा	पू ष ण ठ	कन्या
१४	चित्रा	पे पो रा री	कन्या-तुल
१५	स्वाति	रु रे रो ता	तुला
१६	विशाखा	ती तू ते तो	तुला-वृश्चिक
१७	अनुराधा	ना नी नू ने	वृश्चिक
१८	ज्येष्ठा	नो या यी यू	वृश्चिक

१९	मुला	ये यो भा भी	धनु
२०	पूर्वाषाढ़ा	भू धा फा ढा	धनु-मकर
२१	उत्तराषाढा	भे भो जा जी	मकर
२२	श्रवण	खी खू खे खो	मकर
२३	धनिष्ठा	गा गी गू गे	मकर-कुंभ
२४	शतभिषा	गो सा सी सू	कुंभ
२५	पूर्वाभाद्रपद	से सो दा दी	कुंभ-मीन
२६	उत्तराभाद्रपद	दू थ झ ञ	मीन
२७	रेवती	दे दो चा ची	मीन

प्रत्येक नक्षत्र के चार चरण हैं तथा २७ नक्षत्र होने के कारण २७×४=१०८ चरण एवं १२ राशियाँ होने के कारण १०८÷१२=९ अर्थात् प्रत्येक राशि में ९ चरण या जन्माक्षर हैं जो निम्न प्रकार से हैं—

क्र० सं०	नामाक्षर	राशि	अंक
१	चू चे चो ला ली लू ले लो अ	मेष	९
२	इ उ ए ओ वा वी वू वे वो	वृष	६
३	का की कू घ ङ छ के को हा	मिथुन	५
४	ही हू हे हो डा डी डू डे डो	कर्क	७
५	मा मी मू मे मो टा टी टू टे	सिंह	१
६	टो पा पी पू ष ण ठ पे पो	कन्या	५
७	रा री रु रे रो ता ती ते तू	तुला	६
८	तो ना नी नू ते नो या यी यू	वृश्चिक	९
९	ये यो भा भी भू धा फा ढ़ा भे	धनु	३
१०	भो जा जी खी खू खे गा गी	मकर	८
११	गू गे गो सा सी सू से सो दा	कुंभ	८
१२	दी दू थ झ ञ दे दो चा ची	मीन	३

अब हमें ग्रह संबंधी अन्यान्य मूल बातें भी भली प्रकार जान लेनी चाहिए जो आगे फल कथन में सहायक होंगी।

ग्रह,	अंक	जाति
सूर्य	१	क्षत्रिय
चंद्र	७	वैश्य

मंगल	९	क्षत्रिय
बुध	५	शूद्र
गुरु	३	ब्राह्मण
शुक्र	६	,,
शनि	८	अन्त्यण

राहु-केतु-मालंग

ग्रह, अंक और रंग

क्र० सं०	ग्रह	अंक	रंग
१	सूर्य	१	कालिमा युक्त लाल
२	चंद्र	७	श्वेत-धवल
३	मंगल	९	गौर वर्ण युक्त लाल
४	बुध	५	कालिमा युक्त हरा
५	गुरु	३	पीला
६	शुक्र	६	चित्तकबरा
७	शनि	८	हरापन लिए काला
८	राहु	—	नीला
९	केतु	—	मिश्रित

लिंग भेद—

क्र० सं०	ग्रह	अंक	लिंग
१	सूर्य	१	पुरुष
२	चंद्र	७	स्त्री
३	मंगल	९	पुरुष
४	बुध	५	नपुंसक
५	गुरु	३	पुरुष
६	शुक्र	६	स्त्री
७	शनि	८	नपुंसक

ग्रहानुसार अवस्था—

क्र० सं०	ग्रह	अंक	प्रकृत अवस्था
१	सूर्य	१	वृद्ध
२	चंद्र	७	युवा
३	मंगल	९	बाल

४	बुध	५	वृद्ध (युवा)
५	गुरु	३	मध्यम (वृद्ध)
६	शुक्र	६	मध्यम
७	शनि	८	अति वृद्ध

अङ्क और ग्रहाधिकार

सूर्य—

उच्च—अंक नौ

नीच—अंक छः

मित्र—अंक ९, ३, ७,

शत्रु—अंक ६, ८,

स्व—अंक १

समभाव—अंक २, ४, ५,

नक्षत्राङ्क—कृतिका, उत्तरा फाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा-अंक-एक

शत्रु नक्षत्राङ्क—भरणी, पूर्वा फाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा-अंक-छ पुष्य, अनुराधा, उत्तरा भाद्रपद-अंक-८

सात्विक भाव—अंक ३ से

राजस भाव—अंक ७ से

तामस भाव—अंक ९ से

चंद्र—

उच्च—अंक ६

नीच—अंक ९

मित्र—अंक १, ५

शत्रु—अंक ९

स्व—अंक ७

समभाव २, ३, ४, ८

नक्षत्राङ्क—रोहिणी, हस्त, श्रवण, पुनर्वसु, विशाखा, पू० भाद्र पद अंक ७

शत्रु नक्षत्राङ्क—

सात्विक भाव—अंक ६

राजस भाव—अंक ५

तामस भाव—अंक ८

मंगल—
उच्च—अंक ८
नीच—अंक ७
मित्र—अंक १, ३, ६,
शत्रु—५
विशेष बल—अंक ९
सात्विक भाव—अंक ३ से
राजस भाव—अंक १ से
शत्रु भाव—अंक ५ से
बुध—
उच्च—अंक ५
नीच—अंक ३
स्व— अंक ५
स्व नक्षत्र—अंक ५
स्व नक्षत्र—आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती-अंक ५
मित्राङ्क—अंक ६, १,
शत्रु अंक—अंक ७
राजसी भाव—अंक ६ से
शत्रु भाव—अंक ७ से
शुभ नक्षत्राङ्क—आश्लेषा ५, ज्येष्ठा ५, रेवती ५, रोहिणी ७, हस्त ७, श्रवण ७,
अशुभ नक्षत्राङ्क—आर्द्रा, स्वाति, पुण्य, अनुराधा, चित्रा, मघा, मूल अंक ३
निर्बल संबंध अंक ३,
शुभत्व—३, ७ के साथ होने पर
मिश्रित—६ से
शुभ फल—अंक १, ८, ९ के साथ
गुरु वृहस्पति—
उच्च—अंक ७
नीच—अंक ८
स्व—अंक ३

सर्वाधिक बलवान—अंक ३
मित्र अंक—६, १, ५,
अंक शत्रु—६,
सम भाव—२, ३, ४, ७, ०,
सात्विक भाव—अंक १
राजस भाव—अंक ७
तामस भाव—अंक ६
शत्रु भाव—अंक ५ व ६
शुभ नक्षत्रांक—पूर्वा फाल्गुनी, ६ उत्तराषाढ़ा १, पुनर्वसु ७,
पूर्वाभाद्र पद ७, विशाखा ७,
अशुभ नक्षत्रांक—आर्द्रा ३, स्वाति ३, शतभिषा ३,
शुक्र—
उच्च—अंक ३
नीच—अंक ५
स्व—अंक ६
सम—१, २, ४, ७, ८, ९
विशेष बली—अंक ६
स्व नक्षत्रांक—भरणी ६ पूर्वा फाल्गुनी ६, पूर्वा षाढ़ा ६,
मित्रांक—३, ८ अंक
अंक शत्रु—७, १ अंक
सात्विक भाव—५ अंक
तामस—८ अंक
शत्रु भाव—७, १, ९ अंक
योग कारक—३, ६, १०, ११ लग्न होने पर
शुभ नक्षत्राँक—आश्लेषा ५, ज्येष्ठा ५, रेवती ५, कृतिका १,
स्वाति ३, आर्द्रा ३,
अशुभ नक्षत्रांक—भरणी ६, पूर्वा फाल्गुनी ६, पूर्वाषाढ़ा ६,
मृगशिरा ६, चित्रा ३, घनिष्ठा ३,

शनि—
उच्च—अंक ६
नीच—अंक १

स्व—अंक ८
सम—२, ३, ४, ५, ७, ९
बली अंक—८
स्व नक्षत्रांक—पुष्य ८, अनुराधा ८, उत्तरा भाद्रपद ८
मित्रांक—६ अंक व ५ अंक
अंक शत्रु—७, १, ९ अंक
सम अंक—२, ३, ४, ८,
सात्विक भाव—अंक ५ से
राजस भाव—अंक ६ से
शत्रु भाव—१ व ७ अंक से
योग कारक—२ व ७ राशि लग्न में।
राहु—
स्वाधिपत्य—अंक ८ पर
उच्च—अंक ६ व ५ पर (मतान्तर)
शुभ नक्षत्रांक -आर्द्रा ३, स्वाति ३, शतभिषा ३
मित्रांक—अंक ५, ६
शत्रु—अंक १, ७
मित्र राशि अंक—५, ६, ३, ८, अंक
शत्रु राशि अंक—१ व ७ अंक
योग कारक लग्न—वृष और तुला
केतु—
स्व नक्षत्रांक—अश्विनी ३ मघा ३ मूल ३
उच्चांक—९ या ३
नीचांक—६ या ५
मित्र राशि अंक मिथुन ५, कन्या ५, धनु ३, मकर ८,
मीन ३
शत्रु राशि अंक—अंक १ व ७
सात्विक भाव—अंक ३ से
शत्रु भाव—अंक १ व ७
मित्र—८ व ६

———

दिशाएँ—

अंक	दिशा	स्वभाव	गुण
१	पूर्व	स्थिर	सत्व गुण
७	वायव्य	चंचल	,,
९	दक्षिण	उग्र	तमोगुण
५	उत्तर	मिस्र	रजोगुण
३	ईशान	मृदु	सत्व गुण
६	आग्नेय	लघु	रजोगुण
८	पश्चिम	तीक्ष्ण	तमोगुण
९	राहु-केतु (नुऋत्य)	,,	,,

अंक	तत्व	ऋतु	नस्त्र
१	अग्नितत्व	ग्रीष्म	मोटे
७	जलतत्व	वर्षा	नवीन
९	अग्नितत्व	ग्रीष्म	जले हुए
५	पृथ्वी तत्व	शरद्	सड़े हुए
३	आकाश तत्व	हेमन्त	मध्यम
६	जल तत्व	बसन्त	दृढ़
८	वायु तत्व	शिशिर	जीर्ण
राहु	जल-वायु तत्व		
केतु	आकाश अग्नि तत्व		

अंक	द्रव्य	रत्न	पशु-पक्षी रूप
१	ताम्र	माणिक्य	पक्षी
७	चांदी	मोती	सरीसृप
९	स्वर्ण	प्रवाल	चतुष्पद
५	कांस्य-सीप	पन्ना	पक्षी
३	चाँदी	पुखराज	द्विपाद
६	स्वर्ण	हीरा	,,
८	लोहा	नीलम	चतुष्पाद
राहु	सीसा	गोमेद	
केतु	कांसा	वैदूर्यमणि (लहसुनिया)	

अंक	क्रीड़ास्थल	कालसमय	वेदाभ्यास
१	देवस्थान	अयन	—
७	जलाशय तट	क्षण	—
९	अग्निकुंड	दिन	समावेद
५	क्रीड़ागार	ऋतु	अथर्ववेद
३	भण्डारघर	मास	ऋग्वेद
६	शमनागार	पक्ष	यजुर्वेद
८	कूड़ाघर	वर्ष	—
राहु	ग्राम्य बाह्यभाग		
केतु	श्मशान		

ग्रहानुसार विद्याध्ययनः—

क्र० सं	अंक	ग्रह	अध्ययन
१	१	सूर्य	राजनीति
२	७	चंद्र	ज्योतिष
३	९	मंगल	धनुर्विद्या, युद्ध
४	५	बुध	गणित
५	३	गुरू	वेद, व्याकरण
६	६	शुक्र	संगीत, वाद्य
७	८	शनि	कानून
८	—	राहु	गारुड़ी
९	—	केतु	तन्त्र-मन्त्र

ग्रह अंकानुसार कारक स्थल

क्र० सं	अंक	कारक स्थल
१	१	पर्वत-वन
२	७	जलाशय
३	९	पर्वत-वन
४	५	विद्यधर, गाँव
५	३	,,
६	६	जलाशय
७	८	पर्वत-वन
८	राहु-केतु	पर्वत-वन

अंक सुख-अधिपत्य अंगाधिपत्य (अन्तः बाह्य)

क्र० सं	अंक	सुख	आत्माधिपत्य	शरीराधिपत्य अन्तः	शरीराधिपत्य बाह्य
१	१	पिता	आत्मा	अस्थि	सिर से मुख
२	७	माता	मन	रक्त	गले से हृदय
३	६	बहिन	शक्ति	मज्जा	पेट से पीठ
४	५	,,	वाणी	त्वचा	हाथ से पांव
५	३	संतति	ज्ञान व सुख	चर्बी	कमरे से जांघ
६	६	स्त्री	कामाशक्ति	वीर्य	शिश्न से वृषण
७	८	भृत्य्	दुःख	स्नायु	घुटने से पिंडली
८	राहु	चाचा	,,	स्नायु मंडल	पांव का निम्नभाग
९	केतु	चाची	,,	,,	पांव का निम्नभाग

आइये ! हम ग्रह अंकों का मैत्री चक्र भी त्यार करें और पारस्परिक मैत्री चक्र एवं नैसर्गिक पंचधा मेत्री चक्र तैयार करें। पाठक अपनी जन्म कुण्डली के आधार पर यह मैत्री चक्र तैयार कर लें।

ग्रह	मित्र	सम	शत्रु
सूर्य	चंद्र, मंगल, गुरू	शुक्र शनि	बुध
चंद्र	सूर्य-बुध	×	मंगल, गुरू, शुक्र, शनि
मंगल	सूर्य, चंद्र, गुरू	बुध	शुक्र-शनि
बुध	सूर्य शुक्र	चंद्र	मंगल-गुरू-शनि
गुरू	सूर्य-चंद्र-मंगल	बुध-शुक्र	शनि
शुक्र	बुध-शनि	सूर्य-चंद्र	मंगल गुरू
शनि	बुध-शक्र	सूर्य-चंद्र-मंगल	गुरू

अंकानुसार मैत्री चक्र:—

अङ्क	मित्र	सम	शत्रु
१	७,६,३	६,८	५
७	१,५,	×	,६,३,६,८
६	१,७,३	५	६,८
५	१,६	७	६,३,८
३	१,७,६	५,६	८
६	५,८	१,७	६,३
८	५,६	१,७,६	३

जो ग्रह अंक जिस स्थान में है, वह उससे दूसरे, तीसरे, चौथे, दसवें, ग्यारहवे, बारहवें ग्रहों के साथ मित्रता रखता है तथा १।५।६।७।८।६ वे भावस्थ ग्रह से शत्रुता रखता है।

मित्र—सम = मित्र

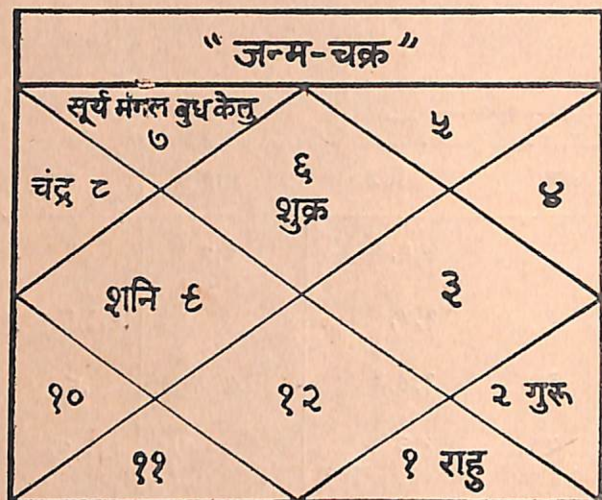
शत्रु—मित्र = सम

सम—शत्रु = शत्रु

मित्र—मित्र = अधिमित्र

शत्रु—शत्रु = अधिशत्रु

निम्न कुण्डली से पहले सरलतार्थ पंचधा मैत्री समझे तब अंकानुसार पंचधा समझे।



पंचधा मैत्री चक्र

ग्रह	सूर्य	चंद्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
अधिमित्र	चं	सू बु	चं	शु	×	बु शु	बु शु
मित्र	×	शु श	शू श	चं श	×	×	×
सम	मं गु शु श	मं	सू गु	सू	सू चं मं	सू चं मं	सू चं मं
शत्रु	बु	गु	×	मं गु	श	गु	गु
अधि शत्रु	×	×	बु	×	बु शु	×	×

सूर्य—

सूर्य से चंद्र द्वितीय मित्र एवं नैसर्गि भी मित्र है अतः मित्र—मित्र = अधिमित्र।

सूर्य से मंगल प्रथम भाव शत्रु व नैसर्गिक मित्र है अतः शत्रु—मित्र = सम।

सूर्य से बुध प्रथम भाव शत्रु तथा नैसर्गिक शत्रु है अतः शत्रु—सम = शत्रु।

सूर्य से गुरु आठवें शत्रु तथा नैसर्गिक मित्र है अतः शत्रु—मित्र = सम।

सूर्य से शुक्र बारहवें मित्र तथा नैसर्गिक शत्रु होने के कारण मित्र—शत्रु = सम।

सूर्य से शनि तृतीय मित्र तथा नैसर्गिक शत्रु होने के कारण मित्र—शत्रु = सम।

चंद्र—

चंद्र से सूर्य बारहवें मित्र एवं नैसर्गिक मित्र होने के कारण मित्र—मित्र = अधिमित्र।

चंद्र से मंगल १२ वें मित्र एवं नैसर्गिक सम होने के कारण मित्र—सम = मित्र।

चंद्र से बुध १२ वें होने के कारण मित्र एवं नैसर्गिक मित्र होने के कारण मित्र—मित्र = अधिमित्र।

चंद्र से गुरु ७ वें शत्रु तथा नैसर्गिक सम भाव होने के कारण शत्रु—सम = शत्रु।

चंद्र से शुक्र ११ वें मित्र एवं नैसर्गिक सम होने के फलतः मित्र—सम = मित्र।

चंद्र से शनि द्वितीय भाव में होने के कारण मित्र एवं नैसर्गिक मित्र सम होने के कारण मित्र—सम = मित्र।

मंगल—

मंगल से सूर्य प्रथम भाव में शत्रु तथा नैसर्गिक मित्र होने के कारण शत्रु—मित्र = सम।

मंगल से चंद्र द्वितीय मित्र नैसर्गिक मित्र अतः मित्र—मित्र = अधिमित्र।

मंगल से बुध प्रथम शत्रु व नैसर्गिक शत्रू होने के कारण शत्रु—शत्रु = अधिशत्रु।

मंगल से गुरु अष्टम शत्रु तथा नैसर्गिक मित्रता के ही कारण शत्रु—मित्र = सम।

मंगल से शुक्र १२ वें मित्र तथा नैसर्गिक सम भाव के फलस्वरूप मित्र—सम = मित्र।

मंगल से शनि तृतीय मित्र एवं नैसर्गिक सम के कारण मित्र—सम = मित्र।

बुध—

बुध से सूर्य प्रथम भावस्थ शत्रु एवं नैसर्गिक मित्रता के कारण शत्रु—मित्र = सम।

बुध से चंद्र द्वितीय मित्र तथा नैसर्गिक शत्रता के कारण शत्रु—सम = मित्र।

बुध से मंगल प्रथम भाव में शत्रु एबं नैसर्गिक सम भाव के कारण शत्रु—सम = शत्रु।

बुध से गुरु आठवें शत्रु एवं नैसर्गिक सम के कारण शत्रु—सम = शत्रु।

बुध से शुक्र बारहवें मित्र एवं नैसर्गिक मित्र होने के कारण मित्र—मित्र = अधिमित्र।

बुध से शनि तृतीय एवं मित्र तथा नैसर्गिक सम भाव के कारण मित्र—सम = मित्र।

गुरु—

सुर्य, गुरु से षष्ठभावस्थ शत्रु एवं नैसर्गिक मित्रता के कारण शत्रु—मित्र = सम।

गुरु से चंद्र ७ वें शत्रु एवं नैसर्गिक मित्रता के कारण शत्रु—मित्र = सम।

गुरु से मंगल ६ वें शत्रु एवं नैसर्गिक मित्रता के कारण शत्रु—मित्र = सम !

गुरु से बुध ६ वें शत्रु एवं नैसर्गिक शत्रुता के कारण शत्रु—शत्रु = अधिशत्रु।

गुरु से शुक्र पंचम शत्रु एवं नैसर्गिक शत्रुता के कारण शत्रु—

शत्रु—अधिशत्रु ।

गुरु से शनि अष्टम शत्रु एवं नैसर्गिक समता के कारण शत्रु —सम = शत्रु ।

शुक्र—शुक्र से सूर्य द्वितीय मित्र एवं नैसर्गिक शत्रु होने के कारण मित्र—शत्रु = सम ।

शुक्र से चंद्रमा तृतीय मित्र एवं नैसर्गिक शत्रुता के कारण मित्र—शत्रु = सम ।

शुक्र से मंगल द्वितीय मित्र एवं नैसर्गिक शत्रुता के कारण मित्र—शत्रु = सम ।

शुक्र से बुध द्वितीय मित्र नैसर्गिक मित्र होने के कारण मित्र–मित्र = अधिमित्र ।

शुक्र से बृहस्पति ९वें शत्रु एवं नैसर्गिक समता के ही कारण शत्रु—सम = शत्रु ।

शुक्र से शनि चतुर्थ मित्र एवं नैसर्गिक मित्र होने के कारण मित्र—मित्र = अधिमित्र ।

शनि—

शनि से सूर्य एकादश भाव में होने के कारण मित्र एवं नैसर्गिक शत्रुता के कारण मित्र – शत्रु = सम ।

शनि से चंद्र द्वादश मित्र एवं नैसर्गिक शत्रुता के कारण मित्र —शत्रु = सम ।

शनि से मंगल ११वें मित्र एवं नैसर्गिक शत्रुता के कारण मित्र—शत्रु = सम ।

शनि से बुध ११वें मित्र तथा नैसर्गिक मित्रता के कारण मित्र —मित्र = अधिमित्र ।

शनि से गुरु षष्ठ शत्रु एवं नैसर्गिक समता के कारण शत्रु – सम = शत्रु ।

शनि से शुक्र १०वें मित्र तथा नैसर्गिक मित्रता के कारण मित्र —मित्र = अधिमित्र !

आइये अब हम अंकाधारित कुण्डली बनाएँ एवं इसी प्रकार मैत्री चक्र बनावें जो द्रष्टव्य है—

१, ९, ५
तुला
वृश्चिक
७
कन्या
६
लग्न
सिंह
कर्क
धनु ८
मिथुन
मकर
मीन
वृष
३
कुंभ
मेष

"अंकानुसा—पञ्चधा मैत्री—चक्र"

ग्रह	सूर्य १	चंद्र ७	मंगल९	बुध ५	गुरु ३	शुक्र ६	शनि ८
अधिमित्र	७	१,५	७	६	×	५,८	५,६
मित्र	×	६,८	६,८	७,८	×	×	×
सम	९,३,६८	९	१,३	१	१,७,९	१,७,९	१,७,९
शत्रु	५	३	४	९,३	८	३	३
अधिशत्रु	×	×	५	×	५,६	×	×

अंकानुसार भाग्योदय काल

अङ्क १ भाग्योदय २४वें वर्ष मतान्तर, से २५वें वर्ष

अङ्क ७ भाग्योदय २५वें वर्ष

अङ्क ९ भाग्योदय ३० से ३२ वर्ष
अङ्क ५ भाग्योदय ३५वें वर्ष मतान्तर से ३६वें वर्ष
अङ्क ३ भाग्योदय २१वें वर्ष
अङ्क ६ भाग्योदय २८वें वर्ष
अङ्क ८ भाग्योदय ३६वें से ४२वें वर्ष मध्य
राहु — ४८वें वर्ष भाग्योदय
केतु — ४८ से ५४ वर्ष के मध्य भाग्योदय।

अब आप राशिनुसार ग्रह बल स्पष्ट करें आप राशि के एवं ग्रह के अंक ज्ञात कर ही चुके हैं। उदाहरण में दी गई जन्म कुंडली में—

सूर्य—तुला का है—
तुला के अंक ६ और सूर्य अंक १ अतः ६+१=७
चंद्र—वृश्चिक का है—
वृश्चिक के अंक ९ और चंद्र के ७ अंक अतः ९+७=१६ =१+६=७
मंगल—तुला का है—
तुला के अंक ६ और मंगल के अंक ९=६+९=१५=१ +५=६
बुध—तुला का है—
तुल के अंक ६ और बुधांक ५=६+५=११=१+१=२
गुरु—वृष का है—
वृष के अंक ६ और गुरु अंक ३=६+३=९
शुक्र—कन्या का है—
कन्या के अंक ५ और शुक्र के ६=५+६=११=१+ १=२
शनि—धनु का है—
धनु के अंक ३ और शनि अंक ८=३+८=११=१+ १=२
इस प्रकार संयुक्तांक हुए
७+७+६+२+९+२+२=३५=३+५=८
इस प्रकार इस जातक पर जिसकी उदाहरणीय कुंडली हैं

अंक २ का वर्चस्व मानना चाहिए।

मूलाङ्क :—

यहाँ अंक से हमारा अर्थ मूलांक से है। मूलांक से तात्पर्य आपके जन्म तारीख से है अर्थात् मूलांक निकालने के लिए जन्म तारीख की आवश्यकता रहती है। मान लीजिये 'क' का जन्म २७ तारीख को किसी माह में हुआ है तो उसका मूलांक होगा २ + ७ = ९ उसके जीवन में अंक ९ का प्रभुत्व रहेगा। उसके संपूर्ण जीवन पर अंक ९ का अधिपत्य रहेगा। इसी अंक से संबधित व्यक्तियों से सम्पर्क सूत्र जोड़ें लाभान्वित होंगे। इसी प्रकार किसी का जन्म किसी माह की २९ तारीख को हुआ है तो उसका मूलांक होगा २९ = २ + = ११ = १ = २ अर्थात् मूलांक २ किसी भी माह की तारीख ३१ से अधिक नहीं होती अतः पाठकों को ही सुविधार्थ मैं १ से ३१ तारीख तक के मूलांक नीचे स्पष्ट कर रहा हूँ।

तारीख	मूलांक
१	१
२	२
३	३
४	४
५	५
६	६
७	७
८	८
९	९
१० = १ + ० =	१
११ = १ + १ =	२
१२ = १ + २ =	३
१३ = १ + ३ =	४
१४ = १ + ४ =	५
१५ = १ + ५ =	६
१६ = १ ÷ ६ =	७
१७ = १ + ७ =	८

१८ = १ + ८ = ९
१९ = १ + ९ = १० = १ + ० = १
२० = २ + ० = २
२१ = २ + १ = ३
२२ = २ + २ = ४
२३ = २ + ३ = ५
२४ = २ + ४ = ६
२५ = २ + ५ = ७
२६ = २ + ६ = ८
२७ = २ + ७ = ९
२८ = २ + ८ = १० = १ + ० = १
२९ = २ + ९ = ११ = १ + १ = २
३० = ३ + ० = ३
३१ = ३ + १ = ४

इसके आगे भी यदि मूलांक निकालने की कहीं आवश्यकता हो तो इसी प्रकार मूलांक निकाले जा सकते हैं। उदाहरणार्थ आपकी कार या स्कूटर का नं० है ३१३९ तो मूलांक होगा ३ + १ + ३ + ९ = १६ = १ + ६ = ७

उपरोक्त को तालिका रूप में समझना अधिक उपयुक्तव व सरल रहेगा—

मूलांक	तारीखें
१	१—१०—१९—२८
२	२—११—२०—२९
३	३—१२—२१—३०
४	४—१३—२२—३१
५	५—१४—२३
६	६—१५—२४
७	७—१६—२५
८	८—१७—२६
९	९—१८—२७

किसी भी तारीख या अन्य संख्या का मूलांक करना हो तो

उस संख्या में ९ का भाग दें, शेष ही मूलांक होगी ।

मूलांक और जीवन—मैं दैनिक भविष्य के बारे में कुछ कहूँ उससे पूर्व आपको अपने मूलांक के बारे में सामान्य सी जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए ताकि तदनुकूल आप अपने को ढालने का प्रयास कर सकें। उत्तमता को प्राप्त करते हुए—अधमता से मुक्ति पाने का प्रयास कर सकें।

मूलांक एक—सूर्य से पूर्ण प्रभावित महत्वपूर्ण अंक है आपका । समस्त ग्रहों में दैदिप्यमान ग्रह सूर्य के समान आपका अंक भी समस्त अंकों में अग्रणी है । नैतृत्व करेंगे अपनी शिक्षा वधि में, नैतृत्व करेंगे जाति का, समाज का, धार्मिक क्रिया-कलापों का, व्यापारिक संगठनों में, विशाल व्यक्तित्व के धनी, महत्वाकांक्षी, विशालाक्ष, कार्यपटु, विचार प्रधान त्वरित निर्णयाधीन, सतत क्रियाशील, आदर्शवान, बात के धनी एवं सिद्धान्तों पर मरने-जीने वाले व्यक्ति हैं। सुसंगठित देह, लम्बा कद तेज मुक्त मुख-मण्डल ललाई लिए रक्तवर्णी रंग, स्पष्टवादी, दूरदर्शी यकायक क्रोधातिरेक से शत्रु का समूल नाश करने वाले, वादा करके उसे निभा जाने वाले व्यक्ति हैं ।

जहाँ विपत्ति की पाठशाला में पढ़ कर बड़े होते हैं वहीं आजीवन संघर्ष रत रह, कष्ट सह, उत्थान-पतन के झंझावातों में आगे बढ़ते हैं । चाहे व्यवसाय में हों चाहे नौकरी में उन्नति की सीढ़ियाँ चढ़ते ही नजर आते हैं । अहं वादी होने के कारण आप टूट तो सकते हैं परन्तु झुक नहीं सकते । हर संघर्ष और अधिक निखारता है पर घूमिल नहीं कर सकता। स्वतन्त्र व्यवसाय करने, तीव्र-बुद्धि के कारण श्रेष्ठ प्लानर, उच्च पदाधिकारी, श्रेष्ठ परिणाम के समर्थक रहते हैं ।

एकान्त वादिता के कारण अधिक मेल-जोल या मिलना सम्पर्क साधना अभीष्ट नहीं । सीमित मित्र-मण्डली, खुद गर्ज एवं स्व-स्वार्थ के पक्के रहते हैं । अपनी लाभ-हानि, ऊँच-नीच, यश-अपयश, जय-पराजय, मद्दे नजर रहता है । आत्म बल सदैव अन्ततः विजय दे देता है ।

नेपोलियन के शब्दों में आपके जीवन में असंभव शब्द निकट

भी नहीं है। किसी भी कार्य में हाथ डालें अपनी कार्य कुशलता के कारण उसमें पूर्णता प्राप्त कर ही लेते हैं।

सदैव स्वयं से असन्तुष्ट, महत्वाकांक्षा के चरम पर रह जीवन यापन करने वाले, सदैव असन्तुष्ट भाव से ग्रसित एवं उदासीन वृत्ति युक्त, निरन्तर चिन्तन शील, लक्ष्य भेदी व्यक्ति हैं। धैर्य आपका साथ छोड़ता नहीं, अच्छी सूझ-बूझ का संबल लिए अपनत्व भाव युक्त, स्वतन्त्रता के उपासक होने के नाते कभी किसी का आश्रय नहीं ढूँढ़ते। शीघ्र विश्वास कर प्रायः धोखा खा भी जाते है पर क्या परवाह ? स्वयं को सर्वेसर्वा मानने वाले अपने पर किसी का वर्चस्व स्वीकार नहीं करते। दबना जहाँ पसन्द नहीं वहाँ व्यर्थ किसी को पबाते भी नहीं हैं। उदार व दयालु हैं किसी को दुःख में देख नहीं सकते। मीना कुमारी, राष्ट्रपति विल्सन, शेख मुजीब्बुर्रहमान, केप्टन कुक, एनी बेसेंट, गारफील्ड व गोथे के उदाहरण हमारे सामने हैं।

लक्ष्य से विचलित होने पर अपना आपा खो बैठते हैं और अपनी प्रकृति बदल जाती है। क्रोध व झुंझलाहट का अतिरेक हावी हो जाता है। झगड़े की भावना बलवती होकर गृह कलह का वातावरण उत्पन्न कर देते हैं। जीवन के हर क्षेत्र में पग-पग पर लोग सहयोग देने के वास्ते तैयार मिलेंगे, आश्वस्त रहें। लोगों को आकर्षित करने का अद्भुत गुण ईश्वर ने आप में उत्पन्न किया है। चाटुकारिता, दीवानगा, गर्ज आदि आप पसंद नहीं करते। ठकुर सुहाती या आर्जाजी आपको रास नहीं आती।

सिंह वहाँ स्वभाव लिए अपना मार्ग स्वयं आप प्रशस्त करेंगे। बने-बनाए मार्ग पर चलना आपको अभीष्ट नहीं। लाभ व हानि का सामंजस्य लगभग आ जीवन बना रहेगा। व्यर्थ के आडंबर व तड़क-भड़क से आप भड़क उठते हैं धनोपार्जन में आप सिद्धहस्त है। श्रम करना आपका अवलंब है। सौंदर्य व कला प्रेमी, वक्त की पहिचान करने वाले तथा आकस्मिक घटनाओं से घिरे रहते हैं पर हिम्मत हारते नहीं।

यदि आप नारि है तो जीवन एक चेलेन्ज है ऐसा मानकर चलती है। आपका व्यक्तित्व पति-पिता-पुत्र या किसी अन्य के

कारण कभी धूमिल नहीं पड़ता। आडम्बर रहित, सरल-सौम्य वातावरण आप पसद करती हैं 'मरो परन्तु यों मरो कि याद जो करे सभी' दुनिया में कुछ कर गुजरने की बलवती चाह रहती है और इसी कारण आपका व्यक्तित्व अलग ही अपना स्वरूप लिए रहता है। एक निर्दिष्ट उद्देश्य और वहाँ तक अभीष्ट है पहुँचना झुके न आप न पति और यदा कदा गृह कलह का यही कारण बन जाता है। आप टूट तो सकती हैं पर झुक नहीं सकतीं। सामाजिक कार्यों में, सभा-सोसाइटियों में क्लबों में बढ़-चढ़ कर भाग लेती हैं। नैतृत्व आपका गुण है।

आपका मूलांक यदि एक है तो आपका गृहस्थ जीवन सुखी नहीं कहा जाता। आप कमाना अवश्य जानते हैं पर खर्च करना नहीं। ऊपर से आदर्श दिखने वाला गृहस्थ भीतर से टूटा रहता है। परस्पर वैचारिक मतभेद कटुता पैदा कर देता है।

खैर ! आप में कुछ कमिया हैं उन्हें दूर करने का भरषक प्रयास करें जिससे आजीवन खुशहाल रह सकें। आदर्श जीवन जी सकें। वे कमियाँ हैं—

(i) सत्यं ब्रुयात् प्रियं ब्रुयात् के स्थान पर आप कटु ब्रुयात वाला सिद्धान्त अपनाए रहते हैं यह ठीक नहीं। युगानुकूलता देख कटु सत्य कह शत्रु संख्या में वृद्धि न करें यही सलाह है।

(ii) निः सन्देह अनुशासन का पालन करना एक अच्छा गुण है परन्तु अति सर्वत्र वर्जयेत् को भी मद्देनजर रखें। अति बुरी होती है और आप में इसी कारण रुखापन बढ़ जाता है जीवन में रसता का अन्त आ जाता है और अधिनस्थ लोग पीठ पीछे कटु आलोचना करते हैं ऐसा उचित नहीं।

(iii) स्वयं पर आवश्यकता से अधिक विश्वास और अन्यों के प्रति अविश्वास भाव क्या अच्छी बात है। जहाँ विश्वास चाहते हैं, विश्वास करें भी। हर व्यक्ति सर्व गुण सम्पन्न हो यह आवश्यक नहीं है। इसी प्रकार आवश्यकता से कहीं अधिक शक्की मिज़ाज होना भी कोई अच्छी बात नहीं। आपके शक की सीमा में सभी आ जाते हैं, यही प्रगति में प्रमुख बाधा है।

(iv) निश्चय में दृढ़ता एक उत्तम मानवी गुण है पर जब यह

दृढ़ निश्चय भाव जिद् या हठ का रूप ले लेता है तो पतनोन्मुख हो जाना आवश्यक हो जाता है। आप हठ वादिता को छोड़ दें यही उत्तम है। आपके जीवन में हठ रास नहीं आती। हठ में आ श्रम, शक्ति, धन का अपव्यय करते हैं उससे बचें।

(v) नफरत की भावना से बचे, सबको अपना समझें क्षमा एक बहुत बड़ा मानवीय गुण है उसे अपनायें इससे आप उन्नति की ओर आगे बढ़ सकेंगे। आप क्रोध पर भी नियन्त्रण करने का प्रयास करें। क्रोध पाप मार्ग है जो मनुष्य को पतन की ओर ले जाता है। क्रोध में आकर आपको भले-बुरे, अपने-पराए का भी ध्यान नहीं रहता आप खो बैठते हैं। व्यर्थ शत्रु क्षेत्र बढ़ा देते हैं। गरिमा को न छोड़ते हुए आत्म नियन्त्रण करें।

(vi) आप में यदा-कदा तानाशाही भाव जाग्रत हो जाता है यह भी ठीक नहीं। स्वतन्त्रता आपको प्रिय है तो दूसरों को भी तो स्वतन्त्र जीवन यापन करने दें।

(vii) कर्मण्य बनना अच्छा गुण है और निः सन्देह अच्छा गुण है पर रात दिन काम में लिप्त रहें और आराम की ओर ध्यान ही न दें यह ठीक नहीं। समय पर स्वास्थ्य और आराम की ओर भी समुचित ध्यान दें। जितना आवश्यक काम है उतना ही आवश्यक आराम भी है। आराम दैहिक एवं मानसिक दोनों प्रकार से हो!

(viii) अर्थोपार्जन में आप सिद्ध हस्त हैं पर रुपये को खर्च करना आपको नहीं आता अतः हर समय धन का अभाव बना रहता है। आप फिजूल खर्ची के कारण बाजे वक्त बदनाम हो जाते हैं, ध्यान दें कि आपके गृह कलह का भी यही कारण है। आप अपने जिह्वा पर भी नियन्त्रण नहीं रख पाते और अनर्गल बक जाते हैं, उचित नहीं, ध्यान दें।

(ix) काम में इतने मशगूल हो जाते हैं कि आप घर, परिवार कुटुम्ब को भूल जाते हैं। उनकी उपेक्षा कर जाते हैं और तब वे भी आपकी उपेक्षा करें तो क्या आश्चर्य? क्या यह उचित लगेगा कि आप तो उन्नति के सर्वोच्च शिखर पर जा पहुँचे और सन्तान, भाई, संबंधी जमीन से ही चिपटे रहें।

(x) आपको विपरीत लिंगी व्यक्तियों से भी सौहाद्र्य पूर्ण व्यवहार रखना चाहिए। उन्हें आदर दें इससे आपके व्यक्तित्व में निखार आयेगा !

आपको भली भाँति याद रखना चाहिए कि आपको अपने जीवन में आभूषण, जवाहरात, स्वर्ण कारिता विद्युत कार्य, विद्युत विभाग, चिकित्सा कार्य, नैतृत्व का कार्य शतरंज के खेल, अग्नि सेवा कार्य, दमकल विभाग, सैन्य विभाग, राजइत, उच्च प्रधान पद, नियन्त्रक, हुकूमत, प्रशासक, जलवायु विभाग, श्रम विभाग, काष्ट कारिता, मेवे का व्यवसाय, जड़ी-बूटी का व्यवसाय, ठेकेदारी, का कार्य करना है यदि कर रहे हैं तो उत्तम है अन्यथा इस ओर प्रयास करें। सफलता कदम चूमेगी।

आइये ! अब दैनिक भविष्य पर विचार करें—

आपको ज्ञात है आपका वार सूर्य है अर्थात् रविवार याने (Sunday) आप पञ्चांग या कलैण्डर अपने पास ले लें और इस माह में देखें कि आपके अंक १ अर्थात् १।१०।१९।२८ तारीख को किसी दिन रवियार है क्या ? यदि है तो उस पर आप लाल श्याई या अन्य श्याई से घेरा बना लें ताकि आपको ध्यान रहे कि मुझे उस दिन को विशेष कार्य करना है। किसी रुके कार्य को भी करना है या उच्चाधिकारी से घर जाकर मिलना है या किसी से धनराशि मांग रहे हैं तो अवश्य तकाजा करें, यदि अस्वस्थ हैं और वैद्य-डाक्टर या हकीम से घर जाकर सलाह-मशवरा करना हैं तो आज से उत्तम दिन फिर कब आयेगा ? आप विशेष कार्य या व्यापार के लिए मशवरा लेना चाहते हैं या योजना का निर्माण करना चाहते हैं तो कागज-कलम लेकर प्रारंभ हो जाये, इससे उत्तम समय कब आयेगा ! आप यात्रा करना चाहते हैं और अवश्य करें, उद्देश्य में सफल होंगे। आप किसी समस्या से दो-चार हो रहे हैं तो निश्चय निराकरण कर लें पर उससे पूर्व अपना मूलांक ओर रविवार देख लें। आप परीक्षा की तैयारी प्रारंभ करना चाहते हैं आज ही करें, बाजार से कुछ विशेष खरीदना चाहते हैं या नौकरी हेतु आवेदन करना चाहते हैं तो ध्यान रहे आज से उत्तम दिन फिर कब आयेगा। रोमान्स की

बात करना चाहते हैं या प्रेम निवेदन तो तैयार रहें प्रयास सफल होंगे।

शायद आपको याद होगा कि आपके अंक की जाति क्षत्रिय है तथा ब्राह्मण वर्ग से आपका गुरू-शिष्य का सम्बन्ध रहा है! आप जो कार्य करना चाहते हैं करें पर यह देख लें वह क्षत्रिय या ब्राह्मण वर्ग से है अर्थात् जिससे सहायता लेना चाहते हैं या जिससे आप संपर्क सूत्र जोड़ना चाहते हैं यदि ऐसा है तो सफलता कदम चूमेगी। सफलता रूपी देवी आपके द्वार पर अगवानी हेतु तैयार है। बिना सोचे-समझे आप कार्य में जुट जाँय १०० प्रतिशत सफलता निश्चित है। आपमें क्षत्रियोचित्त तेज है, तीव्रता व उतावला पन है उस पर नियन्त्रण आवश्यक है। भावुकता की रो में बह कर कहीं अपना अहित न कर दें।

आपका रंग कालिमा युक्त लाल है याद है न फिर आज आप ऐसे ही रंग के वस्त्र पहने, उत्तम होगा जुर्राब, चड्डी, सर्ट, कोट, पैंट, घड़ी का पट्टा इसी रंग के रखें क्या ही उत्तम हो अपने प्रयोग में आने वाली हर वस्तु इसी रंग की हो। बेड शीट, तकिये का गिलाफ, पेन-पेंसिल, पर्दे, जालियाँ इस रंग की हों। गोगल्स के कांच या डायरी का कवर ऐसा रखें।

आपको यह भी ध्यान में रखना है कि आपका अंक पुरुष लिंगी होने के कारण १।१०।१६।२८ तारीख को यदि किसी पुरुष से कार्य अटका है या हित साधन करना है अथवा अभीष्ट प्राप्त करना चाहते हैं तो कालिमा युक्त लाल वस्त्र पहन कर सही व ठीक समय पर मिलें उत्तम फल प्राप्त होंगे। समय का निर्धारण आगे करूँगा। पुरुष लिंगी आपके कार्य में सहायक होगा। देखें क्या उनका भी मूलांक एक है? यदि ऐसा है तो आश्वस्त रहें १००% सफलता प्राप्त होगी!

ध्यान दें अंक एक वृद्धावस्था का स्वामी है अतः नौकरी, व्यवसाय, कार्य सिद्धि हेतु जिससे संपर्क करने जा रहे हैं या जिससे हित साधन चाहते हैं वह यदि वृद्धा वस्था का स्वामी हैं या आप प्रौढ़ हैं, वृद्ध है तो सफलता में कोई अड़चन नहीं। सफलता अवश्यं भावी है आप अपने उद्देश्य में सफल रहेंगे। आप यदि किसी से

पैसा मांगते हैं या कृण लेना चाहते हैं अथवा व्यावसायिक वार्ता करना चाहते हैं, उच्चाधिकारी से वार्ता करना चाहते हैं तो ऐसा करें, सफलता में कोई रुकावट नहीं। आप जिससे प्लानिग करना चाहते हैं वह आपसे अधिक आयु का है तो श्रेष्ठ है।

ऐसा व्यक्ति जिसका जन्म कृतिका, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा में हुआ हो वह आपको भर पूर सहयोग देगा क्या आज अर्थात् १।१०।१९।२८ तारीख को कृतिका, उ० फाल्गुनी या उ० षाढ़ा नक्षत्र है? यदि ऐसा है तो चिन्ता क्यों? सफलता रूपी देवी विजय माल लिए तैयार खड़ी है दिन भर में २४ घण्टे होते हैं और प्रधानतः रात्रि को ग्यारह बजे के बाद कोई कार्य करना, किसी से मिलना या भेंट करना उचित व व्यावहारिक नहीं जान पड़ता अतः सूर्योदय से रात्रि के ११ बजे के मध्य उत्तम समय का निर्धारण कर देता हूँ। प्रत्येक पञ्चांग में सूर्योदय दिया रहता है पर वह स्थानिक नही होता। मैं एक सरल सा उपाय बता देता हूँ। आप जहाँ रह रहे हैं वहाँ के देशान्तर मालूम कर लें किसी नक्शे से या एटलस या ग्लॉब से ग्रीनविच के देशान्तर से बाकी निकाल कर ४ से गुणा कर प्राप्त मिनट-सैकण्ड को पचांग से दिए सूर्योदय में जोड़ लें स्थानिक सूर्योदय प्राप्त होगा। देशान्तर यदि ८२।३० से अधिक है तो घटा लें।

उदाहरण—वि-सं २०३४ शाके १८९९ को वैशाख कृष्णा १०वी तिथि तदनुसार १३ अप्रेल को जोधपुर का सूर्योदय ज्ञात करना है। पंचाग में सूर्योदय ५।४३ तथा देशान्तर है ७३।०४

```
   ८२।३०
  —७३।०४
  -------
    ९।२६
    ×४
  -------
   ३६.१०४
   ३६. ००
 + १. ४४
  -------
 ३७ मि. ४४ सै.
```

स्थानिक सूर्योदय ५।४३
०।३७।४४
६।२०।४४

अब आप इस दिन मान लो मिलना चाहते हैं, सूर्योदय ज्ञात है तो ६।२०।४४ से १०।५०।४४ के मध्य अथवा १०।५०।४४ से १२।२०।४४ के मध्य १।५०।४४ से ३।२०।४४ के मध्य ६।२०।४४ से ६।२०।४४ रात्री के मध्य।

आपको ध्यान रहना चाहिए आपकी दिशा पूर्व दिशा है अत: पूर्व दिशा में यात्रा करनी है अथवा कहीं जाना है अथवा मिलना है तो उत्तम ! ध्यान करें आप नौकरी वास्ते प्रार्थना-पत्र दे रहे हैं या किसी व्यावसायिक प्रतिष्ठान को पत्र देना है अथवा मिलने जाना है या अन्य कोई कार्य करना है और पूर्व दिशा है तो पूर्ण आश्वस्त रहें, सफलता चेरी बन कर रहेगी !

बहुत उत्तम रहे यदि मोटे वस्त्र आज के दिन धारण करें तथा सूती हों तो उत्तम होगा ! क्या ही उत्तम हो यदि ग्रीष्म ऋतु हो। आपको चाहिए आपको अपने उपयोग में आने वाले बर्तनों में ताँबे की प्रधानता हो पूजन सामग्री में आवश्यक रूप से ताम्र बर्तन काम में ले जल पीने के लिए ताम्र पात्र हो तो कहीं श्रेष्ठ है।

आपका रत्न माणिक्य है यह तो ध्यान है की यदि माणिक्य की रिंग आपके पास है यह तो अवश्य धारण कर लें। यदि अंगूठी नहीं है तो यों ही यदि माणिक्य पड़ा है तो लाल वस्त्र में लपेट कर बाँह के बाँध लें पुरुष हैं तो दाहिने बाँह पर तथा स्त्री जातक हैं तो बाँए बाँह पर बांधे। यदि आपके पास माणिक्य नहीं है तो प्रात: उठ नित्य क्रिया से निवृत्त हो, पूर्वा भी मुख बैठ निम्न यंत्र १०८ बार भोजपत्र पर बनाएँ—भोजपत्र उपलब्ध न होने पर सफेद कागज अथवा भूमि पर १०८ बार यंत्र बनाएँ एवं निम्न मन्त्र का जाप करें।' अधिकस्य अधिक फलं।

६	१	८
७	५	३
२	९	४

मंत्र—आकृष्ठोन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्न मृतम्मर्त्यंच्च हिरव्ययेन सविता रथेन देवो याति भुवनानि पश्यन् ।।

आज आपको यथा शक्तिदान देना चाहिए जिनमें स्वर्ण, ताम्र पात्र, गेहूँ, गुड़, घृत, रक्तवस्त्र, रक्त पुष्प या कनेर पुष्प, रक्त चंदन, धेनु हो तो श्रेष्ठ है अपने भोजन में भी घी-गुड़, गेहूँ का चूर्ण लें। पूजा में सफेद के स्थान पर लाल पुष्प, रक्त चन्दन, गेहूँ, लाल वस्त्र काम में लें। क्या ही अच्छा हो आसन भी लाल हो कार्य-व्यवसाय के पश्चात् बचा हुआ समय घर या कहीं बाहर भी देव स्थान पर व्यतीत हो तो उत्तम है। गप्पें मारना है या समय व्यतीत करना है, तो देव स्थान उत्तम रहेगा।

यदि कोई राजनीतिक मामला अधर में लटका है या राजनीतिक समस्या से उलझे है या रजनीतिक व्यक्ति से मिलना हैं, सम्पर्क सूत्र जोड़ना है या सलाह लेनी है यात्रा करना है तो आज से श्रेष्ठ दिन भला कब आयेगा। भ्रमणार्थ दूर जंगल या पर्वत स्थल का उपयोग करें तो सुन्दर रहेगा।

आज के दिन पिता के कार्य को लेकर कार्य करें अथवा उनके लिए कुछ करें अथवा पितृ पक्ष को लेकर किसी कार्य में उद्यत हो रहे हैं तो सफलता निश्चित है। अपनी आत्म शुद्धि एवं आत्मिक कार्यों के लिए सुन्दर समय है। अस्थि संबंधित कोई रोग है, ऑप्रेशन करवाना आवश्यक है, प्लास्टर या अन्य कार्य तो आज ही ऐसा करें श्रेष्ठ रहेगा। आप को यदि दशा प्रतिकूल चल रही है तो सिर व मुँह की रक्षा करें। वाहन चलाने में सावधानी रखें अन्यथा ऐक्सीडेंट होने पर यही भाग सर्वाधिक प्रभावित होंगे।

आपको ज्ञात है चन्द्र-मंगल और गुरु आपके अंक के मित्र हैं अर्थात् अंक ७, ९, और ३, अंक ६।८ सम भाव रखते हैं तथा अंक ५ शत्रु है ध्यान रहे।

आपकी आयु का यदि २४ वां या २५ वाँ वर्ष लग रहा है तो ध्यान रहे भाग्योदय होने जा रहा है। बस, जरुरत है तो इतनी कि आप समय का सदुपयोग कर सकें।

इस प्रकार आप अपने बारे में जान चुके हैं। आइये! अब शेष दिनों के बारे में भी ज्ञात करलें कि किस प्रकार सावधानी रखें एवं जीवन यापन करें।

सर्व प्रथम अंक एक के मित्रांक ७।६।३ के बारे में स्पष्ट कर दूँ। तत्सम्बन्धी तारीखें होंगी—३।१२।२१।३०, ७।१६।२५,, ६।१८।२७ सब मिला कर ३।७।६।१२।१६।१८।२१।२५।२७।३० इन तारीख को ध्यान दें।

सर्वोत्तम हो यदि ३।१२।२१।३० को बृहस्पति वार ७।१६।२५ को सोमवार तथा ६।१८।२७ को मंगलवार हो।

अंक —३।७।६ मित्र व शुभत्व कारक।

तारीखें—३।७।६।१२।१६।१८।२१।२५।२७।३०

वार—बृहस्पतिवार, सोमवार, मंगलवार।

मित्र राशि—गुरु राशि, धनु-मीन, चन्द्र राशि कर्क, मंगल राशि मेष-वृश्चिक।

शुभत्व दायी नक्षत्र—मूल, पूर्वाषाढा व उत्तराषाढा का प्रथम चरण, पूर्वाभाद्र पद अन्तिम चरण, उत्तराभाद्र पद, रेवती तथा पुनर्वसु का अन्तिम चरण, पुष्य, आश्लेषा एवं अश्विनी, भरणी कृतिका का प्रथम चरण एवं विशारवा का अन्तिम चरण, अनुराधा व ज्येष्ठा।

अनुकूल नामाक्षर—ये, यो, भा, भी भू, धा, फा, ढा, भे।
दी दू थ झ ञ दे दो चा ची।
टी हू हे हो डा डी डू डे डो।
चू चे चो ला ली लू ले लो आ।
तो ना नी नू ने नो या यी यू।

जातिनुकूलता— ७।१६।२५ को वैश्य।
३।१२।२१।३० को ब्राह्मण।
६।१८।२७ को क्षत्रिय।

रंग की अनुकूलता—७।१६।२५ को धवल, श्वेत।

३।१२।२१।३० को पीला
६।१८।२७ को गौर वर्ण युक्त लाल

लिंगानुकूलता—३।१२।२१।३० को पुरुष वर्ग से संपर्क
७।१६।२५ को स्त्री वर्ग से संपर्क
६।१८।२७ को पुरुष वर्ग से संपर्क

अवस्थानुकूलता—३।१२।२१।३० प्रौढावस्था जातक से
७।१६।२५ को युवावस्था के जातक से
६।१८।२७ को बाल्यावस्था के जातक से

सात्विक कार्यानुकूलता—
३।१२।२१।३० तारीख को ।

राजस कार्यानुकूलता— ७।१६।२५ तारीख को ।

तामसी कार्यानुकूलता— ६।१८।२७ तारीख को ।

दिशानुकूलता—
३।१२।२१।३० तारीख को ईशान कोण में ।
७।१६।२५ तारीख को वायव्य कोण में ।
६।१८।२७ तारीख को दक्षिण दिशा में ।

स्वभावानुकूलता—
३।१२।२१।३० तारीख को मृदु व्यवहार
७।१६।२५ तारीख को चंचल व्यवहार
६।१८।२७ तारीख को उग्र व्यवहार

गुणानुकूलता—३।१२।२१।३० तारीख को रजो गुण प्रधान कार्य
७।१६।२५ तारीख को सत्व गुण प्रधान कार्य

तत्वानुकूलता—
३।१२।२१।३० तारीख को आकाश तत्व प्रधान कार्य
७।१६।२५ तारीख को जल तत्व प्रधान कार्य
६।१८।२७ तारीख को अग्नि तत्व प्रधान कार्य

ऋतुनुकूलता—३।१२।२१।३० तारीख को शरद् ऋतु शुभत्वदायी
७।१६।२५ तारीख को वर्षा ऋतु सुभत्वकारी
६।१८।२७ तारीख को ग्रीष्म ऋतु शुभत्वकारी

वस्त्रानुकूलता—३।१२।२१।३० तारीख को सामान्य वस्त्र
७।१६।२५ तारीख को नवीन वस्त्र

९।१८।२७ तारीख को जले हुए धूमिल वस्त्र

द्रव्यानुकूलता—३।१२।२१।३० तारीख को रजत
७।१६।२५ तारीख को रजत
९।१८।२७ तारीख को स्वर्ण

रत्नानुकूलता—
३।१२।२१।३० तारीख को पुखराज
७।१६।२५ तारीख को मोती
९।१८।२७ तारीख को प्रवाल

पशु-पक्षी से शुभता—
३।१२।२१।३० तारीख को द्विपाद से
७।१६।२५ तारीख को रेंगने वाले जीवों से
९।१८।२७ तारीख को चौपायों से

स्थानानुकूलता—
३।१२।२१।३० तारीख को भण्डार गृह में
७।१६।२५ तारीख को जलीय तट, स्थान
९।१८।२७ तारीख को अग्नि कुंड

कालानुकूलता—
३।१२।२१।३० तरीख को मास
७।१६।२५ तारीख को क्षणिक समय
९।१८।२७ तारीख को दिन भर का समय

विद्या-अध्ययन—
३।१२।२१।३० तारीख को व्याकरण या वेदाभ्यास
७।१६।२५ तारीख को ज्योतिष अध्ययन
९।१८।२७ तारीख जो युद्धाभ्यास

स्थान बल—
३।१२।२१।३० तारीख को विद्वद घर, ग्राम्य
७।१६।२५ तारीख को जला शय, जल क्रीड़ा।
९।१८।२७ तारीख को पर्वत क्षेत्र, बन क्षेत्र।

सुखानु भूति—
३।१२।२१।३० तारीख को सन्तान पक्ष से।
७।१६।२५ तारीख को मातृ पक्ष से।

९।१८।२७ तारीख को भगिनी पक्ष से ।

आत्माधिपत्य—

३।१२।२१।३० तारीख को ज्ञान व सुख ।

७।१६।२५ तारीख को मानसिक सुख और ।

९।१८।२७ तारीख को शक्ति गौरव दशा प्रति-कूलता होने पर दैहिक दोष—

देहाधिपत्य दोष—

३।१२।२१।३० तारीख को चर्बी एवं कमर से जांघ तक के भाग पर ।

७।१६।२५ तारीख को रक्त एवं गले से हृदय तक के भाग पर ।

९।१८।२७ तारीख को मज्जा व पेट से पीठ भाग पर ।

भाग्योदय—यदि २१ वां वर्ष चल रहा है तो ३।१२।२१।३० तारीख अनुकूल है प्रयास करें ।

यदि २५ वां वर्ष चल रहा है तो ७।१६।२५ तारीख को किया प्रयास सफल होगा ।

यदि ३० से ३२ वर्ष के मध्य आयु है तो भाग्योदय का समय है ९।१८।२७ तारीख को प्रयास करें ।

समय अनुकूलता—

३।१२।२१।३० ता० को सूर्योदय १½ घण्टा पर्यन्त सूर्योदय उपरान्त ६ घण्टे से ९ घण्टे के मध्य सूर्यास्त से १½ घण्टा पूर्व का समय । सूर्यास्त से १½ घण्टा पर्यन्त समय ।

७।१६।२५ तारीख की सूर्योदय से १½ घण्टे के मध्य का समय ।

सूर्योदय से ३ घण्टे बाद से १½ घण्टा एवं सूर्यास्त से ३ घण्टा पूर्व का समय ।

९।१८।२७ तारीख को सूर्योदय से ४½ घण्टे बाद से ३ घण्टा पर्यन्त एवं ९ घण्टा बाद से १½ घण्टे का समय, सूर्यास्त के १½ घण्टा बाद १½ घण्टा पर्यन्त ।

विपत्ति पूर्ण स्थिति आने अथवा अहित की आशंका होने पर

आप दान-पुण्य पर बल दें।

दान—

३।१२।२१।३० तारीख को केला, नारंगी, नीबू, चने की दाल, पीत वस्त्र, पीताम्बर, पुस्तक, धार्मिक ग्रन्थ, कांस्य पात्र पीत पुष्प, स्वर्ण, चीनी, शक्कर, घृत्त, हल्दी, बेसन तथा अन्यान्य पीली वस्तुएँ।

यंत्र—इन्हीं तारीखों को निम्न यन्त्र को भोजपत्र पर अष्ट-गंध की श्याई से कलम अनार से १०८ बार लिख कर जलाशय में प्रवाहित कर दें तथा प्रातः काल पूर्वाभिमुख बैठ निम्न मंत्र की ५ माला का जाप करें, श्रेष्ठ रहेगा।

यंत्र—

१०	५	१२
११	९	७
६	१३	८

मंत्र—ॐ बृहस्पते ऽ अतियदर्य्यो ऽ अर्हाद्यु मद्विभाति क्रतुमज्ज नेषु ! यद्दीदयच्छवस ऽ ऋतप्रजात तदस्मासुद्रविणान्धेहि चित्रम्।

दान—७।१६।२५ तारीख को मोती, स्वर्ण, रजत, कर्पूर, चावल बताशे, मिश्री, दही, दूध, श्वेत वस्त्र, श्वेत पुष्प, शंख, पुस्तक इत्यादि।

यंत्र—

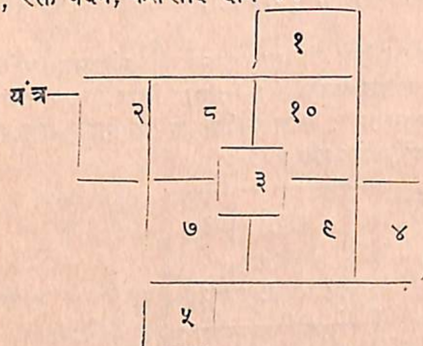
१४	९	१६
१५	१३	११
१०	१७	१२

मंत्र—ॐ इमंदेवाऽ असपत्न ॐ सुबहवम्महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जान राज्यायेन्द्रस्योन्द्रियाय। इम ममुत्यै पुत्र म

मुष्यै पुत्र मस्ये व्विशएषवोभी राजा सोभोस्माकं ब्राह्मणाना घुं राजा।

दान—६।१८।२७ तारीख को आप को चाहिए कि आप मूँगा, स्वर्ण, गुड़, गेहूँ, रक्त पुष्प, लाल वस्त्र, ताम्र मसूर, गुड़, घृत, कैनर पुष्प, रक्त चंदन, केशरादि दान दें।

यंत्र—



मंत्र—ॐ अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पति पृथिव्या ऽ अयम्। अपा घुं रेता घुं सिजिन्वति।

आपको ध्यान होगा कि अंक २।४ और ५ आपके लिए समभाव रखते है जो न हो तो शुभ है और न ही अशुभ तथापि वे शुभ कर न होने के कारण आप अनावश्यक रिस्क न लें तथा कोई ऐसा कार्य न करें जिसकी सफलता में सामान्य सी भी वहम हो तदुपरांत भी आप निम्न प्रकार प्रयोग करें अनुकूलता रहेगी—

अंक-दो—

तारीख—२।११।२०।२९

वार शुभ—चंद्र, सोमवार

राशि शुभता—कर्क

नक्षत्र—पुनर्वसु चतुर्थ चरण, पुष्य और आश्लेषा।

नामाक्षर—ही-हू-हे-हो-डा-डी-डू-डे-डो।

शुभ जाति—वैश्य

रंग—सफेद

लिंग—स्त्री लिंगी जातक
शुभ अवस्था—युवावस्था वाले नागरिक
शुभ दिशा—वायव्य कोण
स्वभाव—चञ्चल
गुण—सत्व
तत्व—जल तत्व
ऋतु—वर्षा
वस्त्र—नवीन
द्रव्य—चांदी
रत्न—मोती
पक्षी-पशु—सरीसृप
क्रीड़ा स्थल—जलीय तट
समय—क्षणिक
अध्ययन—ज्योतिष
स्थान—जलाशय
सुख—माता, मानसिक
अधिपत्य—रक्त, गले से हृदय तक
भाग्योदय—यदि २५वां वर्ष है।
यंत्र—

८	१	६
३	५	७
४	९	२

दान—सफेद वस्तु, स्वर्ण, कांस्य पदार्थ, दूध, दही, पुस्तक।

मंत्र—ॐ इमंदेवा ऽअसपत्न घुं सुवहवम्महतेक्षत्राय महते ज्यैष्ठ-याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इममुष्यैपुत्र मस्यैंव्विशएषवो मीराजा सोमोस्माकं ब्राह्मणाना घुं राजा।

अंक चार — अंक पांच
तारीखें—४।१३।२२।३१ — ५।१४।२३

वार—हर्षल बुध

राशि शुभता—कन्या और मिथुन

नक्षत्र—मृगशिरा ३।४ चरण, आर्द्रा, पुनर्वसु के प्रथम तीन चरण उत्तराफाल्गुनी .अंतिम ३ चरण, हस्त, चित्रा के दो चरण

नामाक्षर—का की कु घ ङ छ के को हा तथा टो पा पी पू ष ण ठ पे पो।

जाति—शूद्र ब्राह्मण।

रंग—कालिमा युक्त हरा।

लिंग—नपुंसक अवस्था—वृद्ध दिशा—उत्तर

स्वभाव—मिश्रित गुण—रजोगुण तत्व—पृथ्वी तत्व

ऋतु—शरद् वस्त्र—पुराने वस्त्र द्रव्य—कांस्य, सीप

पशु-पक्षी—पक्षी रत्न—पन्ना क्रीड़ास्थल—कौतुकागार

कालसमय—ऋतु अध्ययन—वेद—गणित विषय।

कारक स्थल—गाँव, विद्वद समाज सुख—बहिन, वाणी त्वचा हाथ-पांव।

भाग्योदय—३५।३६ वर्षावस्था में

दान—पन्ना, स्वर्ण, मूंगा, कांस्य पात्र, घृत, शक्कर, कर्पूर हरित वस्त्र, हाथी दांत, पञ्चरत्न।

यंत्र—

९	४	११
१०	८	६
५	१२	७

मंत्र—उद् बुध्यस्वाग्नेप्रति जागृति त्वमिष्टा पूर्तेस धुं सृजे थामयञ्च। अस्मिन्त्सधस्थे ऽ ध्युत्तरस्मिन्वि श्वेदेवा यज मानश्य सीदत।

आपको ध्यान होना चाहिए अंक ६ और ८ आपके शत्रु हैं फलतः तारीख ६।१५।२४ तथा ८।१७।२६ अनुकूल न रह अशुभ फलदायक होगी अतः पूर्ण सावधान रहें एवं किसी प्रकार का खतरा नहीं उठाये। यथासंभव यात्रा न करें, नए सम्पर्क सूत्र न जोड़े, व्यापारिक गठबन्धन करें। यदि ६।१५।२४ तारीख को यदि शुक्रवार है अथवा ८।१७।२६ को शनिवार है तो उन्हें कत्तई छोड़ दे। शुभ

कार्य न करें। यों भी शुक्रवार व शनिवार उपयुक्त नहीं रहते हैं।

वृष. तुला तथा मकर—कुंभ राशि इ. उ ए. ओ. वा. वी. वू. वे. वो. रा. री. रु. रे. रो. ता. ती. तू, भो. जा. जी. खी. खू. खे. खो. गा. गी. गू. गे. गो. सा. सी. सू. से. सो. दा नामाक्षर व्यक्तियों से कत्तई सम्पर्क नहीं करें तथा कृतिका के अंतिम ३ चरण. रोहिणी. मृगशिर्ष के प्रथम दो चरण चित्रा के अंतिम दो चरण, स्वाति, विशाखा के प्रथम तीन चरण, उतराषाढ़ा के अंतिम ३ चरण, श्रवण, घनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद के ३ चरण सर्वथा प्रतिकूल रहेंगे अतः बचे रहने का प्रयास करें।

भूल कर भी क्रमशः ब्राह्मण वर्ग व अन्त्यज लोगों से संपर्क न रखें, चितकबेर व काले वस्तु, रंग से बचे रहें स्त्री वर्ग से सम्पर्क न करें अतिवृद्ध व प्रौढ़ व्यक्ति से लाभ न उठा सकेंगे। आग्नेय कोणा व पश्चिम दिशा में यात्रा न करें, तमोगुणी लोगों से, तीक्ष्ण स्वभाव के जातकों से बचे रहें, स्वर्ण व लोह धातु, हीरे व नीलम रत्न व चतुष्पदी जानवरों से बचें। शयनागार व कूड़ाघर के पास न फटकें, भोग सम्बन्ध न करें। वेदाध्ययन न करें अलाशय व पर्वतीय स्थलों, पर भ्रमणार्थ न जायें अन्यथा अहित कर बैठेंगे। स्त्री व भृत्य से धोखा उठायेंगे। स्नायु-मण्डल कमजोर रहेगा एवं आन्तिक कष्ट, वीर्यनाश, काम-शक्ति में निर्बलता शिशन से वृषण व घुटने से पिंडली तक का भाग कमजोर रहेगा, दर्द देगा, सावधान रहें।

समग्र रूप से देखने पर शुभाशुभता का एक चार्ट निम्न प्रकार तैयार कर सकते हैं—

तारीख	शुभता	तारीख	शुभता
१	श्रेष्ठ	९	सर्वोत्तम
२	सामान्य	१०	श्रेष्ठ
३	उत्तम	११	सामान्य
४	सामान्य	१२	उत्तम
५	सामान्य	१३	सामान्य
६	निकृष्ट, हानिप्रद, अहितकर	१४	सामान्य
७	उत्तम	१५	निकृष्ट
८	निम्न व हानिप्रद	१६	उत्तम

तारीख	शुभता	तारीख	शुभता
१७	निम्न व हानिप्रद	२५	उत्तम
१८	सर्वोत्तम	२६	निम्न व हानिप्रद
१९	श्रेष्ठ	२७	सर्वोत्तम
२०	सामान्य	२८	श्रेष्ठ
२१	उत्तम	२९	सामान्य
२२	सामान्य	३०	उत्तम
२३	सामान्य	३१	सामान्य
२४	निकृष्ट		

अंक दो :—

आपका जन्म २।११।२० अथवा २९ को हुआ है अतः आपका मूलाङ्क दो है। अस्तु !! ध्यान रहे आपके अंक का प्रतिनिधित्व चन्द्रमा कर रहा है इसी कारण ही आप कोमलांगी, भावुक, संवेदन शील, चञ्चल एवं अनिश्चय की स्थिति में रहने वाले जातक हैं। चन्द्र है मन्त्री फलतः आजीवन कार्याधिक्यता का बोझ अपने कंधों पर लिए रहेंगे। एक ओर मौलिक अनुभूति और प्रतिभा है पर दूसरी ओर आप सफल नेता फिर भी नहीं कहे जा सकते। चन्द्रमा के समान ही आप में है शीतलता, शान्त, ठण्डापन एवं शारीरिक शक्ति की अपेक्षा मानसिक क्षमता व शक्ति में बेजोड़ हैं। ध्यान है चन्द्रमा एक राशि पर २$\frac{1}{4}$ दिन से अधिक नहीं ठहरता, ठीक इसी प्रकार आपका कोई विचार लम्बे समय तक आपके मस्तिष्क में नहीं रह सकता, निरन्तर वैचारिक परिवर्तन आपकी विशेषता है। वैचारिक दृढ़ता का अभाव आपकी पराजय, असफलता का कारण है। ठीक है ना ?? कार्य को जिस उत्साह से प्रारम्भ करते हैं अन्त तक वही उत्साह रह नहीं सकता अपितु बीच में ही उसे अधूरा छोड़ नया कार्य आरम्भ कर देते हैं। इस दुर्गुण को सुधारें अन्यथा ले डूबेगा ! मानसिक शक्ति तीव्र होकर भी असफल हो जाते हैं कारण आपमें अधर्य व अध्यवसाय का अभाव पाया जाता है। मस्तिष्क कुण्ठा ग्रस्त, त्रस्त, उद्वेलित रहता है। बार-बार की पराजय, असफलता के कारण झुंझलाहट बढ़ जाती है। निराशा आप पर अधिकार जमा लेती है।

मानव पारखी आपकी अद्‌भुत्त क्षमता वान बुद्धि है । कोई व्यक्ति क्यों आया है ? क्या कार्य हैं ? क्या चाहता है ? इसके मन में क्या है ? इसे क्या जबाब देना चाहिए ? सब समझ जाते हैं और युक्ति संगत जवाव दे देते हैं आपमें स्त्रियो चित्त गुणों की प्रधानता है । बात का लहजा चाल-ढाल, बनाव श्रृंगार, बात को दोहराना, खाने-पीने, चलने-उठने-बैठने, रहन-सहन, व्यस्तता में स्त्रियो चित्तत्ता का आभाष होता है । आप स्थूल काय या अधिक हृष्ट-पुष्ट नहीं हो सकते । शारीरिक बल भी सामान्य बना रहता है । कष्ट या दुःख सहन नहीं कर सकते । किसी को कष्ट में नहीं देख सकते । बाहर रहना अधिक पसन्द होने के कारण घर में रहना अभीष्ट नहीं फलतः घर के सदस्यों को आप निभा नहीं सकते । आपको शक्की मिजाज कहूँ तो क्या आश्चर्य ?

आप हैं आत्मविश्वासी, वचन को निभाने वाले वचनों पर दृढ़, स्वयं की भावनाओं में उलझे रहते हैं इस प्रकार स्वयंभु कह सकता हूँ । सौंदर्य प्रेमी व सौन्दर्यो पासक होने के साथ-साथ दूसरों को आपनी ओर आकर्षित करने में चुम्बकीय आकर्षण रखते हैं । आपरिचित से अपरिचित व्यक्ति को तुरन्त अपना बना लेने की क्षमता आप में है ।

सरल कुछ इतने के चलती राह कोई आप को सहज ही में ठग सकता है । और बार-बार ठगे जाते रहे हैं । हर कदम पर धोखा खा कर भी सम्भलते नहीं । जानते बूझते ठगे जाकर भी खड़े-खड़े तमाशा देखते रहते हैं । यह अभीष्ट नहीं । आपको सच-मुच जागरूक रहने की जरूरत है, आवश्यकता है । एक प्रकार से आप दुहरा जीवन जीने के आदि हैं । किसी को कुछ कह कहीं सकते चाहे वह आपका कितना ही बड़ा अहित क्यों न कर दे । एक बात स्पष्ट सामने है तो दूसरी गोपनीय है यह निश्चित है ।

ज्यों गिरगिट रंग बदलता है उसी प्रकार देश काल, परिस्थि-तियों के अनुरूप आप अपने आपको बदल लेते हैं । अपने कार्य को एवं विचारधारा को यकायक बदल जाते हैं और लोग देखते रह जाते हैं । एक सुनिश्चित योजना के अभाव में भी आप उस कार्य को सफलता के शिखर पर पहुँचा जाते हैं । सफलता कदम चूमती

है। अस्तु।

आपके गृहस्थ जीवन को सफल नहीं कहा जा सकता है तथा गृहस्थ जीवन में निरन्तर भूचाल आते रहते हैं पर निर्णय लेने में पीछे रह जाते हैं। स्वयं शंकालु होकर भी दूसरों को हिम्मत बँधाते रहते हैं। किसी प्रश्न के उत्तर में या कार्य सम्पादन में 'ना' का उत्तर देना आपको अभीष्ट नहीं। ललित कलाएँ आपका प्रिय विषय हैं।

अस्थिरता तथा अनिश्चयता का स्वभाव आपको अपने पथ से विचलित कर दे ऐसा कदापि सम्भव नहीं। आप चाह कर भी अपना लक्ष्य छोड़ नहीं सकते। येन-केन-प्रकारेण आप अपने लक्ष्य तक जा पहुँचते हैं। न तो गलत बात पर अड़ते हैं और न ही व्यर्थ जिद्द करते हैं यह एक अच्छा गुण है न किसी से व्यर्थ वैर-विरोध मोल लेते हैं अपितु सम्मुख आये व्यक्ति के भीतर छुपे गुणों तक को अपना लेने का प्रयास करते हैं और इसमें सफल भी रहते हैं। 'पड़्यो अपावन ठौर पे, कंचन तजे न कोय' सिद्धान्त के समर्थक हैं आप।

आप सचमुच दोहरा व्यक्तित्व जीने के आदि हैं। आप वह नहीं हैं जो बाहर से दिखाई देते हैं आपका बाह्य व आन्तरिक व्यक्तित्व भिन्न है। एक बार सम्पर्क में आया व्यक्ति आपको भूल नहीं सकता। आप सामान्य कद के मझौले, सामान्य धूम युक्त चेहरा, सामान्य रहन सहन तथा 'सादा जीवन उच्च विचार' आपका सहायक है।

स्त्रियों न जाने क्यों सहज ही आपकी ओर आकर्षित हो जाती हैं, उनके प्रिय भाजी बन जाते हैं और उनके अन्तःकरण में छिपे राज को आप बात ही बात में जान जाते हैं। मित्र आपको सदैव घेरे रहते हैं क्या हुआ यदि वे खुद गर्ज हैं। मित्र बनाने की कला में आप सिद्धहस्त हैं। आपकी अपेक्षा मित्र आपसे कहीं अधिक लाभ उठा जाते हैं। अपना मतलब साधने के बाद वे आपसे किन्नी काट जाते हैं। वास्तविक मित्रों के अभाव में आप प्रायः खोए-खोए रहते हैं। और मित्रों के बिना एक कदम भी चलना आपसे संभव नहीं।

मैं आपको नास्तिक कह दूँ तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। एक अलौकिक शक्ति रूप में ईश्वर को भले ही मान ले परन्तु मूर्त्ति पूजा इत्यादि में विश्वास नहीं करते। प्रत्यक्ष अटल है परोक्ष गौण ऐसा विश्वास घर कर गया है। फलतः आप प्रकृति प्रेमी हैं और इसी कारण व्यर्थ का शोर-गुल, हो-हल्ला, कोलाहल पसन्द नहीं करते। निश्चय ही जीवन में जलयात्रा का अवसर आपको मिलेगा, हो सकता है यही यात्रा भाग्योदय में सहायक हो जाये।

अति सौभाग्यशाली व्यक्ति हैं आप इस मायने में कि आपको धर्मपत्नी विदुषी, गुणवान, सौभाग्यशाली, सुन्दर धनाढ्य, धार्मिक पतिप्रिया, कुटुम्ब-प्रेमी मिली है। स्वयं आप गृह-कार्य में दक्ष, वस्तु संग्रह-क्रय करने एवं संभालने में दक्ष हैं। तत्वों की देख रेख, रसोईघर के चहेते, गृह कार्य में हाथ बँटाते रहते हैं।

सत्यतः आप हैं भीरू प्रकृति के अतः खूब संभल संभल कर शान्तिपूर्वक ढंग से कार्य को निपटाते हैं। लड़ाई-झगड़ा या वाद-विवाद से आप दूर भागते हैं, ऐसा अवसर ही नहीं आने देते जिसमें लड़ाई-झगड़ा या विवाद की स्थिति उत्पन्न हो। अहिंसा के सच्चे पुजारी आपको मान लें तो कोई आश्चर्य नहीं।

सहृदय, दीन-दुखियों के हितैषी, परोपकारी, दयावान परम देश भक्त, सामाजिक कार्य-क्रमों में बढ़-चढ़ कर भाग लिया करते हैं। क्लबों, होटलों, सार्वजनिक स्थलो में आपका मन रमता है। जीवन में कभी किसी कार्य वास्ते आपके मुँह से 'ना' नहीं निकलता।

एक उच्च कलाकार, संगीतज्ञ, श्रेष्ठ लेखक चित्रकार, कवि, भाषणकर्ता के कीटाणु आपमें है। चिनगारी पर राख जमी हुई है अतः उसे कुरेदने की जरूरत है जिससे वह चिनगारी धधक उठे। आपकी काव्य रचनाएँ नया कीर्तिमान स्थापित करती हैं। आपका भाषण सुन जन मानस झूम-झूम उठता है। सौंदर्य आपका मूल मन्त्र के साधन का सोपान है, हर सुन्दर वस्तु आपकी अपनी है चाहे वह सजीव हो या निर्जीव।

आप यदि स्त्री जातक हैं तो ठहरिए और विचार कीजिये कि आप प्रत्येक कार्य में क्यों हड़बड़ा जाती हैं? क्या यह ठीक है? किसी भी कार्य के शुभारम्भ से पूर्व सुनिश्चित योजना का क्रम

बद्धता का अभाव रहता है। जैसा है वैसा ठीक है इस आदत को छोड़ दें। पति आपके कार्यों में हस्तक्षेप करे यह आपको नागवार रहता है। भावुकतावश मानसिक द्वन्द्व की स्थिति तनाव भरा वातावरण प्राय: बना रहता है। संकोचशील स्वभाव के कारण वार-बार हानि उठा बैठती हैं।

आप घोर परिश्रमी हैं एवं जीवन में सहयोग के नाम पर शून्य रहने के कारण गृहस्थी की गाड़ी खींचने के कारण यावत् जीवेत् संघर्षरत रहना पड़ता है। दूसरी ओर व्यय करने में सोचते नहीं उदार जो ठहरे! सार्वजनिक कार्य, धार्मिक व मांगलिक कार्यों के समय दोनों हाथों से पैसा उछालते हैं फलत: प्राय अर्थाभाव की शिकायत बनी रहती है। विशाल हृदयी होने के नाते संकोच अभीष्ट नहीं। स्वयं को आवश्यकता से अधिक प्रदर्शित करते हैं और अप व्ययी हो जाते हैं यह उचित नहीं! स्त्री जातकों पर खूब धन को लुटाते हैं ऐसा क्यों? न तो उधार दें और न ही उधार लें। रहन-सहन, खान-पान, ऐश्वर्य भोग पर भी मनचाहा धन खर्च कर देते हैं।

जीवन में सहयोग की प्रवृत्ति आपका बहुत बड़ा गुण है और इसी गुग के कारण जन समाज के हृदय सम्राट बने रहते हैं। सर्वत्र-सदैव का सर्व कार्य करने को तत्पर रहते हैं। 'ना' शब्द आपके मुँह से नहीं निकलता। आपने अनुभव किया होगा कि आपको अपने जीवन रथ को चलाने के लिए भागीरथ प्रयत्न करना होता है कोई सहयोगी नहीं! मित्र जबरदस्त खुदगर्ज हैं। आप जहाँ शारीरिक श्रम में पीछे रह जाते हैं वहीं मानसिक श्रम में बाजी मार जाते हैं। आपने क्या कुछ सहन नहीं किया, कहाँ-कहाँ निराशा हाथ नहीं लगी, कब-कब अविश्वास के भूले में भूले हैं? संभल जायें तो अभी भी वक्त है।

कुछ अवगुण

(१) आप सर्वाधिक भावुक, चिन्तनशील, नैराश्य, संकोच शील प्रवृत्ति के व्यक्ति हैं, इसे यथा प्रयास छोड़ें अन्यथा स्वयं का अहित कदम-कदम पर संभव है। आपकी मानसिक अस्वथता व खोए-खोयेपन का भी यही कारण है। सोचने की प्रक्रिया में इतने गहरे उतर जाते हैं कि स्वभाव में चिड़चिड़ापन, रूखापन, अतिरेक

व क्रोध का भाव उत्पन्न हो गया है। 'का वर्षा जब कृषि सुखाने' कई बार इतना सोचते हैं कि कार्यविधि ही निकल जाती है।

(२) आप एक श्रेष्ठ कलाकार हैं माना! पर यह ठीक नहीं कि आपकी कला का प्रस्फुटन न हो, आपकी कला अपने तक ही सीमित रह जाय! लोग उसका लाभ न उठा सके वह कला किस काम की। कला के प्रचार व प्रसार की ओर समुचित ध्यान दें। ऐसा करना आपके लिए हितकर होगा।

(३) 'स्पष्ट वक्ता सुखी भवेत्' पर आप किसी बात को स्पष्ट कह नहीं सकते अपितु भीतर ही भीतर कुढ़ते रहते हैं जो अन्ततोगत्वा हीनता की ग्रंथि उत्पन्न कर देता है। अनेक बार यह दबाव विस्फोट का रूप ग्रहण कर अनेक रोगों को जन्म दे देता है। भोग की अर्थात् Sex की प्रवृत्ति को व्यर्थ दबाने के चक्कर में गुप्त रोगों को निमंत्रण दे लेते हैं।

(४) आप कोई कार्य करना चाहते हैं तो क्या पहले उसकी रूपरेखा बना लेना उचित नहीं रहेगा? सुनिश्चित योजना बना कर कार्य करें। भूल कर भी स्थायी योजना में रद्दोबदल न कर उसी को पूर्ण करने में प्राण-प्रण से लगे रहें, देखेंगे सफलता आपके कदम चूमेगी। जब तक एक कार्य पूर्ण न हो जाये दूसरे कार्य में भूल कर भी हाथ न डालें।

(५) अपने आप पर पूर्ण विश्वास कर इच्छा-शक्ति को दृढ़ करें एवं जिस किसी कार्य को आप करना चाहते हैं उसके लिए प्राण-प्रण से जुट जाँय पूरा करके ही छोड़े। बलवान व्यक्ति आपको दबा जाते हैं इससे बचें।

(६) मित्र, मित्र की सीमा तक रहे यही ठीक है। मित्रों में इतने लिप्त न हो जायें कि घर की ओर ध्यान देना ही छोड़ दें फलतः घरेलू वातावरण विषाक्त हो जाय। अपनों की ही नजर से गिर जायें तथा मित्रों में व्यर्थ श्रम-शक्ति व धन खर्च करने की आवश्यकता नहीं। घर के सदस्यों से बाजे वक्त अनबन हो जाती है उस ओर ध्यान दें।

(७) कल्पना की उड़ान इतनी ऊँची न उड़ें कि पांव जमीन पर टिके ही नहीं। ऐसा करना अदूरदर्शिता का परिचायक है।

आप बहुत ऊँची उड़ान उड़ सकते हैं पर जीवन की वास्तविक घटनाओं की कल्पना नहीं कर सकते। कल क्या होगा ? इसका ध्यान नहीं। अपनी सरलता का फायदा दूसरों को न उठाने दें। स्वयं में कुछ कठोरता को स्थान दें, अपने व्यक्तित्व की गरिमा को बराबर बनाए रखें।

(८) ज्यादा सोचना भी ठीक नहीं कारण ऐसा करने पर आप वास्तविकता से दूर हो जाते हैं। प्रगति में शिथिलता आ जाती है। दीर्घ सूत्रता का जितना त्यागन करें उतना ही अच्छा हर कार्य को समय पर आरम्भ करने व समय पर पूर्ण करने का प्रयास करें। जमाने की रफ्तार के साथ साथ आगे बढ़ने का प्रयास करें।

(९) हार-जीत, जय-पराजय, ऊँच-नीच, यश-अपयश हानि लाभ, सफलता-असफलता जीवन में संभव है पर छोटी सी अस-फलता पर निराश हो जाना या आत्महीनता को प्रश्रय देना आपको शोभा नहीं देता। उतार-चढ़ाव जीवन का क्रम है। आप धैर्यपूर्वक अपनी असफलता का मूल्यांकन करें एवं उन दोषों कोदूर करने का प्रयास करें, पूर्ण जोश के साथ पुनः काय आरंभ करें, सफलता निश्चित है।

(१०) घर की लक्ष्मी अर्थात् पत्नी को आदर-सम्मान देना आरम्भ कर दें। बाहर जितने आप समाजिक हैं घर में उतने ही असामाजिक बन जायें यह न्यायोचित्त नहीं कहा जा सकता, व्यर्थ का रोब-दाब या वाग्वीरता दिखाने का प्रयास न करें असफलता पर दुःखी-पीड़ित न हों और न ही घबराएँ। पत्नी को सन्तुष्ट रखने का प्रयास करें।

(११) स्त्रियों में ज्यादा उठना-बैठना, गप्पे मारना, हँसी-मजाक या घनिष्ठता बढ़ाना आपको शोभा नहीं देता यह आपके व्यक्तित्व को धूमिल करता है।

(१२) व्यर्थ दोहरे जीवन को जीने की आदत छोड़ दें अन्यथा भेड़िया आया, भेड़िया आया वाली कहावत आप पर चरितार्थ हो जायेगी और किसी दिन सचमुच का भेड़िया आ जायेगा। कल्पना करें उस समय की जब दोहरे व्यक्तित्व का भंडाफोड़ हो जाये।

(१३) बिना सोचे-समझे हर एक ऐरे-गैरे को आश्वासन दे

देना आपको शोभा नहीं देता और सत्य यह है कि आप कभी भी समय पर इन आश्वासनों को पूरा नहीं कर सकते हैं ऐसे समय कैसी स्थिति होती है, लज्जित होना पड़ता है। बिना बात बड़प्पन न जताएँ और न ही शेखी बघारें। व्यर्थ गप्पें न हाँके।

(१४) रसोई घर का मोह छोड़ दें तो उत्तम है न ही घर को ज्यादा टटोलें। ऐसा करने पर घर में स्त्री का महत्व कम हो जाता है और पत्नी निराशा को प्राप्त कर लेती है। उसका प्रभुत्व गौण हो जाता है। वह नाराज व दुःखी हो जाती हैं।

(१५) शारीरिक श्रम के कार्यों से आपको बचते हुए मानसिक कार्यों की श्रेष्ठता की ओर ध्यान विशेष दिया जाना चाहिए। कृष्ण पक्ष आपके लिए शुक्ल पक्ष से अधिक श्रेष्ठ है, अतः विशेष कार्यों के लिए कृष्ण पक्ष को प्राथमिकता दें।

(१६) व्यर्थ सौंदर्योपासकता का भी त्याग न करें तथा सादेपन पर बल दें।

आपको याद है आपके वास्ते द्रव्य पदार्थ, तेलीय कार्य, समुद्र-यात्रा, मुख्यावास या उच्च स्थान प्राप्ति, पशु कार्य या पशु व्यवसाय, शुगर मिल, अन्न का व्यवसाय, तैराकी, रसाले पदार्थ, फलों का व्यवसाय, दही, दूध, घृत, गामज, जल, कृषि कर्म एवं चीनी के व्यवसाय में मन चाहा लाभ प्राप्त कर सकते हैं। औषधी विक्रेता भ्रमण कार्य, एजेंट, प्रतिनिधित्व, सम्पादन, लेखन कार्य, संगीत, अभिनय, नृत्य, भूमि-प्रबन्ध, मकानों की ठेकेदारी, चिकित्सा, मोती-हार-मणि-माणिक्य, रत्नों का क्रय-विक्रय, पत्थर व भू-गर्भ के कार्य कर यथेष्ठ लाभ उठा सकते हैं।

आपको क्या ज्ञात है कि चंद्र आप पर अपना स्वामित्व रखता है। सोम या चंद्र आपका वार है जिसे अंग्रेजी में Monday कहा जाता है। यह आपका अंक सचमुच ही शुभ अंक है। कर्क आपकी राशि है तथा पुनर्वसु नक्षत्र के अन्तिम चरण, पुण्य व आश्लेषा नक्षत्र अपने हैं वहीं ही. हू. हे. हो. डा. डी. डू. डे. डो नामाक्षर वाले व्यक्ति सच्चे हैं हमदर्द जबकि इ. उ. ए. ओ. वा. वी. वू. वे. वो नामाक्षर वाले व्यक्ति सर्वाधिक प्रिय हैं इसी प्रकार कृत्तिका के अन्तिम ३ चरण, रोहिणी व मृगशिरा के प्रथम २ चरणों पर

प्रभुत्व रखते हैं परन्तु वृश्चिक राशि वाले व्यक्ति या विशाखा के अन्तिम चरण, अनुराधा व ज्येष्ठा नक्षत्र में जन्मे व्यक्ति से या तो. ना. नी. नू. ने. नो. या. यी. यू अक्षर से उत्पन्न व्यक्ति से स्नेहशील व्यवहार आपका हो नहीं सकता, इनसे सदैव विरोधाभास ही रहेगा ! वैश्य जाति के व्यक्ति आपके प्रिय हैं तथा क्षत्रिय वर्ग से विरोधपूर्ण व्यवहार रखते हैं, ध्यान दें आपकी जाति स्वयं वैश्य है ।

श्वेत या धवल रंग आपको प्रिय है । क्या ही उत्तम हो यदि फरनीचर, पर्दे, बेडशीट, वस्त्र, जालियाँ, दैनिक उपयोग की वस्तुएँ, पुस्तकें, वाहन, मोजे, घड़ी का पट्टा, पूजन सामग्री चाँदी की रखें, श्रेष्ठ रहेगा । कमरे की दीवारें भूल कर भी गौरवर्णीय लाल पदार्थ आप पसन्द नही पाते अपितु घृणा ही करते हैं । स्त्री जातक का चहेता आपका अंक पुरुष वर्ग से दूर-दूर रहता है या कहें परस्पर मनोमालिन्य रहता है । युवा वर्ग के चहेते पर बाल्यावस्था वाले वर्ग से खिचें-खिचे रहते हैं ।

२।११।२०।२९ तारीखें जीवन में सर्वोत्तम फल देती हैं वहीं ४।१३।२२।३१ तारीखें मध्यम ३।१२।२१।३० तारीख ८।१७।२६ मध्यम तथा ९।१८।२७ तारीखें निकृष्ट रहती । जो हानिकारक, अपमानजनक, विरोधी रहता है । ६।१५।२४ तारीखें सर्वोत्तम, उत्तमोत्तम फल देने में समर्थ हैं । १।१०।१९।२८ तथा ५।१४।२३ तारीखें सामान्य फल देती हैं एवं आयु के ६।१५।२४।३३।४२।५१। ६०।६९वें वर्ष सर्वोत्कृष्ट ९।१८।२७।३६।४५।५४।६३वें वर्ष निम्नातिनिम्न तथा वर्ष १।१०।१९।२८ तथा ५।१४।२३।३२। ४१।५०।५९।६८ वें वर्ष अच्छे ७।१६।२५।३४।४३।५२।६१।७०वें वर्ष लाभप्रद एवं २।११।२०।२९।३८।४७।५६।६५वें वर्ष ३।१२। २१।३०।३९।४८।५७।६६वें वर्ष ४।१३।२३।३१।४०।४९।५८।६७वें वर्ष ८।१७।२६। ३५।४४।५३।६२।७१वें वर्ष सर्वथा सामान्य रहेंगे ।

किसी भी माह में २।११।२०।२९वीं तारीखें सर्वोत्कृष्ट रहेंगी । किसी नए कार्य का शुभारम्भ करने, भेंट करना, यात्रार्थ घर त्यागने, किसी प्रकार के निर्णय लेने के लिए इन्हीं तारीखों को प्राथमिकता दी जानी चाहिए । वर्ष में २१ जून से २८ जुलाई का समय सर्वाधिक अनुकूल होने के कारण यात्रा, मुहूर्त्त, शुभ कार्य के

आरम्भ, समस्या निवारणार्थ प्रयास करना इस समय उत्तम रहता है।

कृतिका, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा नक्षत्र पर जब भी चंद्रमा आयेगा आपको सावधान रहना चाहिए कारण वह समय व्यर्थ चिन्ता, मानसिक परेशानी का कष्टप्रद समय रहता है यों जनवरी, फरवरी व दिसम्बर में कहीं अधिक सावधान रहें अंक ६ आपका सात्विक सम्वन्ध ५ से राजस व अंक ८ से तामसी व्यवहार निरन्तर रहता है।

सोम-रवि व शुक्रवार आपको प्रिय है पूर्णिमा व प्रदोष का व्रत करने वाले पर अंक की कृपा-दृष्टि रहती है। सफेद, प्याजीरंग, काफूरी, हरा तथा अंगूरी विशेष प्रिय काला, लाल व गहरे रंग से प्रति कूलता है, त्याज्य है। हरारंग मानसिक शक्ति बढ़ाने में सहायक, सफेद रंग कांति वर्धक, पराक्रम वर्धक, अंगूरी रंग स्नाविक उन्नति का कारक, लक्ष्मी प्राप्ति में सहायक है फलतः शुभ रंगों के वस्त्र धारण करें फरनीचर, कमरे की दीवारें, रंग, पर्दे रखें।

मोती जिसे Prol या मुक्तक, फारसी में मोतिया अंक दो का शुभ रत्न है। बसेर की खाडी का मोती धारण करना उत्तमोत्तम है। वायव्य दिशा पर प्रभुत्व, स्वभाव में चंचलता सत्वगुण का प्रभुत्व लिए जल तत्व युक्त, वर्षा ऋतु का प्रतिनिधित्व करता है। नवीन वस्त्र पहनें जो साफ धुले हों चाँदी आपका धातु, सरीसृप जन्तु पर प्रभुत्व बना रहता है ज्योहि समय कमजोर आता है आपकी मानसिक परेशानियाँ बढ़ जाती है। भावुक व संवेदन शील होने के कारण छोटी-मोटी हुर्घटना, हृदय सम्बन्धी बीमारियाँ, स्नायविक निर्बलता, अपच, उदररोग, कोष्ठ बद्धता, आँतरोग, गैसट्रबल जैसे रोग हो जाते है।

जलाशय तट, आर्द्र स्थान, वे नगर जो समुद्र तट पर नदियों के किनारे हों विशेष लाभप्रद रहता है। क्षणिक असर आप पर किसी भी बात का होता है। ज्योतिष का अध्ययन करें आप लाभान्वित होंगे तथा यथेष्ठ शुभ फल पायेंगे। माता पर एवं मन-मस्तिष्क पर, रक्त तथा गले से हृदय तक पर आपके अंक की प्रभु-

खता रहती है। सूर्य और बुध आपके मित्र मंगल, गुरु, शुक्र, शनि समान भाव रखते हैं।

यदि आपका २५वां वर्ष है तो भाग्योदय के लिए तैयार रहें कभी भी भाग्योदय हो सकता है। आपके प्रधान देवता भगवान शंकर हैं अतः भगवान शंकर का इष्ट रखें नित्य शिव दर्शन करें, शिव लिंग पर दूध-मिश्रित जल चढ़ाएँ एव रूद्राभिषेक या शिव-महिम्न का पाठ करें।

विपत्ति काल में मोती, दूध, दही, चांदी, शहद, आदि का दान करें तथा चांदी की अंगूठी पर निम्न यंत्र उत्कीर्ण करवा कर दाहिने हाथ की कनिष्ठा में धारण करें एवं निम्न मंत्र का अधिकाधिक जाप करें—

यंत्र—

७	२	९
८	६	४
३	१०	५

मंत्र—ॐ इमंदेवा ऽ असपत्न घुं सुवहवम्महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्योन्द्रियाय। इमम मुव्यै पुत्रममुल्यै पुत्र मस्यौव्विशएषवोमी राजा सोमोस्माकं ब्राह्मणाना घुं राजा।

किसी भी शुभ कार्य हेतु, यत्रा प्रसंग या विशिष्ट व्यक्ति से संपर्क करने के लिए सूर्योदय से १½ घण्टे की अवधि सूर्योदय उपरान्त ३ से ४½ घण्टे का समय तथा सूर्योस्त से ३ घण्टे पूर्व का समय सर्वोत्तम रहता है।

आइये ! अब हम आपके अन्य दिनों के बारे में भी स्पष्टीकरण करें। ज्ञात है आपके अंक के साथ उच्च स्तरीय सम्बन्ध अंक ६ का रहता है जिस पर शुक्र का वर्चस्व रहता है अर्थात् ६।१५।२४ तारीखें प्रतिमाह सर्वोत्तम फल प्रदान करेंगी। यदि इन्हीं तारीखों को शुक्रवार हो तो क्या कहना ! आश्चर्य जनक फल प्राप्त होंगे। असंभव का भी संभव कर दिखा सकते हैं। यह अंक शुभता का प्रतीक

है इस नाते वृष व तुला राशि वाले जातक आपका भरपूर सहयोग इन दिनों प्रदान करेंगे। वे व्यक्ति जिनका जन्म कृतिका के अंतिम तीन चरणों में रोहिणी या मृगशिरा के प्रथम दो चरणों में है अथवा जिनके नामाक्षर इ. उ. ए. ओ. वा. वी. वू. वे. वो. या रा. री. रु. रे. रो. ता. ती. तू. ते नामाक्षर या जिस दिन समय चित्रा का अंतिम २ चरण, स्वाति एवं विशाखा के प्रथम ३ चरण पर चन्द्र गतिमान होंगे आपके भाग्योदय का समय होगा। बिना प्रयास ही कार्य पूर्ण होते चले जायेंगे। किसी भी पञ्चांग में देख कर ज्ञात कर सकते हैं कि इन नक्षत्रों पर कब चन्द्रमा आता है।

आप किसी से मिलना चाहते है, संपर्क साधना चाहते हैं, धन प्राप्ति की आशा करते हैं और ६।१५।२४ तारीख को वह इच्छित व्यक्ति ब्राह्मण वर्ग का है तो सफलता में शंका करना स्वयं को ठगना होगा, स्वयं के प्रति अविश्वास ही करना होगा। बहुत से कहीं अधिक उत्तम हो यदि इन दिनों रंग-रंगीले, चित्र कबरे, बूटे-दार कपड़े पहनें। यदि वह जातक जिनसे आप अपना उद्देश्य पूर्ण करना चाहते हैं स्त्री जातक हो तो सोने में सुगन्ध का काम होगा, इस पर यदि युवा या प्रोढ़ावस्था आपकी या मिलने वाले व्यक्ति की है तो सफलता अवश्यंभावी है।

आग्नेय कोण दिशा में यात्रा का अवसर मिले तो भूल कर भी मौका न चूकें। स्वभाव में धीमापन रहेगा तथा रजो गुण की प्रमुखता रहेगी ! जल व बिहार सम्बन्धी कार्य हो एवं वसन्त ऋतु हो तो क्या कहना ? वर्ष भर में जिन कार्यों की पूर्ति से आप मह-रूम रह गए है अब पूर्ण करने का समय आ गया है चूकें नहीं। वस्त्र चित्त-कबरे पहनें पर वे मोटे हों तो श्रेष्ठ है। बेड शीट आज ही बदले वे खद्दर के या बूटेदार, गहरे रंग के हों तो लाभ देगा इसी प्रकार तकिये के गिलाफ, पर्दे, घड़ी का पट्टा, पेन, पेंसिल भी बदलें !

यदि आपके पास स्वर्ण आभूषण हैं तो उन्हें पहनें। कान, नाक, गले, हाथ, पांव, अंगूठी रूप में स्वर्ण के गहने अवश्य पहनें। यदि हीरा आपके पास है तो अवश्य पहनें उत्तम हो स्त्री जातक नथ, नाक के गहने या कान के गहने रूप में व पुरुष जातक अंगूठी रूप

में हीरा धरण करें। मनुष्य जाति अर्थात् द्विपद (पक्षी भी) से शुभता रहेगी। शयनागार, कौतुगागार, भोग, ऐश्वर्य, श्रृंगार-प्रसाधन, सज्जागृह उपयुक्त है। यदि आप भोग करना चाहते हैं तो आज का दिन उपयुक्त है पुत्रोत्पत्ति हेतु किया प्रयास सफलता देगा। संगीत व वाद्य की कक्षा प्रारम्भ करें या इस विषयक अध्ययन या अभ्यास करना चाहते हैं तो उत्तम होगा आज ही ऐसा करें। विद्वद घर ग्राम्य जीवन आज की शुभता का प्रतीक है। किसी बुद्धि जीवि से आप सम्पर्क साधें तथा अपनी समस्या उनके समक्ष रखें सलाह लें, उचित सलाह प्राप्त होगी।

पत्नी पक्ष, कामशक्ति, वीर्य, ऊर्जा, तथा शिश्न से वृषण, गुप्तांग सम्बन्धी कार्य वास्ते ये ३ दिन उपयुक्त हैं। आप्रेशन करने, दवा चालू करने, भोग करने के लिए श्रेष्ठ है। यदि आपके जीवन का २८वाँ वर्ष गतिमान है तो थोड़ा सा भी प्रयास करें भाग्योदय कारी फल प्राप्त होंगे।

यदि किसी प्रकार की समस्या में उलझे हैं तो आपको हीरा, स्वर्ण, रजत, चावल, मिश्री, दूध, दही, मक्कखन, श्वेत वस्त्र, अश्व, चंदन, घृत, सुगन्धित द्रव्य, श्रृंगार-प्रसाधन की चीजें, वाहन आदि यथा शक्ति दान दें।

प्रात: उठ स्नानादि से निवृत्त पूर्वाभिमुख अथवा पश्चिमाभि-मुख बैठ निम्न यंत्र को भोजपत्र पर अथवा किसी सफेद कागज पर या स्लेट पर १०८ बार लिखें एवं निम्न मंत्र का जाप साथ ही साथ करते रहें। भोपत्र पर यदि यंत्र लिखे हैं तो उन्हें अब जल में प्रवाहित कर दें पुन: अष्टगंध से यन्त्र लिख धूप दीप कर सम्पूर्ण पूजा कर पर्स में रखें हर समस्या का निराकरण पायेंगे।

यंत्र—

११	६	१३
१२	१०	८
७	१४	९

मंत्र—ॐ अन्नात् परिस्त्रुतो रसम्ह्रणा व्यपिवत् क्षत्रम्पयः

सोम म्प्रजापतिः ऋतेन सत्य मिन्द्रियं व्विपान ॐ शुक्र मन्धस इन्द्रु स्योन्द्रिय मिदम्पयोभृतम्मधु ॥

६।१५।२४ तारीख को किसी शुभ कार्य विशेष के लिए सूर्योदय उपरान्त १$\frac{१}{४}$ घण्टे से ४$\frac{१}{२}$ घण्टे के मध्य का समय ६ से ७$\frac{१}{२}$ घण्टे के बीच का समय सूर्यास्त के ३ घण्टे बाद १$\frac{१}{२}$ घण्टे का समय उत्तम रहेगा !

आपको याद होगा अंक १ व ५ आपके अच्छे मित्र हैं तारीख १।१०।१९।२८ और ५।१४।२३ तारीखें मित्र वत् व्यवहार करेंगी। सब मिला कर ये तारीखें हित कर ही रहेगी तथा सामान्य से अधिक शुभ फल प्रदान करेंगी। आइये! इन तारीखों को देख लें कि आपको क्या-क्या करना है—

शुभ तारीखें—१।१०।१९।२८
५।१४ और २३

शुभवार—रविवार और बुधवार

शुभ ग्रह—सूर्य और बुध

शुभ नक्षत्र—मघा, पूर्वाफाल्गुनी और उत्तराफाल्गुनी का प्रथम चरण मृगशिरा के अंतिम दो चरण, आर्द्रा व पुर्नवसु के ३ चरण तथा उत्तराफाल्गुनी के अंतिम ३ चरण, हस्त और चित्रा के प्रथम **दो चरण।**

शुभ नामाक्षर—मा-मी-मू-मे-म-मो-टा-टी-टू-टे और का-की-कू-घ-ङ-छ-के-को-हा तथा हो-पा-पी-पू-ष-व-ण-ठ-पे-पो। इन नामाक्षर वाले लोगों से उक्त दिनों में संपर्क करना उत्तम रहेगा।

शुभ जाति—तारीख १।१०।१९।२८ को क्षत्रिय जाति के जातकों के साथ तथा ५।१४।२३ तारीख को शुद्र वर्ग के जातकों के साथ सम्पर्क साधने पर सफलता निश्चित है तथा कार्य की पूर्ति होती है।

सुभ रंग—मूलांक एक वाली तिथियों को कालिमा युक्त लाल वस्त्र धारण करें एवं अपने प्रयोग में आने वाली वस्तुएँ यथा प्रयास लाल हों, टमाटर, मसूर, गुड़ भोजन में लें तथा मूलांक ५ वाले दिनों में कालिमा युक्त हरे वस्त्र धारण करें विशेष कर हरे वस्त्र पहनना शुभ रहता है। भोजन में भी हरी सब्जी को प्रमुखता दें।

शुभ लिंग व अवस्था—१।१०।१६।२८ तरीखों को पुरुष वर्ग तथा वृद्ध व्यक्तियों से अपना सम्पर्क साधें वे अधिक कारगर साबित होंगे तथा अपनी समस्या समाधान के लिए इन्हीं से सलाह लें, इनके साथ यात्रा करें तथा मूलांक ५ वाले दिनों में आपको चाहिए कि स्त्री जातक तथा युवा वर्ग (स्त्री) से संपर्क करना उत्तम रहेगा। ये आपको भली सलाह देंगी एवं भाग्य वृद्धि में सहायक होंगे।

भाव-शुभता—५।१४।२३ तारीख को राजसी कार्य करें शुभता रहेगी। राजकीय कार्य यदि कोई रुके हैं या प्रशासकीय या राजनीतिक कार्य अड़े हैं तो उन्हें सम्पन्न करने के लिए ये तारीखें हितवर्धक होंगी।

शुभ दिशा—आप किसी से मिलना चाहते हैं, यात्रा करना चाहते हैं, किसी से सम्पर्क साधना चाहते हैं तो १।१०।१६।२८ तारीख को पूर्व दिशा में तथा ५।१४।२३ तारीख को उत्तर दिशा उपयुक्त अनुकूल एवं सफलता सूचक रहेंगी।

स्वभाव व गुण—५।१४।२३ तारीख को रजोगुणी कार्य करें स्वभाव में स्थिरता रहेगी जबकि १।१०।१६।२८ तारीख को सत्व गुण तथा सात्विक भाव की प्रमुखता रहेगी तथा स्वभाव में स्थिरता बनी रहेगी।

शुभ ऋतु—यदि ग्रीष्म ऋतु में ५।१४।२३ तारीख को किसी माह में रविवार हो उस दिन नए कार्य का शुभारंभ करें या विशिष्ट कार्य की ओर अग्रसर हों तो कहीं उत्तम होगा इसी प्रकार १।१०।१६।२८ तारीख को शरद ऋतु में कार्य का श्री गणेश करें तो उत्तम होगा।

शुभ तत्व—१।१०।१६।२८ तारीख को अग्नि तत्वी कार्य एवं ५।१४।२३ तारीख को पृथ्वी तत्व की प्रधानता रहेगी। भूमि-भवन खेत-खलिहान सम्बन्धी कार्य, क्रय-विक्रय सम्बन्धी मामलों में मूलांक ५ के अंक उत्तमता देंगे।

वस्त्र—मूलांक १ को मोटे वस्त्र पहनना एवं ५ को अर्थात् ५।१४ २३ ताः पुराने वस्त्र पहने जाने चाहिए।

द्रव्य और रत्न—तारीख १।१०।१६।२८ तारीख को ताम्र तथा माणिक्य श्रेष्ठ रहेगा। ताम्र अंगूठी या माणिक्य युक्त अंगूठी

है तो कम से कम इन दिनों अवश्य धारण करें इसी प्रकार ५।१४।२३ को कांस्य, सीप, पन्ना हो तो सदुपयोग करें। पन्ने की अँगूठी पहने कांस्य बर्तन अपने उपयोग में लावें एवं सीप पदार्थ अपयोग में लाएँ।

पशु पक्षी—मूलांक १ वाले दिनों में पक्षी सम्बन्धी कार्य व ५ सम्बन्वित कार्य करें। क्रय-विक्रय या शिकार या अन्य कार्य।

कार्यस्थल—१।१०।१९।२८ तारीख को देव स्थान सम्बन्धी कार्य, धार्मिक कार्य, देव यात्रा, तीर्थाटन, ईश्वर दर्शन, भक्ति कार्य का आरम्भ करें एवं ५।१४।२३ को भोग कार्य, गृह सज्जा, क्रीड़ागार, कौतुकागार एवं भोग सम्बन्धी क्रिया कलाप करें, श्रेष्ठ रहेगा।

अध्ययन—मूलांक १ के दिनों यदि राजनीति का अध्ययन प्रारम्भ करें, राजनीतिक कार्यों में सलाह लें या दें, राजनीतिक प्रभावी लोगों से सम्पर्क करना तथा ५।१४।२३ को गणित, वाणिज्य, ज्योतिष का अध्ययन आरम्भ करें तो उत्तम होगा।

कार्यस्थल/भ्रमण—मूलांक एक वाले दिनों में वन भ्रमण, पर्वत स्थल पर भ्रमण करना उत्तम रहता है तथा ५।१४।२३ को ग्राम्य वातावरण का अवलोकन करना, विद्वद समाज में उठना बैठना उत्तमता का परिचायक है।

सुखानुभूति—मूलांक १ को पिता व पितृ पक्ष से, आत्मानुभूति सुख अस्थि सम्बन्धी सुख रहता है। सिर से मुख पर बल रहता है ५।१४।२३ को बहिन, वाणी, त्वचा व पेठ से पीठ भाग में अनुकूलता रहती है। त्वचा रोग है तो आज ही इलाज प्रारम्भ करवा दें, सफलता रहेगी। यदि आज तक इलाज नहीं लग रहा था तो अब सम्भव है।

भाग्योदय काल—२४।२५ वां वर्ष चल रहा है तो भाग्योदय वास्ते तैयार रहें उत्तम हो १।१०।१९।२८ तारीख हो, रविवार हो, जनवरी या अक्टूबर का महिना हो तो श्रेष्ठ है। इसी प्रकार यदि ३५।३६ वां वर्ष हो तो मार्च, के महिने में प्रयास करें सफल रहेंगे।

दान-यंत्र-मंत्र—विपत्ति काल, दशा प्रतिकूल होने पर या

अन्य प्रकार से कष्ट आने पर १।१०।१९।२८ तारीख को माणिक्य, स्वर्ण, ताम्र, गुड़, मसूर, घी, लाल वस्त्र, रक्त पुष्प, कनेर पुष्प, रक्त चन्दन, धेनु का दान तथा ५।१४।२३ तारीख को पन्ना, स्वर्ण, मूंगा, कांस्य पात्र, घृत, शक्कर, कर्पूर हरे वस्त्र, हाथी दाँत, पंच रत्न का दान करें।

१।१०।१९।२८ को निम्न यंत्र को पृथ्वी पर, स्लेट पर और उत्तम हो भोजपत्र पर १०८ बार लिख कर जल में प्रवाहित करें एवं यंत्र लेखन के साथ साथ मन्त्र जाप भी करें।

६	१	८
७	५	३
२	९	४

ॐ आकृष्णेन रजना वर्तमानों निवेशयन्न मृत म्मर्त्यञ्च हिर०ययेन सविता रथेन देवो याति भुवनानि पश्यन्।

इसी प्रकार ५।१४।२३ तारीख को निम्न मन्त्र का जाप करते हुए यन्त्र को भोज पत्र पर कमल (अनार) से अष्ट गन्ध से १०८ बार लिख कर जल में प्रवाहित करें, श्रेष्ठ रहेगा—

९	४	११
१०	८	६
५	१२	७

ॐ उद्बुद्यस्वाग्ने प्रति जागृति त्वमिष्टा पूर्तेस घुं सृजे थामयञ्च। अस्मिन्त्सधस्थे ऽ ह्युत्तर स्मिन्विश्वेदेवायजमानश्च सीदत्त॥

आपको ध्यान होगा अंक ९ आपसे पूरी शत्रुता का निर्वाह करता है अतः ताः ९।१८।२७ को शुभ कर्म नहीं करें तो अच्छा है।

आपको भली प्रकार मालूम होना चाहिए कि अंक ९ आपका शत्रु है। इस प्रकार ९।१८ और २७ तारीख सर्वथा निष्फल,

व्यर्थ, पराजय सूचक, हानिकारक रहेंगी। भूल कर भी यात्रा न करें, नए सम्बन्ध न जोड़े, व्यापारिक समझौते नहीं करें, नये प्लानिंग को क्रियान्वित की ओर ले जाना सारासर अन्याय होगा।

अंक ९ का स्वामी मंगलवार है वह भी कुफल दायी व प्रतिकूल रहेगा। यदि उपरोक्त तारीख को दुर्भाग्य से मंगलवार आ जाये तो सर्वस्य हानि का संयोग घटित हो रहा है आवश्यकता से अधिक सावधान रहें। मित्र व कुटुम्बी जन धोखा देने के लिए, अपमानित करने के वास्ते कमर कसे हैं स्वयं पत्नी कलह का वातावरण बनाये ऐसी स्थिति है। चोट लगा सकती है, साझेदार आर्थिक चपत मार सकते हैं अतः जरा सी भी लापरवाही पतन का कारण बन सकती है।

यों भी मेष व वृश्चिक राशि वाले व्यक्ति प्रधानतः इन दिनों धोखा देंगे या लड़ाई करेंगे। आपको अपमानित करने का प्रयास करेंगे। अश्विनी, भरणी, कृतिका के प्रथम चरण में उत्पन्न व्यक्ति तथा विशाखा के अन्तिम चरण, अनुराधा १ ज्येष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न व्यक्ति या वे जातक जिनके नामाक्षर चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ और तो, ना, नी, नू, ने, नो, या यी, यू हैं वे आपके पतन का कारण बनेंगे।

वे व्यक्ति जिनका वर्ण क्षत्रिय है, उनसे आप दूर रहे किसी प्रकार का सम्बन्ध न रखें। भूल कर भी आप लाल रंग के वस्त्र धारण न करें न हो अपने उपयोग में रहन-सहन में, भोजन में लाल वस्तु लें। पर्दे इत्यादि हैं भी तो धुलने दे दें और उनके स्थान पर दूसरे पर्दे, बेड शीट, तकिये के गिलाफ बदल दें यह रंग दुर्भाग्य का सूचक हो जायेगा। यों भी इन तीन दिनों पुरुष वर्ग से आपको हानि ही है, यद्यपि महिला वर्ग से भी लाभ की आशा तो नहीं कर सकते परन्तु इतना निश्चित है वह पुरुष वर्ग के समान कष्ट कर नहीं होगा। बाल्यावस्था के जातकों से सर्वथा दूर रहें, ऐसा न हो कारण अकारण आप पर उनके कारण विपत्ति आ जाये या अपमानित होना पड़े।

किसी भी परिस्थिति में दक्षिण दिशा में यात्रा न करें, किसी शुभ कार्य के लिए, किसी से सम्पर्क करने या व्यावसायिक कार्य से

पत्र सम्पर्क भी दक्षिण में है तो नहीं करें स्वभाव में झुंझलाहट, तीव्रता, उच्चाटन, संत्राश व कुंठा निरन्तर बनी रहेगी। तात्पर्य यह कि तमोगुण प्रधानता रहने के कारण अग्नि तत्व की प्रमुखता रहेगी। ग्रीष्म ऋतु और अधिक कष्टप्रद फल देगी। पुराने वस्त्र पहनें तो अच्छा है कम से कम नए वस्त्र धारण न करें। यदि आपने अंगूठी के रूप में, गहने के रूप में स्वर्ण धारण कर रखा है तो कृपया उतार दें। प्रवाल अर्थात् मूंगा यदि अंगूठी रूप में पहने हैं तो उसे भी उतार कर रख दें इन ३ दिनों के वास्ते। चौपाए जानवरों से आपको लाभ है नहीं किसी प्रकार की सौदेबाजी, लेन-देन, क्रय-विक्रय न करें।

वे स्थान या वस्तुएँ जो अग्नि से सीधा सम्पर्क रखती हैं न जायें। विद्युत कार्य अपने हाथ से न करें करेंट आना स्वाभाविक है। पेट्रोल या अन्य ज्वलनशील पदार्थ, लकड़ी कोयला आदि से बचें। वाहन चलाने में पूर्ण सावधानी रखें। अग्नि से बचें। यदि आप महिला हैं तो स्टोव जलाने में, खाना पकाने में भली प्रकार सावधानी रखें यही ठीक है अन्यथा अहित हो सकता है। ये ३ दिन पूरे ही अहित कर पतन कारी, विनाशक है। वेदाभ्यास या धार्मिक कृत्य दैविक कृत्य, माँगलिक कार्य घर में न होने दें। युद्ध का अभ्यास न करें। वीर साहित्य या जासूसी, लड़ाई या युद्ध सम्बन्धी साहित्य का अध्ययन नहीं करें। यह तीव्रता व क्रोध उत्पन्न करेगा। वनीय, पर्वतीय स्थानों का भ्रमण न करें।

बटिन, शक्ति, मज्जा का अहित एवं पेट रोग से पीड़ित रहेंगे इस ओर विषय ध्यान दें।

आपको यह भी याद होगा कि ३।४।७।८ अंक आपके साथ सामान्य भाव रखते हैं अतः निम्न प्रकार इन तिथियों का प्रयोग करें शुभ फल दें या न दें परन्तु कुफल प्राप्त आपको अवश्य ही नहीं होंगे। सामान्यतः ये दिन अनुकूल हो रहेंगे। अहित से बचाएँगे।

सामान्य तारीखें—३।१२।२१।३०, ४।१३।२२।३१, ७।१६।२५ और ८।१७।२६।

सामान्य वार—३।१२।२१।३० तारीख को गुरु अर्थात् बृहस-

पतिवार ४।१३।२२।३१ को सोमवार, ७।१६।२५ को सोम तथा ८।१७।२६ तारीख को शनिवार। इन तारीखों के अतिरिक्त भी उक्त गुरु सोम व शनिवार सामान्य फल ही प्रदान करेंगे।

नैसर्गिक फल वार—गुरु शुभ दायक, सोम शुभ व शनि अशुभ।

सामान्य राशि—धनु व मीन, कर्क, मकर व कुंभ।

सामान्य नक्षत्र—३।१२।२१।३० तारीख को यदि मूल, पूर्वाषाढा व उत्तराषाढा का प्रथम चरण, पूर्वाभाद्रपद का अंतिम चरण उत्तराभाद्रपद एवं रेवती नक्षत्र हो, सामान्य फल देगी। ७।१६।२५ तारीख को पुनर्वसु का अंतिम चरण, पुण्य व आश्लेषा तथा ४।१३।२२।३१ को भी पुनर्वसु का अंतिम चरण, पुण्य व आश्लेषा तथा ८।१७।२६ को उत्तराषाढा के अंतिम तीन चरण, श्रवण, धनिष्ठा व पूर्वाभाद्पद के दो प्रथम चरण सामान्य फल देंगे। यों भी स्वतः ये नक्षत्र भी सामान्य ही रहेंगे या इन नक्षत्रों में उत्पन्न व्यक्ति सामान्य रहेंगे।

जाति—३।१२।२१।३० को ब्राह्मण वर्ग से ४।१३।२२।३१ को वैश्य, ७।१६।२५ को भी वैश्य जाति तथा ८।१७।२६ को अन्त्यज वर्णशंकर या विदेशीय लोगों से सम्पर्क करने पर हानि नहीं तो लाभ अवश्य नहीं होगा। स्थिति यथावत्त बनी रहेगी। स्वयं आगे आकर किसी प्रकार का खतरा नहीं उठाना चाहिए।

रंग—३। १२।२१।३० तारीख को संभव हो सके पीले वस्त्र पहने तथा भोजन में भी पीली वस्तु का उपयोग करें यथा संभव अपने उपयोग में आने वाली वस्तु पीली हो तो श्रेष्ठ है इसी प्रकार ४।१३।२२।३१ तथा ७।१६।२५ तारीख को आप सफेद व ८।१७। २६ को हरे या काले वस्तु का प्रयोग करे। गहरे व कालिमा लिए वस्त्र धारण करें। तेल, तिलहन व तली हुई वस्तु का उपयोग करें।

जातिदिशा व अवस्था—

३।१२।२१।३० को वृद्धावस्था के पुरुष आपको सहायक होंगे। उनके द्वारा दी गई सलाह आपके वास्ते हितकर होगी। इसी प्रकार ४।१३।२२।२१ व ७।१६।२५ को स्त्री जातक व युवा से शुभत्व प्राप्त करेंगे। ये आपके अच्छे सहायक व हितैषी रहेंगे। ८।१७।२६ तारीख को अति वृद्ध पुरुष वर्ग, साधु-संन्यासी, मठाधीश, महन्त

उपयुक्त सलाह देंगे ।

दिशा—३।१२।२१।३० को ईशान कोण

४।१३।२२।३१ को वायव्य कोण

७।२६।२५ को ,, ,,

८।१७।२६ को पश्चिम दिया शुमत्व कारक है ।

स्वभाव-गुण—३।१२।२१।३० को सत्व गुण की प्रधानता व स्वभाव में मृदुता रहेगी ।

४।१३।२२।३१ को स्वभाव में चंचलता व सत्व गुण अपनी प्रधानता रखेगा ।

७।१६।२५ को सत्व गुण प्रधान चंचल स्वभाव पायेंगे तथा ८।१७।२६ तारीख को तमोगुण प्रधान स्वभाव में तीक्ष्णता, तीखापन, क्रोधातिरेक ग्रसित रहेंगे ।

तत्व-ऋतु—३।१२।२१।३० तारीख को आकाश तत्व की प्रवलता और वह भी हेमन्त ऋतु में और प्रवल रहेगी ।

४ व ७ मूलांक वाली तारीखों को जल तत्व की प्रधानता व वर्षा ऋतु शुभ कर रहेगी ।

८।१७।२६ तारीख को वायु तत्व की व शिशिर ऋतु की प्रधानता शुभ कर होगी ।

वस्त्र—३।१२।२१।३० को सामान्य ४।१३।२२।३१ व ७।१६।१५ को नवीन या धुले वस्त्र धारण करें तथा ८।१७।२६ तारीख को मजबूत मोटे वस्त्र धारण करें ।

द्रव्य-रत्न—३।१२।२१।३० को चांदी, पुखराज उपयुक्त है । ४।२२।१३।३१ को एवं ७।१६।२५ को चांदी व मोती तथा ८।१७।१६ तारीख को नीलम, लोहा, घोड़े को नाल, पंचद्रव्य, सपृलोह उपयुक्त है । हो सके तो इन दिनों ऐसा ही रत्न या धातु पहने रहें ।

पशु-पक्षी—३।१२।२१।३० को मनुष्य व पक्षी वर्ग ।

४।१३।२२।३१] को रेंगने वाले जीव वर्ग
७।१६।२५]

८।२७।२६ को चौपाए जानवर शुभ कर रहेंगे

क्रीड़ा स्थल-काल समय—

३।१२।२१।३० तारीख को भण्डार गृह एवं मास तुल्य शुभत्व

आव रहेगा।

४।१३।२२।३१ को एवं ७।१६।२५ को जलाशय तट पर प्रभाव अल्प समय रहेगा।

८।१७।२६ को कूडाघर स्थान पर पक्ष या १५ दिन तक एक समान अवसरानुकूलता पायेंगे।

अध्ययन—३।१२।२१।३० को वेद व व्याकरण का अध्ययन ४।१३।२२।३१ तथा ७।१६।२५ तारीख को ज्यो० गणित, व्याकरण, वाणिज्य का अध्ययन करना उपयोगी है। ८।१७।२६ को कानून व विज्ञान का अध्ययन करना सर्वथा उपयुक्त है।

कारक स्थल—३।१२।२१।३० तारीख को ग्राम एवं विद्वद् समाज में जाकर कार्य करना या मिलना ४।१३।२२।३१ व ७।१६। २५ को जलाशय स्थल तथा ८।१७।२६ तारीख को पर्वतीय स्थान व वनभाग सर्वथा अनुकूलता देगा।

सुखानु-भूति—

३।१२।२१।३० तारीख को संतान पक्ष से, सर्वसुख, ज्ञान से चर्बी, कमर से जांघ तक का भाग सुख कर रहेगा एवं ४।१३।२२ ३१ व ७।१६।२५ को मातृ पक्ष, मानसिक सुख रक्त, गले से हृदय तक का भाग व ८।१७।२६ को नौकर चाकर, दुख, स्नायु मण्डल प्रभावी रहेगा!

भाग्योदय—यदि भाग्योदय का काल है अर्थात् २१ वां वर्ष गतिमान है तो ३।१२।२१।३० को किया प्रयास ४।१३।२-।३१ को यदि २५ वां, वर्ष है तो किया गया प्रयास ७।१६।२५ को भी तथा ३६ से ४२ वर्ष के मध्य का समय है तो ८।१७।२६ तारीख उपयुक्त रहेगी।

यन्त्र-मंत्र-दान—

दशा की प्रतिकूलता होने, अस्वस्थ होने या द्रन्यविपति होने पर निम्न प्रकार से प्रयास करें—

३।१२।२१।३० तारीख को पुखराज, केला, नारंगी, नीबू चने की दाल, पीतवस्त्र, पीताम्बर, पुस्तक, स्वर्ण, कांस्य पात्र, पीत पुष्प, शक्कर, घृत, हल्दी, बेसन का दान करें तथा निम्न यंत्र १०८ बार भोजपत्र पर अनार कलम व अष्टगंध की श्याई से

लिखें व जल में प्रवाहित कर दें तथा यंत्र लेखन के साथ निम्न मंत्र जाप भी करते रहें।

१०	५	१२
११	९	७
६	१३	८

ॐ बृहस्पते ऽ अतियदर्य्यो ऽ अर्ह द्यु मद्विभाति क्रतु मज्जनेषु ! यद्दी दयच्छवस ऽ ऋत प्रजात तदस्मा सुद्विणन्धे हि चित्रम् !

४।१३।२२।३१ तथा ७।१६।२५ तारीख को मोती, स्वर्ण चाँदी, कर्पूर, चावल, मिश्री, दही, श्वेत वस्त्र, श्वेत पुष्प, शंख पुस्तक का दान करें तथा निम्न यंत्र को पूर्वोक्त समान लिखें एवं यंत्र जल में प्रवाहित कर दें। मंत्र जाप यथा संभव अधिकाधिक करें—

४।१३।२२।३१ को

१३	८	१५
१४	१२	१०
९	१६	११

७।१६।२५ को

१४	९	१६
१५	१३	११
१०	१७	१२

ॐ इमंदेवा ऽ असपत्न घुं सुवहवम्महतेक्षत्राय महते ज्यै-ष्ठ्याय महते जानराज्या येन्द्र स्योन्द्रियाय। इमम मुष्यै पुत्रम मुष्यै पुत्रभस्येव्विशए षवोभी राजा सोमो स्माक ब्राहमषाना घुं राजा।

८।१७।२६ को मूंगा, स्वर्ण, गेहूँ, ताम्र, मसूर गुड़, घृत, रक्त वत्र, कनेर पुष्प, रक्त चंदन, केशरादि का दान करें।

यंत्र—

१२	७	१४
१३	११	९
८	१५	१०

ॐ शन्नोदेवी रभिष्टय ऽ आपो भवन्तु पीत ये। शॉय्योरिरमिस्त्र वन्तु नः। ॐ भूर्भुवः स्वः शनि ॥

आपको ज्ञान होगा महात्मा गाँधी, ग्लेडस्टन, नेपोलियन III, दिलीप कुमार, सुमित्रानन्दन पन्त, हर हिटलर, चार्ल्स, मेरिया एन्टोनी, मालासिन्हा, मुहम्मद-साहब, थामस हार्डी, चार्ल्स द्वितीय, एडिसन, लालबहादुर शास्त्री, हिटलर, मुसोलिनी, आचार्य रजनीश, मुरार जो देसाई, राजेश खन्ना, अमिताब बच्चन, आशा पारीख, राम महेश्वरी, जनरल कोल, आपसे अर्थात् आपके नम्बर २ से प्रभावित व्यक्ति है।

अब हम एक नजर में पूरे माह को के शुभाशुभ की गणना कर देखलें यह उपयुक्त होगा !

तारीख	शुभाशुभ
१	शुभ
२	शुभ-उत्तम
३	सामान्य
४	मध्यम
५	सामान्य से ठीक
६	सर्वोत्तम
७	उत्तम
८	मध्यम
९	सर्वथा प्रतिकूल
१०	सामान्य से ठीक
११	मध्यम
१२	सामान्य
१३	मध्यम
१४	सामान्य से ठीक
१५	सर्वोत्तम
१६	उत्तम
१७	मध्यम
१८	सर्वथा प्रतिकूल
१९	सामान्य से ठीक
२०	मध्यम
२१	सामान्य

तारीख	शुभाशुभ
२२	मध्यम
२३	सामान्य से ठीक
२४	सर्वोत्तम
२५	उत्तम
२६	मध्यम
२७	सर्वथा प्रतिकूल
२८	सामान्य से ठीक
२९	मध्यम
३०	सामान्य
३१	मध्यम

अंक तीन

आपका जन्म अवश्य मेव ३।१२।२१ अथवा ३० तारीख को हुआ है इसी कारण आपका मुलांक तीन है भाग्यशाली हैं आप कि आपका अंक तीन है और आपके जीवन पर देव गुरु बृहस्पति धन-लाभ-शिक्षा-संतान के कारक बन कर प्रभुत्व जमाये हुए हैं। गुरु कृपा से दैविक गुणों का अम्बार है आपमें। आपसे बढ़ कर कोई अन्य महत्वा कांक्षी नहीं! उन्नति के सर्वोच्च शिखर पर जा पहुँचें ऐसी अभिलाषा निरन्तर बनी रहती है। हर पग उन्नति के डगर पर बढ़ता चला गया है। फूहड़पन, अनुशासन हीनता, बेंढगापन, औघड़पन, अस्त व्यस्त जीवन आपको अभिष्ठ नहीं। शिशुकाल में हमजोलियों के अगुआ रहे विद्यालय व कॉलेज शिक्षा में पूर्ण नैतृत्व दिया और ढलती उम्र में सामाजिक नैतृत्व से भी मूँह मोड़ नहीं सकते। थोड़ा सा भी प्रयास कर सैन्य विभाग में पहुँच जायें तो एक कीर्तिमान स्थापित कर सकते हैं। कर्मचारियों में शिथिलता आप सहन नहीं कर सकते, क्या हुआ यदि इससे कुछ लोग शत्रु बन जायें या विरोधी हो जायें। साहस, शक्ति, दृढ़ता आपके संगी साथी हैं। चलते-फिरते पुस्तकालय हैं आप। देखने योग्य पुस्तकालय और पुस्तक कीट भी कहूँ तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। संघर्ष की पाठशाला में पढ़कर ही तो जीवन में निखार आ सका है।

उत्तमोत्तम चरित्र के धनी, विचारों में सौष्ठव और सुघड़ता,

सुव्यवस्थितता, अपनों को ऊँचा उठाने की उत्कट अभिलाषा, ज्ञान व शिक्षा हेतु अपनी हानि कर के भी मदद करते हैं। जिस सुन्दर ढंग से आप अपनी बात कर सकते हैं उतनी खूबी से कम ही लोग अपनी बात को कह पाते हैं। बच्चों में बच्चे व बूढों में गंभीरता का लबादा आप ओढ़ लेते हैं। देश व राष्ट्रभक्ति, कर्त्तव्य पालन, सभ्यता व संस्कृति के पोषक आप बुद्धि, चातुर्यता, धर्म भीरुता ग्रन्थावलोकन, मर्यादा व वंश मर्यादा के समर्थक भी हैं। सत्व, रज और तम तीनों का दिग्दर्शन आपमें हो जाता है ब्रह्मत्व, शिवत्व, एक साथ आपमें हैं।

धर्म, शिक्षा, समाज शास्त्र, राजनीति के जानकार कठोर कार्य प्रणाली युक्त वाह्य व्यक्तित्व ढीला-ढाला, सहज सामान्य पर आन्तरिक व्यक्तित्व दर्शनीय है और इसी कारण सामान्य जन आपको भली प्रकार समझ नहीं पाते और प्रायः ठगे जाते हैं। सरल वेशभूषा, सरल स्वभाव, सामान्य बन कर जीवन जीते हैं। कर्म व वचन में भेद नहीं। एक साथ दयालू, कृपालु, परोपकारी, आत्मीय, आडम्बर हीन, सबके प्रति समान व्यक्तित्व है आपका !

हाँ, स्वार्थ परता बृहस्पति के कमजोर होने पर आपमें बढ़ जाती है। समय की नाजुकता को देख शत्रु को भी मित्र बना लेने में आप सिद्ध हस्त हैं पर इसका अर्थ यह नहीं कि पूर्व शत्रुता को आप भूल जायें। कार्य सम्पन्नता के पश्चात पुनः वही रूप धारण कर जाते हैं।

छोटा कार्य, लघु पद, अल्प धन, तुच्छ विचार निम्न व्यवहार आपको अभीष्ट नहीं। शिक्षा, वाद-विवाद, धार्मिक चर्चा, पांडित्य प्रदर्शन, शास्त्रार्थ, प्रोफेसर, अध्यापन में आप सफल सिद्ध होते हैं। कलाकार का हृदय होने के कारण कलापक्ष आपका सूख नहीं सकता। व्यवसाय हो या नौकरी आपका कला पक्ष जीवन में अवश्य उभरता है। साहित्य सेवा, प्रकाशन, पेंपलेट बाजी, प्रचार और प्रसार, लेखन कार्य की ओर बढ़ जायें तो तुरन्त आगे बढ़ जाते हैं। घोर भौतिकवादी, दूरदर्शी, भविष्य के प्रति सावधान रहते हैं।

आप अपने बीते जीवन पर विहगम दृष्टि डालें तो देखेंगे कि आप आर्थिक मामलों में कमजोर हैं। पैसा कमाना तो आता है

पर खर्च करना नहीं। खूब कमाते हैं पर चूकते अपव्यय से भी नहीं फिर भी हाथ रुकता भी नहीं आवश्यकतानुसार पैसा आता जाता है। भूल कर भी मित्र भाई-बन्धु या कुटुम्बी जन से आर्थिक मदद की आशा न करें, आश्वासन तो मिल सकता है पर सहायता संभव नहीं आप जानते है कि मैं जो पैसा उधार देता हूँ वह लौट कर आयेगा नहीं पर फिर भी उधार दे बैठते हैं। नियन्त्रण करना चाहिए। पैसा और उसका बाहुल्य आपको स्वेच्छा चारिता को ले जाता हैं। घमण्ड आना पतन का कारण बन जाता है। किसी की राय न मान, मनमानी करने लगते हैं यह भी उचित नहीं। व्यक्तित्व की यह निरंकुशता सर्वथा उचित नहीं है।

आकस्मिकता आपको प्रिय है। यकायक अर्थ प्राप्त कर पैसे वाला बनने की उत्कट इच्छा रहती है और इसी कारण भले बुरे, हानि-लाभ, यश-अपयश का ख्याल छोड़ सट्टा जुआ, रेस खेल कर संग्रहित धन का नाश कर देते हैं। लॉटरी के पीछे खूब खर्च पर खर्च करते चले जाते हैं। एकाधिक कार्य एक साथ प्रारंभ कर जाते हैं फलतः समय पर एक भी एक पूरा नहीं होता। आपको एके साधे सब सधे, सब साधे सब जाय। जो तू सेवे मूल को तो फले फूले अघाय'। के सिद्धान्त का पालन करना चाहिए। व्यर्थ की भावुकता व भाग्य वादिता से किनारा कर लेना चाहिए। हाँ आत्मश्लाघा, स्वप्रसंशा, आत्म प्रवंचना पर भी अंकुश रखें नहीं तो वाचाल, बडबोले सिद्ध हो जायेंगे।

यात्रा आपको प्रिय है, यात्रा भाग्योदय कारी है। हर यात्रा उन्नति के मार्ग की एक सीढ़ी सिद्ध होगी अतः यात्राएँ खूब करें। जरा सा अवसर मिलते ही आप यात्रा करें यों भी २१।३०।३९।४८ ५७ वे वर्ष में यात्रा द्वारा भाग्योदय का फल मिलेगा। आप मनो-रंजन का कोई अवसर छोड़ नहीं सकते। जादूगरी के कार्य, नाटक, सिनेमा, बाजीगरी, खेल तमाशे आपको प्रिय हैं। शायद ही कभी जीवन में आपको सवारी का अभाव मिले। आपके पाँव में एक ऐसी रेखा है जो भरपूर वाहन सुख प्रदान करती है।

गृहस्थ के मामले में आप सौभाग्यशाली हैं पत्नी आपको सुघड़, सुलक्षणा, विदुषी, सुन्दर, चतुर, धनी, ईश्वर परायण मिली है जो

सुन्दर संतति की जननी है। आपको चाहिए कि आप आराम-तलबी, भोजन प्रियता, शान्ति, निद्राप्रियता, ऐशो-आराम में कुछ कमी करें। लेन-देन के मामले में व्यक्ति पहिचान कर व्यवहार करें। क्या एक बार-एकाधिक-बार धोखा खा कर भी आप सँभल नहीं सकते। ज्यादा साहस, अनावश्यक रिस्क, व्यर्थ की निडरता कानून की अवहेलना आपके व्यक्तित्व के वास्ते उचित नहीं है।

क्या आप नारी जातक हैं तो सौभाग्यशाली हैं आप कर्मठ व सामाजिकता से ओत-प्रोत, सतत कार्यशील सद्गृहस्थ, पतिप्रिय, गृहस्थ-प्रेमी, संयमि नारि हैं। बिगड़ी गृहस्थी को भी आप सँभालने की क्षमता रखती हैं। जीवन को सदैव पॉजिटिव एप्रोच के रूप में ही देखती है नेगेटीव नहीं। हर कार्य, हर घटना के चारों ओर देख लेती है। दूरगामी परिणाम मद्दे नजर रहते हैं। आपको काम प्रिय है। दूसरों के कार्य में टाँग नहीं अड़ातीं वहीं आपके कार्य में कोई हस्तक्षेप करे यह भी आपको अभीष्ट नहीं।

स्वस्थ मनोरंजन आप चाहती हैं। जीवन क्रमशः उन्नति की ओर बढ़ता रहे ऐसी आकांक्षा निरन्तर बगी रहती है। पैसा संचय करने की प्रवृत्ति तो आप में भी नहीं अतः पैसा मुक्त-हस्त से खर्च होता रहता है। धर्म के प्रति आस्थावान् पर रूढ़िवादिता, दिखावे से दूर रहती हैं। सामाजिक कार्यों की ओर आप लग जायें तो शीघ्र ही धन, यश, मान, आनन्द प्राप्त कर सकती हैं।

आपका मूलांक तीन है आप अपने जीवन में अंक ३ से प्रभावित व्यक्तियों से शिक्षा ग्रहण करें। मालूम है वे व्यक्ति कौन हैं—? वे हैं—अब्राहिम लिंकन, औरंगजेब, लार्ड रसेल, जॉर्ज चतुर्थ, जगदीश चंद्र वसु, स्टॉलिन, रुजवेल्ट, नासिर, जनरल मानिक शॉ, स्वामी विवेकानन्द, डॉ० राजेन्द्र प्रसाद, वाल्टेयर, नरगिस, निम्मी, वहीदा रहमान, चर्चिल, हेलन, डेविड, ऋषिकेश मुकर्जी इत्यादि।

आपका प्रयास यह भी करना है कि आप अपने जीवन में निम्न कार्यों में से कोई कार्य अपनाएँ—वस्त्र-उद्योग, भोजन-स्थल, ढ़ाबा, होटल, रेस्टोरेंट, भोजनालय, पान की दुकान, अध्यापन, मठाधीश, पुजारी, धर्मोपदेशक, प्राध्यापक, विख्याता, राजदूत, मन्त्री, कानूनी सलाहकार, वकालत, न्यायाधीश, सचिव, दूत-कार्य,

क्लर्की, चिकित्सा-कार्य, बैंकिंग का कार्य, दलाली, आढ़त, विज्ञापन-कर्त्ता, अभिनेता, सेल्समेनशिप, मैनेजरी, टाइप, शॉर्ट-हैण्डर, जल-जहाज में कार्यकर्ता, पुलिस-विभाग, दर्शन-शास्त्री, प्रवन्धक, समुद्र पार का व्यापार, सामाजिक कार्य, समाज-सेवा, अन्वेषण, नर्स, इंजीनियर, तर्क शास्त्री, मोटर मैकेनिक, ड्राइवरी का कार्य, सिनेमा चालक, फिलॉस्फर आदि ।

आपके जीवन में कुछ कमियाँ हैं, कुछ बाधाएँ हैं कुछ अभाव हैं उन पर नजर डालना भी समयोचित हैं आप प्रयासपूर्वक उन्हें दूर करने का प्रवास करें यही मेरी सलाह है—

(१) अर्थ पक्ष आपका कमजोर है, यह ध्यान रहे । कमाने में आप सिद्धहस्त हैं पर अपव्ययी हैं, इस पर आवश्यक नियन्त्रण रखा जाना चाहिए । पैसा पा न अभिमान करें न स्वेच्छाचारिता की ओर ही बढ़ें । भूल कर भी उधार न दें और दें तो खूब सोच-समझ कर व व्यक्ति पहचान कर ।

(२) याद है आपको कि आपके जीवन में अकस्मात् धन प्राप्ति का योग नहीं है अतः व्यर्थ जुए, सट्टे, लॉटरी, मटके आदि के पीछे नहीं भागें । अविलम्ब धनी बनना चाहते हैं जो सम्भव नहीं । व्यर्थ ईर्ष्या-भाव को भी न पनपने दें । यह आपके व्यक्तित्व को धूमिल बना देगा ।

(३) उतावलेपन में या बिना सोचे-समझे आप हर एक से मित्रता कर बैठते हैं जो भविष्य में विपत्ति का कारण बन जाते हैं इस ओर ध्यान दें । भली प्रकार इस बात को सोच लें कि मित्र धोखेबाज, चालबाज अथवा स्वार्थी तो नहीं है । ऐसा तो नहीं कि वे आपसे गलत, अनैतिक या अशोभनीय कार्य करवा लें ।

(४) अपनी स्वार्थपरता को भी आप छोड़ने का प्रयास करें अविश्वास या वहम की भावना पर भी नियन्त्रण कर लें स्वकार्य तक स्वार्थ सहन किया जा सकता है परन्तु अपना कार्य निकल जाने के बाद दूध की मक्खी की तरह उसे छोड़ जाना उचित नहीं है ।

(५) वासना, लिप्सा, भोग-प्रियता पर भी आप संयम रखें । भोगाधिक्यता के कारण आप अनेक आन्तरिक व गुप्तांग सम्बन्धी रोगों को आमन्त्रित कर बैठते हैं ।

(६) आप अपनी जिद्द व हठ के आगे किसी की बात सुनते ही नहीं यह ठीक नहीं। इसी कारण कई बार आपके घर-गृहस्थी में कलह का वातावरण बन जाता है, स्वयं की पत्नी या सन्तान तक के प्रति अविश्वास शोभनीय नहीं कहा जा सकता।

(७) आपको भोजन पर भी नियन्त्रण रखना चाहिए। अधिक मिर्चा, मसाले वाली चीजें, तली हुई चीजें, खट्टी खाने से रोग को न्यौता देते हैं, अतः संयमित भोजन करें।

(८) तर्क आपके अच्छे व वजनदार होते हैं, पर कई बार व्यर्थ जिद्द में आकर कुतर्क कर दूसरों पर हावी होने का प्रयास करते हैं यह उचित नहीं। इससे अनेक बार मित्रता शत्रुता में बदल जाती है। उतना ही बोलिए जितना आवश्यक हो, इससे मित्र क्षेत्र बढ़ेगा।

(९) आपका काम मस्तिष्क का है अतः शान्त रहें। कोई ऐसा कार्य न करें जिससे क्रोध उत्पन्न हो या मानसिक संतुलन बिगड़ने की सम्भावना हो।

(१०) एक साथ एकाधिक कार्य करने की भी प्रवृत्ति छोड़ दें इससे आप प्रायः हानि उठाते हैं अतः एक-एक कर अपने कार्य करें इससे अधिक व शीघ्र सफलता प्राप्त होगी।

(११) यथासम्भव आप यात्राएँ करते रहें, कारण यात्राएँ ही आपके भाग्योदय का कारण बनेंगी। यात्राएँ लाभ देंगी, यात्राएँ मानसिक शान्ति प्रदान करेंगी।

याद रहे अंक आपका ३ तथा वार आपका वृहस्पति है। कोई भी कार्य करें उसके लिए आप वर्ष कलैण्डर लेकर बैठ जायें तथा देखें कि ऐसी तारीखें (३।१२।२१।३०) कब-कब आती हैं जिस दिन इन तारीख को गुरुवार भी हो। ऐसा संयोग जिस दिन बैठे उस दिन आप किसी उच्चाधिकारी से मिलें, नौकरी हेतु प्रार्थना पत्र दें नए व्यवसाय का शुभारम्भ करें, यात्रा पर जायें अथवा और कुछ करें। यदि आप अपनी दुकान साप्ताहिक अवकाश की दृष्टि से गुरुवार को बन्द रखते हैं तो आज के अवकाश की जगह अन्य दिन चुन लें। स्वयं गुरुवार अपने में शुभ है जिसे अंग्रेजो में Thursday कहा जाता है। धनु और मीन आपकी राशि होने के कारण वे

व्यक्ति जो धनु या मीन राशि के हैं आपको प्रिय होंगे। आपके उच्चाधिकारी व्यापार में साझेदार, लाइफ पार्टनर, मित्र यदि ये. यो. भा. भी. भू. धा. फा. ढा. भे. दू. थ. झ. ञ. दे. दो. चा. ची नामा क्षर वाले किवा मूल-पूर्वाषाढा व उत्तराषाढा के प्रथम चरण में उत्पन्न व पूर्वाभाद्र पद के अंतिम चरण, उत्तराभाद्र पद व रेवती नक्षत्रोत्पन्न व्यक्ति पूरा सहयोग देंगे।

ब्राह्मण वर्ग के जातकों के साथ आपका पूर्ण सहयोग रहेगा। वे आपके अच्छे हितैषी होंगे। आप अपनी भाग्य वृद्धि के लिए, उत्तम जीवन निर्माण, उन्नत्ति व विकास के लिए, परीक्षा में सफलता व व्यावसायिक लाभ के लिए उक्त ३ अंक वाली तिथियों को पीली वस्तु भोजन में लें यथा गट्टे, कढ़ी, बेसन की चीज, लड्डू, चने की दाल इत्यादि तथा पीलेपन लिए हुए वस्त्र पहने। पर्दे जाली, रंग, गिलाफ, चद्दर आदि पीले रखें। चश्मे के काँच, घड़ी का पट्टा व अन्य उपयोग में आने वाली वस्तुएँ पीली हों तो उत्तम है। इन तारीखों के अलावा अन्य दिनों में भी उन्हें प्राथमिकता दें। पुरुष वर्ग आपका विशेष सहयोगी इन दिनों रहेगा तथा प्रौढ।

आपको याद होगा अंक ७ आपकी उच्चता का प्रतीक है अर्थात् चन्द्रमा एवं अंक आठ निम्नता का परिचायक है। ९।१ और ५ अंक के साथ गहरी मित्रता है तो अंक ६ के साथ शत्रुता है वहीं २।३।४।७ के साथ मित्रता का सम भाव है। सरलता के वास्ते इसे यों समझें कि तारीखा ७।१६।२५ को आपमें उच्चता का नाम होता है तारीख ८।१७।२६ को निम्न विचारधारा तथा ९।१८।२७, १।१०।१९।२८, ५।१४।२३ को अंकों की दृष्टि से मित्रता रहती है।

२।११।२०।२९, ३।१२।२१।३०, ४।१३।२२।३१, ७।१६।२५ को अनुकूलता बनी रहती है। अंक १ से अर्थात् १।१०।१९।२८ को सात्विक भाव, ७।१६।२५ को व अंक ७ के व्यक्तियों के साथ राजस भाव, अंक ९ व ९।१८।२७ को तामसी भाव की प्रधानता रहती है। आर्द्रा, स्वाति, शतमिषा अशुभता प्रदान करते हैं। अंक ५ व ६ शत्रु भाव रखते हैं। ईशान कोण (पूर्व-उत्तर) मृदु स्वभाव वाले, सत्वगुणी लोग आपको प्रिय है या कहें आपके अंक की प्रभुता ही इस पर रहती है। आकाश तत्व, हेमन्त ऋतु, सामान्य वस्त्र

चांदो जैसा धातु, पीत वर्णीय-नीबू वर्णीय पुखराज भी आपको प्रिय है तथा मानव जाति व द्विपद जन्तु के प्रति रुचि कर व्यवहार रहता है। भण्डार गृह में आप कार्य करना अधिक पसन्द करते हैं। वेदाभ्यास, धर्म चर्चा व उद्देश्य, धार्मिक अध्ययन रुचि कर लगता है। व्याकरण के आप ज्ञाता हो सकते हैं। घने, जंगलों व पहाड़ी स्थानों पर भ्रमण करना आपको प्रिय रहता है।

सन्तान, ज्ञान, भाग्य, आनन्द, चर्बी के कारक तथा इस अंक का प्रभुत्व कमर से जाँघ तक रहता है। यदि आप २१ वर्ष के हैं तो निश्चय ही भाग्योदय होने वाला है थोड़ा सा प्रयास करें सफलता आपके कदम चूमेगी।

आइये ! अब हम माह के शेष दिनों में आपका भाग्य चक्र देखें—

आपका अंक तीन है तथा अंक ७ के साथ में उच्च स्तरीय सम्बन्ध है फलतः तारीख ७।१६ व २५ भी भारी सुभता प्रदान करेंगी। यदि ७।१६।२५ तारीख को सोमवार हो तो सोने में सुहागे वाली बात चरितार्थ होगी। वे व्यक्ति जो कर्क राशि वाले हैं अर्थात् जिनके नाम का प्रथम अक्षर ही. हू. हे. हो. डा. डी. डू. डे. डो है अथवा जो पुनर्वसु नक्षत्र के अंतिम चरण में या पुष्य अथवा आश्लेषा नक्षत्र में जन्मे हैं मदद गार होंगे। इनके साथ सर्म्पक करें, मतलब साधें, मिलें या लेन-देन करने पर अवश्य ही उत्तम फलों की प्राप्ति होगी। इसी प्रकार प्रत्येक माह में उक्त नक्षत्र जिस दिन हों वे दिन भी शुभ फल प्रदान करेंगे।

जाति—उक्त तारीख को वैश्य जाति के व्यक्ति के साथ सम्पर्क करना या सम्बन्ध बनाना लेने-देने का कार्य अवश्य किया जाना चाहिए। वैश्य भी यदि कर्क राशि का हो तो क्या कहना ?

रंग—आज के दिन अर्थात् ७।१६।२५ तारीख को सफेद वस्त्र पहनना, भोजन में दूध-दही, मट्ठे का प्रयोग, अण्डा, मक्खन लेना उत्तम है। वस्त्रों का प्रयोग सम्भव न हो तो कम से कम सफेद रुमाल तो काम में ले ही सकते हैं।

लिंग—आज के दिन स्त्री सम्पर्क उत्तम रहता है यदि स्त्री जातक से कोई काम निकालना है तो ऐसा अवसर फिर नहीं आ

सकता। स्त्री जातक महिला वर्ग आपका हित साधन करेंगी।

अवस्था—स्त्री जातक हो, वैश्य जाति की हो और युवा हो तो सफलता असंदिग्ध रहती है। आपका मन चाहा कार्य हो इस हेतु वे सहायक रहेंगी।

अंक—भूल कर भी अंक आठ के व्यक्तियों से संपर्क न करें वे शत्रुवत्त व्यवहार करेंगे। ६ अंक वाले जातक भी हितैषी नहीं हो पायेंगे अतः इन लोगों से बच कर रहने में ही लाभ है।

दिशा—उक्त तारीख को यदि वायव्य कोण में यात्रा करनी है तो श्रेष्ठ है, ऐसी यात्रा अवश्य करें, यह यात्रा अभिष्ट सिद्धि, इच्छा पूर्ति, अर्थ लाभ, मानसिक शान्ति वास्ते अनुकूल है।

स्वभाव व गुण—इन तारीखों में आप अल मस्त, प्रसन्न व हँसमुख रहेंगे फलतः स्वभाव में चञ्चलता का समावेश रहेगा तथा सत्व गुण की प्रधानता बनी रहेगी।

तत्व—ये तारीखें जलतत्व प्रधान होने के कारण जलीय तट, जलाशय के निकट, आदि स्थान में अधिक हित कर है। ऐसे स्थलों पर कोई कार्य रुका पड़ा है। या करना है तो अवश्य करें, सफलता पायेंगे।

ऋतु—मौसम यदि वर्षा का है तो ये तारीखें और अधिक हित कर व अनुकूल हैं।

वस्त्र—सफेद व हल्के रंग के वस्त्र पर नए वस्त्र पहनें। तात्पर्य यह है कि यदि नया वस्त्र धारण करना है या पर्दे भी बदलने हैं अथवा तकिये का गिलाफ़ या बेड शीट, चद्दर बदलनी है तो आज के दिन का अवश्य सुदुपयोग करें।

द्रव्य व रत्न—यदि आप स्वर्णाभूषण पहने हैं तो उसे उतार कर चाँदी के आभूषण पहनें तो उत्तम होगा। मोती नाक-कान-गले या अंगूठी रूप में धारण करना, शुभ रहेगा। चाँदी व मोती आपके व्यक्तित्व के निखार में, उन्नकि में सहायक है।

पशु-पक्षी रूप—चतुष्पद प्राणी की सेवा, क्रय-विक्रय आदि करना उपयुक्त है।

क्रीड़ा स्थल—जलीय स्थान सर्वथा अनुकूल है। तथा जो भी प्रभाव है वह इन तारीखों को अल्प समय के लिए ही रहता है

इसका विशेष ध्यान रखना चाहिए।

अध्ययन—इन तारीखों में दैनिक ज्ञान, धर्म चर्चा व ज्योतिष विषयक अध्ययन अधिक अनुकूलता प्रदान करेगा।

कारक स्थल या कार्य स्थल—समुद्र किनारे, नदी किनारे, ध्रुवी प्रदेश, आर्द्र स्थल, ठंडे मुल्क अधिक उपयुक्त है।

सुखानुभूति—मन-आत्मा-माता व मातृ पक्ष, रक्त आदि से सुख शांति प्राप्त अवश्य होती है।

शरीराधिपत्य—गले से लेकर हृदय भाग तक अधिकार रहने के कारण इस हिस्से से सम्बन्धित यदि कोई रोग है उपचार कारगर हो सकता है।

भाग्योदय—यदि आपको २५वां वर्ष चल रहा है तो आप भाग्योदय हेतु प्रयास कर सकते हैं। उच्चाधिकारियों से मिलें, प्रार्थना पत्र दें किंवा दौड़ धूप करें, सफलता सहायक होगी।

इन दिनों मोती धारण करें अथवा चाँदी का गहना या रिंग पहने रहें। यदि अंगूठी बनी हुई नहीं है तथा मोती रखा है तो उसे सफेद कपड़े में लपेट कर बाँह में बाँधे रहें, अवश्य लाभान्वित होंगे। यदि चाँदी व मोती दोनों ही नहीं है तो प्रातः उठ कर स्नानादि नित्य क्रिया से निपट कर धुले वस्त्र पहन, पूर्वाभिमुख बैठ निम्न यंत्र को मन्योच्चार करते हुए १०८ बार भोजपत्र पर लिखें। भोजपत्र के अभाव में कागज पर और कागज पर या भोजपत्र पर लिखने के बाद उन्हें जलाशय में प्रवाहित कर दें।

यंत्र—

१४	९	१६
१५	१३	११
१०	१७	१२

मंत्र—ॐ इमं देवा असपत्न घुं सुबंद्ध महते क्षत्राय महते ज्येष्ठ्याय महते ज्यान राज्यायेन्द्रियस्येन्द्रियाय। इम ममुष्यै पुत्रमुष्यै पुत्र मस्यै विश एष वो ऽमी राजा सोमो ऽस्माक ब्राह्मणानां घु राजा।

दान—यथा सम्भव सुपात्र को देख कर श्रृद्धानुसार निम्न वस्तु का दान देना ऊत्तम रहता है। मोती, स्वर्ण, रजत, कांस्यपात्र, कर्पुर, चावल, मिश्री, दही, श्वेत वस्त्र, श्वेत चंदन, श्वेत पुष्प, शंख, पुस्तक इत्यादि।

आपको ध्यान होना चाहिए कि अंक आठ अर्थात् ८।१७ और २६ तारीख आपको नीच दोष देता है, अतः तारीख ८।१७।२६ का भूल कर भी शुभ कार्यों की ओर ध्यान न दे और न ही यात्रा करें। उच्चाधिकारियों से सावधान रहें। नए व्यावसायिक अनुबन्ध, नए व्यापार का आरम्भ करना सर्वथा अनुचित होगा। मित्र वर्ग धोखा दे सकते हैं। हानि, कलह, दैहिक, व मानसिक पीड़ा हो सकती है।

यदि ८।१७ और २६ तारीख को शनिवार है तो और अधिक बच कर रहने, सावधान रहने, अपनी भावनाओं इच्छाओं पर नियन्त्रण रखने की आवश्यकता है। अस्तु मकर व कुंभ राशि वाले व्यक्तियों से सावधान रहें। वे आपके लिए घातक, कष्टपद, अपमान के कारण बनेंगे। यात्रा करना यदि अत्यावश्यक हो तो वह डिब्बा या मोटर के मम्बर जिनका योग आठ हो, उपयोग में नहीं लायें यही नेक सलाह है।

उत्तराषाढा नक्षत्र के अंतिम ३ चरणा, श्रवण घनिष्ठा, शतभिषा व पूर्वा भाद्रपद की प्रथम तीन चरण में जन्मे व्यक्ति व हर माह में उक्त नक्षत्र भी अशुभ फल ही प्रदान करेंगे या वे व्यक्ति जिनका नाम भो, जा, जो, खी, खू, खे, खो, गा, गी, गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा अक्षर से प्रारंभ होता है उनसे सम्पर्क भूल कर भी नहीं करें। वे कदम-कदम धोखा देंगे, अपमान करेंगे या कलह का कारण बनेंगे।

दास वृत्ति वाले, निम्न भावना रखने वाले अन्त्यज लोगों से दूर रहें तथा उनका कोई कार्य नहीं करें। अपने से निम्न पदासीन व्यक्ति को भूल कर भी मुँह न लगायें। गहरे रंग के वस्त्र, काले या नीले, हरे रंग के वस्त्रों का उपयोग न करें। आपके पास यदि वाहन है तो कृपया न चलायें यदि वाहन का रंग काला, हरा या नोला है तो भूल कर भी उसका उपयोग नहीं करें। वृद्ध और अति

वृद्ध व्यक्ति चाहे स्त्री हों या पुरुष उनसे संसर्ग न करें, सम्बन्ध न जोड़ें।

आपको यात्रा करना आवश्यक हो गया है या अधिकारीवर्ग के आदेश का पालन करना है तो भी पश्चिम दिशा में तो कम से कम न जायें। यथासंभव यात्रा स्थगित रखें। कोई काम निकाल कर अगले दिन चले जाँय यही उत्तम होगा। स्वभाव में उत्तेजना, तीक्ष्णता, क्रोध और झुंझलाहट का प्रादुर्भाव रहेगा अतः धैर्य व ठंडे मिजाज रहने का प्रयास करें। क्रोध पर नियन्त्रण रखें। भूल कर भी कोई वैसी-ऐसी बात न कर बैठें जिससे गृह-कलह होने की सम्भावना हो। सत्यतः तमोगुण की ही प्रधानता रहेगी। अधिकारी आपके काम की आलोचना कर सकते हैं पत्नी रुष्ट हो सकती है। सन्तान आप पर दोषारोपण भी कर सकती है पर परवाह नहीं, आप शान्त रहें।

वायु तत्व की प्रधानता के कारण गठिया, लकवा, बातरोग यदि है तो रोग तीव्रता ला सकता है पर घबराएँ नहीं, कष्ट सहन करें। दुर्भाग्य से यदि शिशिर ऋतु है तो और बुरा है। जहाँ तक वस्त्रों का प्रश्न है जीर्ण वस्त्र न पहनें, फटे, पेबन्द लगे, सड़े वस्त्र आज ही क्यों पहनें फिर कभी पहन लें पर आज तो नहीं। आपने यदि घोड़े की नाल, अष्टधातु की अँगूठी या नीलम पहन रखा है तो कृपया उसे उतार दें। यह और कष्टप्रद होगा। धातु के हथियार या मशीनरी कार्य में सावधानी रखें। आप शिकारी हैं तो आज ही शिकार करें यह क्या आवश्यक है। चोट लग सकती है अहित संभव है।

चौपाये जानवरों से बचें। वे चोट दे सकते हैं, सींग या लात मार सकते हैं। काट सकते हैं और आप एक अवधि तक कष्ट पाएँ। गन्दी जगह, नाच घर, जुआ-घर ऐसे वैसे स्थानों पर भी भूल कर भी न जाएँ अपमान, हार, अर्थ हानि स्पष्ट है। आप जज हैं, वकील हैं कानून के अध्यापक या छात्र हैं तो आज कानून के अध्ययन-अध्यापन व कार्यार्थ सावधानी अपेक्षित हैं। ऐसा न हो कि होम करते हाथ जला बैठें।

आप भ्रमण के प्रेमी हैं तो घने जंगलों में, पहाड़ी स्थलों पर

भी भ्रमण करने न जायें। नौकरों-भृत्यों-दासों से वाक्युद्ध, बोल चाल या अहित हो सकता है। वे आपका, आदर न करें व आप बुरा मान जायें इससे अच्छा है उनसे सम्पर्क ही न रखें। आप किसी कारण-अकारण दुखी हैं, चिंतित या पीड़ित हैं तो आपका दुख, कष्ट, चिंता या पीड़ा बढ़ सकती है। स्नायु संस्थान विशेष प्रभावी होंगे। घुटने से नीचे का भाग यदि रोगग्रस्त है तो दर्द बढ़ सकता है या दुर्घटना होने पर यह भाग और पीड़ित कर सकता है।

३६ से ४२ वर्ष के मध्य की आयु है और भाग्योदय के लिए प्रयास करना चाहते हैं। मिलना चाहते हैं या प्रार्थना-पत्र प्रेषित करना चाहते हैं तो आज ठहर जायें, कल भी यह कार्य किया जा सकता है।

माना आप दानप्रिय हैं। परोपकारी व दयालु हैं। पर भूल कर भी धातु, तेल या तिलहन, काले पदार्थ, काला वस्त्र, जूते, पञ्चधातु, उड़द, भैंसा दान न दें।

आप ८।१७ और २६ तारीख के बारे में भली प्रकार समझ चुके हैं तो आइये। शेष तारीखों के बारे में भी जानकारी कर लें।

आपको ज्ञात है कि अंक १।५ और ९ आपके मित्र हैं अतः १।१०।१९।२८, ५।१४।२३ तथा ९।१८।२७ तारीखें भी अच्छे फल प्रदान करेंगी। क्रमशः इनके बारे में भी जानकारी प्राप्त कर लें।

किसी भी माह में तारीख १।१०।१९।२८ उत्तम फल प्रदान करेंगी और प्रधानतः माह अक्टूबर में। यदि उक्त तारीख को रवि याने आदित्यवार हो तो और उत्तम रहेगा इसी प्रकार ५।१४ और २३ तारीख को यदि बुधवार हो तथा मई का महीना हो तो और भी अधिक श्रेष्ठ है। १८।२७ को मंगलवार हो उत्तम और सितम्बर माह हो तो और उत्तम रहेगा। अपनी उन्नति, भलाई, कार्य पूर्ति हेतु इन्हीं तारीखों, वार व महीनों का ध्यान रखें ये श्रेष्ठ हैं। यों रविवार, बुधवार, मंगलवार आपको शुभफल प्रदान करेंगे। मेष और वृश्चिक, मिथुन और कन्या, ओर सिंह राशि वाले व्यक्ति अथवा जिस व्यक्ति के नाम के प्रथम अक्षर तारीख १।१०।१९।२८ को मघा नक्षत्र, पूर्वा फाल्गुनी व उत्तरा फाल्गुनी का प्रथम चरण

हो, मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे नामाक्षर व्यक्ति हितैषी रहेंगे। इसी प्रकार ५।१४।२३ तारीख के दिन मृग शीर्ष के अंतिम दो चरण में, आर्द्रा व पुनर्वसु के प्रथम ३ चरण में उत्पन्न व्यक्ति या का, की, कू, घ, ङ, छ, के, को, हा नामाक्षर, उत्तरा फाल्गुनी के अन्तिम तीन चरण में जन्म हस्त, चित्रा के प्रारम्भिक २ चरण में जन्में व्यक्ति हितकर हैं इसी प्रकार ६।१८।२७ तारीख को मेष राशि या अश्विनी, भरणी व कृतिका के प्रथम चरण, में जन्में व्यक्ति, विशाखा अंतिम चरण, अनुराधा व ज्येष्ठा में जन्मे या चू, चे, चो, ला, ली, लू, लो, ले, अ, तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू नाम के प्रथम अक्षर वाले व्यक्ति हर प्रकार से आपको अनुकूल व सहायक रहेंगे। ऐसे व्यक्तियों से भरपूर सहयोग प्राप्त करना चाहिए। ये व्यक्ति आपके जीवन-निर्माण में सहायक रहेंगे। यों उक्त-उक्त नक्षत्र भी हर माह में उक्त तारीख को आने पर सहायक होंगे।

यदि १।१०।१९।२८ को क्षत्रिय जाति के व्यक्ति से ५।१४।२३ को शूद्र जाति के व्यक्ति से और ६।१८।२७ के क्षत्रिय जाति के जातक से कोई कार्य निकालना है, हित साधन करना है, मिलना भेंटना या सम्पर्क साधना है तो उत्तम रहेगा। इस जाति के व्यक्ति अच्छे सलाहकार, सच्चे मित्र, उपयोगी साथी सिद्ध होंगे। इन पर विश्वास किया जा सकता है।

रंग—१।१०।१९।२८ तारीख को कालिमायुक्त लाल रंग।
५।१४।२३ तारीख को कालिमायुक्त हरा रंग, तथा
६।१८।२७ तारीख को गौरयुक्त लाल रंग उपयोगी रहता है। वस्त्र, भोजन के साथ-साथ अपने दैनिक उपयोग में आने वाली चीजें भी यदि इसी रंग की हों तो कहीं उपयुक्त है।

लिंग—१।१०।१९।२८ तारीख को पुरुष वर्ग से संपर्क करना ५।१४।२३ को सामान्य जन से तथा ६।१८।२७ को भी यथासंभव यथाप्रयास पुरुष वर्ग से सम्पर्क बढ़ाना कहीं अधिक ठीक रहता है।

अवस्था—१।१०।१९।२८ तारीख को वृद्धावस्था के पुरुष से ५।१४।२३ को प्रौढ़ावस्था व ६।१८।२७ को कम आयु वाले बालक व किशोर अवस्था वाले जातक सर्वाधिक हितकर रहते हैं अतः

उन्हीं का सहयोग लेना चाहिए।

दिशा—१।१०।१९।२८ तारीख को पूर्व दिशा में यात्रा करना या अपना सम्पर्क बढ़ाना ५।१४।२३ को उत्तर व ९।१८।२७ को दक्षिण दिशा में जाना, यात्रा करना, अपना उद्देश्य पूर्ण करने का प्रयास करना श्रेष्ठ रहता है अतः ऐसा प्रयास करना भी चाहिए।

स्वभाव व गुण—१।१०।१९।२८ तारीख को आपमें सत्व गुण का प्रादुर्भाव रहेगा तथा विचारों में सर्वथा स्थिरता बनी रहेगी इसी प्रकार ५।१४।२३ तारीख को रजोगुण की प्रधानता और ढुलमिल विचार रहेंगे, शेष ९।१८।२७ को तमोगुण की प्रधानता तथा विचार उग्रता लिये रहेंगे अतः आपको उक्त दिनों में तत्सम्बन्धी कार्य ही करना चाहिए यही ठीक है।

तत्वानुकूलता—१।१०।१९।२८ तारीख को अग्नि तत्व प्रधान रहने से भट्ठी का कार्य विद्युत कार्य, ज्वलनशील पदार्थ का कार्य किया जाना ठीक रहता है। ५।१४।२३ को पृथ्वी तत्व की प्रधानता के कारण भूमि व खनिज सम्बन्धी कार्य, कृषि संबंधी कार्य तथा ९।१८।२७ को भी अग्नि तत्व प्रधान कार्य करना हितकर रहता है।

ऋतु—ग्रीष्म ऋतु में आपको १।१०।१९।२८ तारीखें, शरद ऋतु में ५।१४।२३ तारीखें तथा ९।१८।२७ भी ग्रीष्म में अधिक ही शुभ फल प्रदान करती हैं।

वस्त्र—मूलाङ्क एक वाले दिन मोटे व खादी के वस्त्र धारण करना, मूलाङ्क ५ वाले दिन पुराने और मूलाङ्क ९ वाले दिन जीर्ण वस्त्र धारण किए रहना चाहिए।

द्रव्य और रत्न—१।१०।१९।२८ तारीख को अपने उपयोग में आर ताम्रपात्र को काम में लाएँ। ताम्रपात्र से सूर्य को अर्घ्य दें तथा घर में यदि माणिक्य है तो उसे धारण कर लें या अंगूठी में पहनें अथवा बांह में बाँध लें। ५।१४।२३ को कांस्य या सोप के पात्र में भोजन करें या उपयोग में लावें तथा मूँगा पहनें और ९।१८।२७ को स्वर्ण आभूषण धारण करें, उज्ज्वल रहें प्रवाल धारण करना श्रेयस्कर रहता है।

पशु-पक्षी रूप—१।१०।१९।२८ तारीख को पक्षी वृन्द, ५।१४।२३ को भी पक्षी व ९।१८।२७ को चतुष्पद पशु आपको

अनुकूलता प्रदान करेंगे । खरीदना-बेचना-पालना उपयुक्त है ।

कार्य-स्थल—१।१०।१९।२८ तारीख को देव स्थान दर्शन, तीर्थाटन भ्रमण व दैविक धार्मिक स्थलों को कार्य-क्षेत्र बनावें तो कहीं अधिक श्रेष्ठ है, इसी प्रकार ५।१४।२३ तारीख को क्रीड़ागार, कौतुकागार, भोगस्थल उपयुक्त है तथा ९।१८।२७ को जलने वाले स्थल व युद्ध-स्थल उपयुक्तता प्रदान करते हैं ।

काल समय—१।१०।१९।२८ को एक अयन ५।१४।२३ तारीख को ऋतु पर्यन्त व ९।१८।२७ को दिन भर कृत्कार्य का प्रभुत्व बना रहता है अतः उसी प्रकार कार्य किए जाने चाहिए ।

अध्ययन-अध्यापन-उपदेश-जानकारी—

१।१०।१९।२८ तारीख को राजनीति शास्त्र की बात करना, चर्चा, वाद-विवाद, अध्ययन-अध्यापन करना कहीं अधिक श्रेष्ठ है इसी प्रकार ५।१४।२३ तारीख को गणित का अभ्यास व ९।१८।२७ को युद्धाभ्यास श्रेष्ठता प्रदान करता है । अतः उक्त दिनों में उक्त विद्याओं का उपयोग, उपभोग भी करना चाहिए ।

कार्य स्थल-कारक स्थल—१।१०।१९।२८ तारीख को वनीय प्रदेश जंगल वन भ्रमण, पहाड़ी दृश्यावलोकन व भ्रमण श्रेष्ठता प्रदान करता है इसी प्रकार ५।१४।२३ तारीख को ग्राम्य भ्रमण, ग्राम्य जनों से सम्पर्क करना, द्विज जनों से वार्ता तथा ९।१८।२७ को भी जंगल, वन व पहाड़ी स्थल को ही आप प्राथमिकता दें ।

सुख-आत्माधिपत्य-शरीराधिपत्य—तारीख १।१०।१९ और २८ के दिन पितृ व पितृ पक्ष के सुखानन्द में वृद्धि, आत्माभिलोचन व आत्मिक सुख, अस्थि संबन्धी कोई दोष होने पर उसमें राहत का सुख का अनुभव करेंगे तथा सिर से मुख तक के भाग में यदि कोई पीड़ा है तो थोड़ा सा प्रयास उसे दूर कर सकता है । ५।१४।२३ तारीख को भगिनी सुख वाणी में ओज व सौष्ठवता, वचन सिद्धि, त्वचा या चर्म रोग से मुक्ति तथा हाथ-पांव सम्बन्धी यदि कोई भी रोग है तो उससे छुटकारा पायेंगे इसी प्रकार ९।१८।२७ को बहिन सुख में श्रेष्ठता, शक्ति वृद्धि, माँस-मज्जा सम्बन्धी आराम व पेट से पीठ तक के रोग दूर होंगे ही ।

भाग्योदय—यदि आपको २४वां किंवा २५वां वर्ष चल रहा

है तो भाग्योदय के लिए १।१०।१९।२८ तारीख को सफल प्रयास कर सकते हैं इसी प्रकार ५।१४।२३ तारीख को ३५।३६ वर्ष की होने की स्थिति में एवं यदि ३० से ३२ के मध्य आयु है तो आप ९।१८।२७ तारीख को प्रयास करें सफलता अर्पित करेंगे।

यंत्र व मंत्र—आप १।१०।१९।२८ तारीख के दिन भोज पत्र पर निम्न यन्त्र प्रातःकाल के समय केशर द्वारा कमल की डंडी से १०८ बार लिखें एवं उन्हें जलाशय में प्रवाहित कर दें यन्त्र लेखन के साथ-साथ निम्न मन्त्र का जाप भी निरंतर करते रहें।

यंत्र

८	१	६
३	५	७
४	९	२

मंत्र—ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो विवेशयन्नमूर्त मर्त्यंच। हिरण्येन चक्षुषा देवो याति भुवनानि पश्यन्।

दान—माणिक्य, स्वर्ण, ताम्र, गेहूँ, गुड़, घी, रक्त वस्त्र, रक्त-पुष्प, केनर, पुष्प, रक्त चन्दन, धेनु आदि। तारीख ५।१४।२३ को आप निम्न यन्त्र को १०८ बार भोजपत्र पर लिख कर जल में प्रवाहित करें तथा निम्न मन्त्र का जाप भी निरन्तर करते रहें—

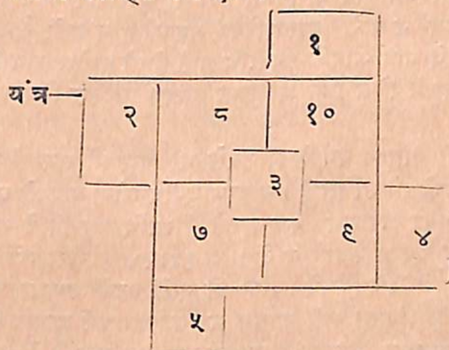
यंत्र—

९	४	११
१०	८	६
५	१२	७

मंत्र—ॐ उद् बुध्यस्वा ऽ ने प्रति जागृहि त्वमिष्टा पूतैस घुं सृजेथामयं च। अस्मिन् सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत।

दान—पन्ना, स्वर्ण, मूँगा, कांस्य पात्र, घृत, शक्कर, कर्पूर, हरित वस्त्र, हाथी दांत, पंचरत्नादि।

तारीख ६।१८।२७ को आप निम्न यंत्र पूर्वोक्त प्रकार से बना कर जल में प्रवाहित करें एवं मंत्र जपें—



दान—मूँगा-स्वर्ण, गुड़, गेहूँ, रक्त पुष्प, लाल वस्त्र ताम्र, मसूर, घृत, कनेर पुष्प, रक्त चंदन, केशरादि।

मंत्र—ॐ अग्निर्मूवा दिव: कलुत्पति पृथिव्या ऽ अयम्। अपा घुं रेता घुं सिजिन्विति।

आपको ज्ञात होगा अंक ६ आपका शत्रु है फलतः ६।१५ व २४ तारीखें शुभ फल प्रदान नहीं कर सकतीं। इन तिथियों को शुभ कार्य करने से यथा प्रयास बचें और मूलतः यदि ६।१५।२४ तारीख को शुक्रवार हो तब तो अवश्य ही और अधिक सावधानी रखनी चाहिए। भूल कर भो यात्रा न करें तथा शुभ कार्य में हाथ न डालें, न ही विशेष कार्य के लिए विशेष व्यक्ति से सम्पर्क ही करें ऐसा करने पर ही शुभत्व ग्रहण करेंगे। यदि ६।१५।२४ तारीख को शुक्रवार है तो और भो अधिक आपको सावधान रहने की आवश्यकता है। अंक छः और शुक्रवार कहीं अधिक कटुता उत्पन्न कर सकता है अस्तु!

वृष व तुला राशि वाले व्यक्ति किंवा कृत्तिका के अंतिम तीन चरण में उत्पन्न व्यक्ति रोहिणी व मृगशिरा के प्रथम दो चरणोत्पन्न

व्यक्ति या जिनके प्रथम नाम के अक्षर इ. उ. ए. ओ. वा. वी. वू. वे. वो हों या तुला राशि वाले जातक चिता के अंतिम दो चरण, स्वाति व विशाखा के १।२।३ चरण, रा. री. रु. रे. रो. ता. ती. तू. ते. नाम से प्रारम्भ होने वाले व्यक्तियों से भूल कर व्यवहार न करें, नए अनुबन्ध न करें, व्यापारिक समझौते न करें, लेन-देन में सावधान रहें वे यदि आपके उच्चाधिकारी हैं तो पूर्णतः सावधानी अपेक्षित हैं। माह में जिस दिन भी उक्त नक्षत्र हों उस दिन सावधान रहें।

वे व्यक्ति जो ब्राह्मण वर्ग के हैं उनसे भी कम ही सम्पर्क रखें-कम क्या न ही रखें तो उचित है। ब्राह्मण वर्गीय लोग आपको धोखा दे सकते हैं। आपका अपमान कर सकते हैं आर्थिक हानि दे सकते हैं। भूल की इन्हें रुपया उधार न दें। ६।१५।२४ तारीख को रंग-रंगीले, चटक रंग ये चितकबरे वस्त्र भी नहीं पहनें अन्यथा उल्टा प्रभाव हो सकता है। अस्तु स्त्री जातक या महिला वर्ग आपके लिए सर्वथा अशुभ व कष्टप्रद, मानहानि का कारण बन सकती हैं, सावधान रहें स्त्री भी और युवा हो तो कहीं अधिक सावधान रहने की जरूरत है। ऐसा न हो कि होम करते हाथ जला बैठें। अंक ७ वाले व्यक्तियों के साथ श्रेष्ठ, ८ के साथ दुःख पूर्ण व ३।४।७ के साथ सामान्य व्यवहार रहेगा।

आपको यदि यात्रा ही करनी है तो भूल कर भी आग्नेय कोण में यात्रा न करें। स्वभाव में लघुता, ओछापन व रजोगुण की प्रधानता रहेगी। काम-वासना का आवेग प्रधान रहेगा। इतर भोग सम्बन्ध बनाने का प्रयास कर अपमान को स्वीकार करेंगे।

जलीय तट पर, आर्द्र स्थानों पर, नदी किनारे अशुभता देंगे। तैरने या स्वीमिंग पूल का उपयोग भूल कर भी न करें चाहें कितना ही अच्छा तैरना आपको आता हो। वसन्त ऋतु आपके लिए और अधिक कष्टप्रद है। मोटे कपड़ों के पहनने का मोह त्यागें। स्वर्ण आभूषण धारण न करें यदि स्वर्ण आभूषण पहने हुए हैं तो उन्हें उतार दें अन्यथा चोरी हो सकते हैं, खो सकते हैं, आपने यदि हीरा पहन रखा है अथवा सफेद पुखराज तो कृपया उसे उतार ही दें मनुष्य मात्र से, अपने आस-पास के वातावरण से सावधान रहें।

शयनागार, कौतुकागार, भोग, भ्रमण, मनोरंजन का मोह भी त्यागे रहें। जो भी अशुभ प्रभाव होना है उसका प्रभाव लगभग एक पक्ष तक परोक्ष-अपरोक्ष रूप में बना रहेगा। संगीत व वाद्य का रिआज न करें। खेल-तमाशे या जादूगरी के खेल देखने न ठहर जायँ अन्यथा अशुभता ही प्राप्त होगी। ग्राम्य भ्रमण व वाद-विवाद में न उलझें तो ही अच्छा है। स्त्री से कलह, वैचारिक मतभेद, परस्पर कटुता पनप सकती है। कामासक्ता में असंतुष्टि, वीर्य नष्ट व गुप्तांग पीड़ा संभव है। यदि २८वां वर्ष चल रहा है तो भाग्योदय वास्ते इन दिनों प्रयास न करें।

आपको हीरा, स्वर्ण, रजत, चावल, मिश्री, दूध, दही, श्वेत वस्त्र, अश्व, चंदन, घृत, सुगन्धित द्रव्य, वाहन का दान या उपभोग नहीं करना चाहिए।

अंक दो आपके साथ ४ और अंक ७ भी आपके साथ साम्य भाव रखते हैं अतः तारीख २।११।२०।२९, ४।१३।२२।३१ तथा ७।१६।२५ अशुभ तो नहीं परन्तु बहुत अधिक शुभकर भी नहीं रहेगी। सामान्य फल ये तारीखें देंगी।

आइये ! इन तिथियों के बारे में शुभाशुभ की जानकारी कर लें।

उपयुक्त तारीखें—२।११।२०।२९ तथा ४।१३।२२।३१ और ७।१६।२५

वार—२।११।२०।२९ को सोमवार, ४।१३।२२।३१ को सोम एवं ७।१६।२५ को भी सोमवार अधिकाधिक लाभदायी है।

राशि—२।११।२०।२९ को कर्क राशि ही. हू. हे. हो. डा. डी. डू. डे. डो नाचाक्षर वाले तथा पुनर्वसु के अंतिम चरण, पुष्य या आश्लेषा में जन्मे व्यक्ति शुभत्व प्रदान करेंगे। अच्छे मित्र सिद्ध होंगे। ४।१३।२२।३१ व ७।१६।२५ को उत्तम फल देंगे।

जाति—उक्त समस्त तारीखों के लिए वैश्य जाति के ही व्यक्ति प्रधानतः अनुकूल व शुभ रहेंगे।

रंग—सफेद, धवल, हल्के रंग के वस्त्र व दैनिक उपयोग में आने वाली वस्तुएँ।

लिंग—स्त्री जातक प्रधानतः उक्त तारीखों में हितैषी होंगी।

अवस्था—युवा

दिशा—वायव्य कोण।

स्वभाव व गुण—चञ्चलता और सत्व गुण की प्रमुखता निरन्तर बनी रहेगी।

तत्व—जलतत्व ऋतु—वर्षा वस्त्र—नवीन

द्रव्य—रजत रत्न—मोती पशु पक्षी—सरी सृप

क्रीडास्थल—जलाशय तट काल समय—क्षणिक प्रभाव

अध्ययन—ज्योतिष, पराविज्ञान, धर्म व दर्शन शास्त्र

कारक स्थल—जलाशय

सुव—माता व मातृ पक्ष, मन व मानसिक शक्ति, रक्त एवं गले से हृदय तक का भाग।

भाग्योदय—२५ वां वर्ष यदि है।

दान—तारीख २।११।२०।२९ को मोती, स्वर्ण रजत, कर्पूर, घृत दूध, दही, मक्खन, मिश्री, चावल, श्वेत वस्त्र, श्वेत पुष्प, श्वेत पदार्थ, शंख, पुस्तक आदि।

४।१३।२२।३१ तारीख को लाल वस्तु व खाद्य पदार्थ ७।१६।२५ तारीख को स्वर्ण, लोहा, पंच धातु, सपृधान, तेलादि।

यंत्र—२।११।२०।२९ तारीख को निम्न यंत्र बनाकर जल में प्रवाहित कर दें। यंत्र अष्टगंध से भोजपत्र पर १०८ बार लिखें तथा कलम अनार की हो।

७	२	९
८	६	४
३	१०	५

तारीख ४।१३।२२।३१ को—

१३	८	१५
१४	१२	१०
९	१६	११

और ७।१६।२५ तारीख को

१४	९	१६
१५	१३	११
१०	१७	१२

मंत्र—उपरोक्त सभी तिथियों के लिए—

ॐ इमं देवा असपन्न घुं सुबद्धं महते क्षत्राय महते ज्येष्ठ यात्र महते ज्यान राज्यायेन्द्रियस्येन्द्रियाय। इमम मुष्यै पुत्रम मुष्यै विश एष वोऽमी राजा सोमो ऽ स्माकं ब्राह्मणानां घुं राजा!

तिथिनुसार शुभाशुभ

तारीख	शुभत्व	तारीख	शुभत्व
१	शुभ	१७	निकृष्ठ
२	सामान्य	१८	शुभ
३	सुन्दर	१९	शुभ
४	सामान्य	२०	सामान्य
५	शुभ	२१	सुन्दर
६	हानिकारक	२२	सामान्य
७	उत्तम	२३	शुभ
८	निकृष्ट	२४	हानिकारक
९	शुभ	२५	उत्तम
१०	शुभ	२६	निकृष्ट
११	सामान्य	२७	शुभ
१२	सुन्दर	२८	शुभ
१३	सामान्य	२९	सामान्य
१४	शुभ	३०	सुन्दर
१५	हानिकारक	३१	सामान्य
१६	उत्तम		

लार्ड बायरन, जार्ज वाशिंगटन, लार्ड बेडेन पॉवेल, रामानुजाचार्य, सेठ जमुनालाल बजाज, मोहन लाल सुखाडिया, थाम्स हक्सले, परवीन बॉबी जयकिशन, वैजयन्तीमाला, फेरेडे, प्रेम धवन, जनरल फ्रैंको, जार्ज इलियट, अशोक कुमार सभी तो अंक चार से भली प्रकार प्रभावित व्यक्ति हैं। आप सभी व्यक्ति जो किसी भी माह की चार तेरह, बाइस व इकतीस तारीख को जन्मे हैं आपका अंक चार है तथा आपके सम्पूर्ण जीवन पर स्वामित्व हर्षल का है अर्थात् आपके जीवन का प्रतिनिधित्व हर्षल कर रहा है। हर्षल नामक अंग्रेज वैज्ञानिक द्वारा हर्षल ग्रह का पता लगाने के कारण ही ग्रह का नाम भी हर्षल रखा गया।

अति मंद गतिमान इस ग्रह को भारतीय ज्योर्विदों ने महत्व नहीं दिया है कारण १२ राशियों का एक भ्रमण यह ८४ वर्षों में पूरा कर पाता है। लगभग ७ वर्ष तक यह एक ही राशि पर बना रहता है। इसकी स्वयं की राशि यद्यपि कुंभ है तथापि स्वभाव शनि तुल्य न होकर सूर्य व राहु के सदृश है।

यह इस अंक की विशेषता है कि इससे प्रभावित व्यक्ति को जीवन में बार-बार उथल-पुथल, सहसा प्रगति, अकस्मात घटना-दुर्घटना, आश्चर्यजनक कार्य, असंभावित घटनाएँ आजीवन, निरन्तर, अबाधगति से संघर्षरत रहना आपकी विशेषता है। स्वभाव से आप तेज, सदैव कुछ न कुछ करते रहने की आपकी आदत है। बार-बार उतार-और-चढ़ाव आपके जीवन में आते हैं। आज का भिखारी कल लक्ष्याधिपति हो जाय तो भी आश्चर्य नहीं करना चाहिए। आप तोड़-फोड़ उथल-पुथल, अच्छा भला करते रहेंगे। धन का गमनागमन, उन्नति-पतन, यश-अपयश, हानि-लाभ, सौभाग्य और दुर्भाग्य सब कुछ होता ही नजर आता है। आज स्वामी भक्त है तो कल विद्रोही, आज देशभक्त, कल देशद्रोही भी बनते समय नहीं लगता। जीवन में आप शान्ति धारण करके बैठ जाँय यह सम्भव नहीं है अतः निरन्तर क्रियाशील रहेंगे। आप बीच में कहीं नहीं हैं उस पार या इस पार। सर्वोच्च उन्नति के शिखर पर या पवन के गहरे गर्त्त में।

सामान्य रूप रंग, सामान्य कद-काठी, साधारण व्यक्तित्व पर जीवन निर्माण में धर्मपत्नी का बहुत बड़ा हाथ है आप पूर्ण सामाजिक व्यक्ति हैं अतः सामाजिकता का पूरा-पूरा निर्वाह करते हैं। सामाजिक गुण आपमें भरपूर हैं। धर्म व धार्मिक क्रिया-कलापों में आपको आगे की पंक्ति में देखा जा सकता है। बढ़-चढ़ कर दैनिक कार्यों में भाग लेते हैं। स्वयं की गांठ का पैसा खर्च करके भी कार्य सम्पन्न करते हैं चाहे मूर्ख ही कहलाएँ। सामान्य व्यक्ति होकर भी आपकी आँखों में कुछ ऐसा जादू है कि लोग बरबस आपकी ओर आकर्षित हो ही जाते हैं। कुछ क्रोधी, तुनक मिजाज 'क्षणे रुष्टा क्षणे तुष्टा' वाली बात आप पर लागू होती है। स्वभावतः अस्थिर मन शीघ्र आपे से बाहर होने वाले हैं। सुनिश्चित योजना बना कर कार्य करना आपको अभीष्ट नहीं। अल्पभावी व ठोस बात के कहने वाले आप व्यर्थ बकवास, कुतर्क, तकरार या ऊल-जलूप बात, व्यर्थ की गप्पे मारना आप पसंद नहीं करते। आपको मात्र अपना कार्य ही प्रिय रहता है। प्रदर्शन या दिखावा या अहंमन्यता भी आपको प्रिय नहीं है।

आपका व्यवहार अपनी आयु से आगे का रहता है समय से अधिक आयु वाले के जैसा आपका व्यवहार होता है शरीर कोमलांगी न होकर सुदृढ़ व ठोस रहता है। घनी गहरी भौहें, गौरांग, मझौला कद रहता है।

आपको यदि रहस्यमय भी कहा जाय तो बुरा नहीं होगा। किसी भी बात को अन्तर्मन में छुपा कर रखना या अपना भेद किसी को न देने की कला आपसे सीखी जा सकती है। कल क्या करेंगे यह कोई जान नहीं सकता। विरोधी तो दूर की बात रही माता-पिता, पत्नी, मित्र कोई भी मन का भेद नहीं जान सकता। आपके जीवन में एक शत्रु परास्त होता है तो चार नए शत्रु उभर कर सामने आते हैं। पर............पर इतना निश्चित है कि ये शत्रु पीठ के पीछे ही कुचक्र रचते हैं सामने नहीं आ सकते अन्यथा हार सुनिश्चित है। सामने आने पर उन्हें मुँह की खानी पड़ती है। जीवन व बाधाओं का चोली दामन का साथ है। कोई काम बिना बाधा के तो पूरा होता ही नहीं हैं चाहे वह छोटा हो या

बड़ा। काम पूरा होते होते भी कोई ऐसा विघ्न आ ही जाता है कि कार्य में अनावश्यक देर हो जाती है। इन्हीं बाधाओं व संघर्ष के कारण आपके स्वभाव में चिड़चिड़ापन घर कर गया है।

आप अपने सामने पड़ने वाले व्यक्ति को सही सही बात कह जाते हैं चाहे व आलोचना करे या प्रसंशा। इससे कई लोग नाराज भी हो जाते हैं पर आप उसकी परवाह कब करते हैं? किसी की प्रशंसा व चाटुकारिता आपको पसन्द नहीं। छोटी-छोटी बातों से आप चिढ़ जाते हैं, व्यर्थ समय खोना आपको अभीष्ट नहीं अतः कम ही सामाजिकता का निर्वाह कर सकते हैं। व्यर्थ घूमना, मित्र मण्डली से घिरे रहना या घर-घर जाना भी पसन्द नहीं करते। स्वयं का हित साधन आप अधिक सोचते हैं। जिद्दी व हठधर्मिता भी आपमें पाई जाती है।

दूसरों को सलाह देना, विचार-विमर्श करना व तदुपरान्त स्वेच्छानुसार कार्य करना आपके व्यक्तित्व की विशेषता है। त्वरित निर्णय न लेकर एक समस्या पर घण्टों बैठे बैठे सोचते रहना व इतने पर भी समस्या का हल आप ढूँढ़ नहीं पाते। आप न तो यह निर्णय ले पाते हैं कि मुझे उक्त कार्य कब आरम्भ करना है? करना भी है या नहीं? लाभ होगा या हानि।

आपमें कला, साहित्य के प्रति कत्तई स्नेह या आदर नहीं रहता। सत्यतः आप घोर भौतिकवादी हैं। जीवन में कठोर संघर्ष करने के कारण कला के तन्तु मुर्झा चुके हैं, मर चुके हैं। पर आप एक सुयोग्य प्रदर्शनकारी हैं अतः इस प्रकार का प्रदर्शन करते हैं कि लोग धोखे में आ जाते हैं। आपके प्रति लोगों को सदैव भ्रम बना रहता है। आपकी आर्थिक स्थिति के बारे में सही मूल्यांकन कोई नहीं कर पाता। अनर्गल खर्च आप करते रहते हैं और उन्नति के मार्ग में यह बाधक है। जीवन मे अकस्मात धन प्राप्ति का योग भी बैठता है पर फिर भी वृद्धावस्था कठोरतम श्रम की परिचायक है।

आप में मित्र बनाने की अद्भुत कला है, मित्र बनाने में चतुर हैं। मीठा बोल जाते हैं, अच्छा व्यवहार भी कर लेते हैं पर यह सब प्रभाव क्षणिक ही रहता है। वास्तविकता का अन्दाज कोई

लगा नहीं पाता है। अपना मतलब साधने के लिए आप आत्मीयता दिखा लेते हैं और बाद में शान्त !

आप वचनों को निभाने वाले भी हैं यह सुन्दर गुण है। जिस कार्य के लिए वचन दे बैठते हैं उसे स्वयं हानि उठा कर भी पूरा करते हैं। श्रम-शक्ति व अर्थ की तब परवाह नहीं करते। अपने लिए निर्णय से फिर डिगते नहीं है। यही कारण है कि लोग आप पर पूर्ण आस्थावान रहते हैं, सम्बन्ध निरन्तर बने रहते हैं।

जहाँ तक परिवार का प्रश्न है प्रायः कर आपको पारिवारिक स्नेह नहीं मिलता। पिता के विचार मेल नहीं खाते अथवा पिता का अभाव रहता है। माता के स्नेह से संतुष्टि नहीं मिलती और घरेलू वातावरण कलहप्रद ही बना रहता है। भ्रातृ सुख का अभाव व भाइयों के होने पर भी उन्हें आपसे संतुष्टि नही होती। वे आपकी कोई सहायता किसी प्रकार नहीं करते। मित्र प्रायः आपके स्वार्थी खुदगर्ज व मतलबी हैं उनसे पूर्ण सावधान रहने की सलाह दूँगा। कोई आश्चर्य नहीं जब समय पड़ने पर मित्र धोखा दे जाये। सन्तान दर्ददायक, पथ-भ्रष्ट एवं विरोधी है आपको अतः पारिवारिक स्नेह की आकांक्षा आप न रखें यही श्रेष्ठ है। उग्रता, जल्दबाजी और हड़बड़ाहट में आप अपनी ही हानि कर बैठते हैं। प्रगति का मार्ग इसी कारण अवरुद्ध हो जाता है धनोपार्जन में रुकावट, परस्पर वैमनस्यता, व्यर्थ की आलोचना के कारण भी आप दुःखी रहते हैं। ४० वर्ष की आयु आस-पास स्मरण शक्ति कमजोर होने लगती है। पत्नी प्रायः पेट, आंत, स्नायु-मण्डल, गुप्तांग रोग से पीड़ित रहती हैं।

आइये, अब आपकी कुछ कमियों व दोषों की ओर भी दृष्टिपात कर लें—

(i) आप अपना गुप्त भेद भावुकता में आकर दूसरों को दे देते हैं जो सर्वथा उचित नहीं।

(ii) दूसरों के मन की बात जानने के लिए आप हर संभव प्रयास कर लेते हैं आजी जी, चापलूसी, ठकुरसुहाती, दाँव-पेच यह प्रयास आपके व्यक्तित्व को धूमिल करते हैं।

(iii) आप में जो स्वार्थ का भाव है उस पर भी अंकुश करने

की आवश्यकता है।

(iv) जहाँ आप दूसरों से सहायता की अपेक्षा करते हैं वहाँ दूसरों की सहायता करने का भी प्रयास करें।

(v) माना कि आपको प्रेम, प्यार, स्नेह, वात्सल्य, मोह, लाड नहीं मिला, पर इसका अर्थ यह नहीं कि आप परिवार के विरोधी ही बन जायें और हर वक्त कलह का वातावरण बनाए रखें।

(vi) दया का ढोंग रचते हुए बनावटी मुखौटा जो चेहरे पर चढ़ाए रखते हैं उसे उतार फेंके अन्यथा ढोल की पोल चुपी नहीं रहती।

(vii) कदम-कदम पर नकारात्मक उत्तर देना भी न्यायोचित्त नहीं, मिला-जुला आश्वासन दें और आश्वासन देने के बाद उस कार्य हेतु प्रयास भी करें। अपनी चालाकी को भी नियन्त्रित करने की आवश्यकता है। बदले की दुर्भावना को यथा प्रयास हटाने का प्रयास करें।

(viii) अधिक प्रदर्शन, सत्य से दूर व असत्य संभाषण, धोखा, फरेब की प्रवृत्ति भी छोड़ें। आप स्त्री जातक हैं तो अवश्य ही प्रशंसा की पात्र हैं, आपने आज तक संघर्ष झेला है। कठिनाइयों व समस्याओं का भी सामना किया है। साहस-धैर्य व अध्यवसाय के बल पर आगे बढ़ रही हैं यह एक अच्छी बात है। बाल्यावस्था में स्नेह की भूखी रहीं, युवावस्था में संघर्ष पर संघर्ष कर जूँझती रहीं अतः कई बार स्वयं को टूटता हुआ महसूस कर रही हैं पर आप में आत्मिक शक्ति इतनी प्रबल है कि आप टूट नहीं सकतीं।

प्रगति की गति धीमी पर ठोस धरातल पर आधारित है। स्थायी प्रगति आपको उन्नत जीवन जीने में मदद देगी ही ईर्ष्याभाव जो आप में है वह प्रगति में बाधक है उसे येन केन छोड़ने का प्रयास करें। अकस्मात घटने वाली घटनाओं से भी कुछ सीखने का प्रयास करें।

आपके सोचने-समझने व कार्य करने का तरीका सदैव से व्यावहारिक रहा है इस व्यावहारिक पक्ष को आप और अधिक बढ़ावें। सस्ती भावुकता आप में नहीं है यह एक अच्छा गुण है। आप इसी गुण के बल पर अपने जीवन में सफल सिद्ध होंगी। कोई भी कार्य

करने से पूर्व हानि-लाभ यश-अपयश, भला-बुरा, उपयोगिता, अनुपयोगिता के बारे में भली प्रकार सोच और समझ लेती हैं।

सादा जीवन उच्च विचार की आप समर्थक हैं तड़क-भड़क, व्यर्थ की उठा-पटक आपको रुचिकर नहीं है व्यर्थ प्रदर्शन व चकाचौंध से भी दूर ही दूर बनी रहती हैं अतः गृहस्थ का बजट सदैव सन्तुलित रहता है। दृष्टिकोण आपका परंपरावादी तथा विचारों से दृढ़ हैं जिस लीक को पकड़ लें अन्त तक उसे निभाए चली जाती है। कार्य करने का आपका अपना एक अलग ढंग है। आपको अन्य लोग चाहे रुढ़िवादी ही क्यों न कहें पर आप उसकी परवाह न कर अपना कार्य करती रहती हैं। अपनी आदतों व रुचियों के बारे में परिवर्तन नहीं करती, चाहे जो स्थान हो या चाहे जो परिस्थिति हो। स्वभावतः उग्र व क्रोधी है! आपको अपने जीवन में शराब, स्प्रिट, तेल, केरोसिन अर्क, इत्र, रेलविभाग, वायुसेना, जलदाय विभाग, कुलीगिरी, टेक्नीशियन, रंग-साज, इन्जीनियरिंग, नक्सा नवीश दर्जी, बढईगिरी का कार्य, छापे का कार्य, बाबू, टेलिफोन आपरेटर, स्टेनो, टाइपिस्ट, शिल्पकार, पत्रकार, संग्रहकर्ता विद्यु त कार्य, भाषणकर्ता, उपदेशक, राज्य कर्मचारी, खान मजदूर, ठेकेदार, मोटर-चालक, आँखों का डाक्टर आर्चिटेक्ट, अर्थशास्त्रज्ञ, तार-डाक विभाग का उच्चाधिकारी राजनीतिज्ञ होने का प्रयास करें सर्वाधिक सफलता अर्जित कर सकेंगे।

सूर्य या आदित्य आंग्ल में Sunday आपका वार है। सिंह राशि मघा, पूर्वा फाल्गुनी और उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र के प्रथम चरण व तत्सम्बन्धी नक्षत्र में उत्पन्न व्यक्ति मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे, टो नाम से उत्पन्न व्यक्ति आपके सहायक, मित्र, सहयोगी और सच्चे लाभदायी सिद्ध होंगे। अतः प्रतिमाह इन्हीं नक्षत्रों में उत्पन्न व्यक्ति आपको भरपूर सहायता प्रदान करेंगे। हर सम्भव प्रयास कर आप क्षत्रिय जाति के लोगों से सम्पर्क बनाए रखें और प्रधानतः ४।१३।२२।३१ व १।१०।१६।२८ तारीख को तो ऐसा करेंगे ही।

आप घर के ड्राइंग रूम की दीवारों का रंग, पर्दे, जालियाँ, सोफासेट, तकिये का गिलाफ, चद्दर, बेडशीट आदि कालिमायुक्त

लालरंग की रखें तो उत्तम होगा तथा उपरोक्त ४ व १ मूलांक वाली तारीखों को कालिमायुक्त लालरंग के वस्त्र ही पहनें तो उत्तम है। पुरुष वर्ग आपको सर्वाधिक सहायक रहेंगे। आपके हित चिंतन में पुरुष वर्ग सहायक होगा। जीवन निर्माण व भाग्योदय में वृद्ध पुरुष सहायक सिद्ध होंगे।

अंक ९ आपके लिए सर्वोत्तम फलदायी तथा अंक छः निम्नता सूचक, कष्टप्रद व विपत्ति का कारक होगा। अंक ३ और ७ सहायक, ८ शत्रुता कारक एवं अंक १ सामान्य फलदायी रहेगा। अंक ३ के साथ सात्विक भाव ७ के साथ राजस व ९ के साथ तामसी व्यवहार रहेगा। अंक २।४ व ५ समान व्यवहार रखेंगे। कृति का उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा ठीक व्यवहार कारक तथा भरणी, पूर्वा फाल्गुनी, पूर्वाषाढा, पुष्य, अनुराधा, उत्तरा भाद्रपद शत्रु नक्षत्र हैं.

पूर्व दिशा का स्वामित्व रखने के कारण पूर्व में यात्रा करना, नौकरी या व्यवसाय के लिए जाना, सम्पर्क बढ़ाना, लाइफ पार्टनर ढूँढना उत्तम रहता है। सब मिलाकर पूर्वदिशा सौभाग्यवर्द्धक है अतः हर शुभ कार्य के लिए पूर्वदिशा को प्राथमिकता दें। स्वभाव में स्थिरता व सत्व गुणों का आपमें प्राबल्य रहेगा। अतः आप सात्विक भाव को बढ़ाने का और अधिक प्रयास करें।

अग्नि तत्वों से प्रभावित, ग्रीष्म ऋतु आपके लिए सौभाग्य वर्द्धक, हितकारक है। मोटे वस्त्र धारण करना ताम्र व माणिक्य रत्न तथा पक्षी जगत् सहायक होगा। आप ताम्रपात्र को दैनिक उपयोग में अधिकाधिक लावें। सूर्य को ताम्रपात्र से अर्घ्य दें तथा व्रत रखें यह ठीक होगा। हर समय माणिक्य रत्न अंगूठी के रूप में पहने रहें।

राजनीतिशास्त्र का अध्ययन-अध्यापन व वन प्रदेश-पर्वतीय क्षेत्र को कार्यस्थल अवश्य बनाना चाहिए। पिता व पितृ पक्ष, आत्मा, अस्थि व सिर से मुख तक का भाग अंक चार से विशेष प्रभावित रहता है। अतः आत्मशुद्धि का प्रयास करें पिता आपकी उन्नति में अधिक सहायक होंगे। २४ या २५वां वर्ष यदि चल रहा है तो आपको भाग्योदय के वास्ते प्रयास करना चाहिए।

आप एक कार्य करें वह यह कि सूर्य की उपासना करें तथा

नित्य निम्न मन्त्र का नियमपूर्वक निश्चित संख्या में जाप करें।

मन्त्र—"ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशपन्नमूर्तं मर्त्यंच। हिरण्येन चक्षुषा देवो याति भुवनानि पश्यन्॥

यन्त्र—

६	१	८
७	५	३
२	९	४

इस यन्त्र को नित्य प्रातः पवित्र हो धुले वस्त्र पहन कर भोजपत्र पर लिखें तथा लिखने के बाद (१०८ बार) उन भोजपत्रों को जल में प्रवाहित कर दें। प्रधानतः १।१०।१९।२८ तारीख को यह प्रयोग अवश्य करें तथा रोगावस्था में काँस की थाली में यह लिखें तथा उक्त मंत्र का जाप करें तदुपरान्त वह जल पी लें। शीघ्र ही रोग से मुक्ति प्राप्त कर सकेंगे।

दान—विपत्ति काल में माणिक्य, स्वर्ण, ताम्र, गेहूँ, कंकुम रोली, गुड़, घृत, लाल वस्त्र, रक्त पुष्प, मसूर, कनेर पुष्प धेनु, रक्त चंदन का श्रद्धापूर्वक दान करें।

आइये ! अब शेष तिथियों के बारे में भी स्पष्टीकरण करें।

९।१८ और २७ तारीख आपके लिए भाग्योदयकारी है और मूलतः सितम्बर माह आपको किसी भी प्रकार के शुभ कार्य हित साधना, भाग्योध्य श्रीवृद्धि इष्ट सिद्धि धनलाभ, व्यवसाय, नए कार्य के शुभारंभ, किसी से मिलने, प्रेम सम्बन्ध, समस्या समाधान, माया, लाइफ पार्टनर ढूँढने, भूमि क्रय-विक्रय करने, नवनिर्माण के लिए इससे बढ़ कर तारीख नहीं मिल सकती। यदि उक्त तारीख को मंगलवार का संयोग हो जाय तो सोने में सुगन्ध मानना चाहिए। मंगल स्वभावतः क्रूर व अशुभ है पर आपके लिए सर्वथा सौभाग्यसूचक है।

मेष राशि पर चंद्रमा आने पर या वृश्चिक पर तथा वे समस्त व्यक्ति जो अश्विनी, भरणी व कृतिका नक्षत्र के प्रथम चरण में

जन्मे हैं या विशाखा के अंतिम चरण अनुराधा या ज्येष्ठा नक्षत्र में जन्में या जिनके नामाक्षर का प्रथमाक्षर चू. चे. चो. ला. ली. लू. ले. लो. अ, तो ना नी. नू. ने. नो. या. या. यू हैं वे आपके सच्चे साथी और हमदर्द होंगे। आपके भाग्योदय में सहायक, श्रीवृद्धि कारक तथा विपत्ति काल में मदद देंगे।

९।१८।२७ तारीख को किसी क्षत्रिय जाति के व्यक्ति से अपना कोई काम निकालना है या मदद प्राप्त करना है, किसी प्रकार की सौदेबाजी या विचार-विमर्श, धर्म चर्चा या मतलब साधना हो, व्यापारिक अनुबंधन करना हो तो क्षत्रिय जाति का व्यक्ति सर्वाधिक अनुकूल रहेगा।

पर्दे, वस्त्र, जालिया, तकिये के गिलाफ, बेडशीट, चद्दर, रुमाल, मोजे, बूट, पेन जैसी दैनिक उपयोग की वस्तुएँ गौरवर्ण युक्त लाल, चटक रंग, काफूरी रंग, चॉकलेटी रंग व भूरे रंग की रखना अधिक शुभ व अनुकूल होगा। यह रंग आपके लिए सौभाग्य सूचक व भाग्यवर्द्धक है। पुरुष जातक व अल्पायु, बालक व किशोरावस्था के व्यक्ति और अच्छे सहायक सिद्ध होंगे। इनसे मदद लें।

आप यदि किसी उद्देश्य विशेष से यात्रा करना चाहते हैं या कहीं जाना है, किसी से मिलना है तो आप के वास्ते ९।१८।२७ तारीख को दक्षिण दिशा सर्वाधिक शुभ व अनुकूल है। स्वभाव में क्रोधातिरेक, उत्तेजना व उग्रता का भाव प्रधानता लिये रहेगा जिस पर आपको नियन्त्रण रखना चाहिए। तमो गुण की प्रबलता के कारण आप सहसा उत्तेजित हो सकते हैं और स्वयं का अहित कर सकते हैं। इस प्रक्रिया को आपको रोकने का भी प्रयास करना चाहिए।

अग्नि तत्व की प्रधानता के कारण अग्नि प्रधान स्थान, गर्म स्थान, विद्युत कार्य-स्थल, तेल व इंधनयुक्त स्थान आपकों सुविधा पूर्ण रहेंगे। ग्रीष्म ऋतु एवं जले हुए व जीर्ण-शीर्ण वस्त्रों का उपयोग कर सकते हैं।

संभव हो सकता है तो आप ९।१८।२७ तारीख को स्वर्ण आभूषण धारण करें तथा प्रवाल किसी भी प्रकार प्राप्त कर पहनें

यह उपयुक्त रहेगा। चतुष्पद प्राणी आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। पशु जगत् विशेष सहायक होगा। इनके क्रय-विक्रय व लेन-देन से यथेष्ठ लाभ अर्जित करेंगे।

ज्वलनशील पदार्थ व स्थल एवं दैनिक प्रभाव अपना प्रभुत्व बनाए रखेगा। अतः उसका लाभ उठावें वेदाध्ययन और धार्मिक चर्चा करना श्रेयस्कर रहेगा। युद्धाभ्यास, सैन्यवृद्धि व सैनिक कार्य शुभत्व देंगे। अस्तु पर्वतीय व वनीय स्थल यदि कार्य-क्षेत्र रहे तो क्या कहना बहिन व बहनोई व बहिन का परिवार आपका शुभत्व देगा। उनका कोई कार्य रुका हुआ है तो भाई होने के नाते आप उसके लिए प्रयास करें, सफलता कदम चूमेगी। शक्ति-ओज व शौर्य भाव प्रमुख रूप से प्रभुत्व जमाए रखेगा। मांस-मज्जा सम्बन्धी रोग यदि है तो उस पर आप नियन्त्रण कर सकेंगे तथा पेट-पीठ-रीढ़ की हड्डो रक्त विकारादि से पीड़ित हैं तो रोग से मुक्ति मिलेगी।

यदि ३० से ३२ वर्षायु के मध्य की अवस्था चल रही है तो निश्चय ही भाग्योदय का समय है, आप प्रयास करें, प्रार्थना-पत्र दें, उच्चाधिकारियों से मिलें अथवा किसी के माध्यम से उपाय करें, सफलता अवश्य ही मिलेगी। भाग्यवश हर कार्य सफल होंगे।

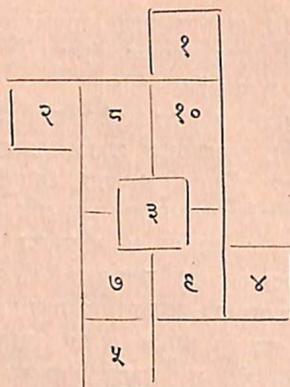
आपको चाहिए कि आप आपत्ति-विपत्ति आने पर, कोई समस्या आने पर, संकटावस्था में मूँगा, स्वर्ण गुण, गेहूँ, रक्त पुष्प, रक्त वस्त्र, ताम्र, मसूर, घृत, कनेर पुष्प, रक्त चंदन, केशरादि का दान करें।

प्रातःकाल के समय निम्न मन्त्र का जाप करते हुए निम्न यंत्र अष्टगंध की स्याही से १०८ बार भोजपत्र पर बना कर जल में प्रवाहित कर दें तथा रोगग्रस्त होने पर काँस की थालो में लिख कर शुद्ध जल से धोकर वह जल घर के उस रुग्ण को पिला दें, रोग-मुक्ति हो जायेंगी। (यंत्र पृष्ठ ११८ पर)

मन्त्र—ॐ अग्निर्मूधा दिवः ककुत्पति पृथिव्या ऽ अयम्। अपा धुं रेता धुं सिजिन्विति।

आपको भली प्रकार ज्ञात होगा कि अंक छः आपका शत्रु है अतः ६।१५।२४ तारीख को आवश्यकता से अधिक सावधान रहना

यंत्र—



है, ठीक इसी प्रकार ८ अंक से भी शत्रुता का व्यवहार है अतः ८।२७।२६ तारीख को भी अवश्य सावधान रहना है।

प्रतिकूल तारीख—(१) ६।१५।२४ तथा ८।१७।२६

वार—शुक्र और शनिश्चर वार और प्रधानतः ६।१५।२४ तारीख को शुक्रवार व ८।१७।२६ तारीख को शनिश्चर वार सर्वथा प्रतिकूल फल प्रदान करेंगे।

प्रतिकूल राशि-जन्म नक्षत्र तथा नामाक्षर—

६।१५।२४ तारीख को वृष व तुला राशि इ. उ. ए. ओ. वा. वी. वू. वे. वो, रा. री. रु. रे. रो. ता. ती. तू. ते. तो नामाक्षर एवं कृतिका नक्षत्र के अन्तिम ३ चरण, रोहिणी व मृगशिरा के प्रथम दो चरण, चित्रा के अन्तिम दो चरण स्वाति एवं विशाखा के प्रारम्भिक तीन चरण सर्वथा प्रतिकूल फल देंगे। ठीक इसी प्रकार ८।१७।२६ तारीख को मकर व कुंभ राशि वाले व्यक्ति अथवा उत्तराषाढ़ा के अन्तिम ३ चरण, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा व पूर्वाभाद्रपद के प्रथम तीन चरण में जन्में व्यक्ति, भो. जा. जी, खी. खू. खे. खो. गा. गी. गू. गे. गो. सा. सी. सू. से. सो. दा नाम अक्षर से उत्पन्न व्यक्ति शत्रुता पूर्ण व्यवहार करेंगे, धोखा देखें, व्यापार में हानि तथा मानापमान के कारण बनेंगे। भूल कर भी इनसे संपर्क न बनाएँ।

रंग—६।१५।२४ तारीख को भोजन, वस्त्र या दैनिक उपयोग की वस्तु में किसी प्रकार चितकबरा रंग, छटक रंग या भड़कीला रंग अपने काम में न लायें। ठीक इसी प्रकार हरा व काला रंग ८।१७।२६ तारीख को काम में न लाए।

लिंग—आपको चाहिए कि आप ६।१५।२४ तारीख को भूल कर भी स्त्री जाति से संसर्ग या संपर्क न करें। स्त्री जाति ही आपकी पराजय का कारण बनेगी तथा इन्हीं से धोखा या अपमान मिल सकता है। ८।१७।२६ तारीख को किसी से भी विशेष सम्पर्क न कर शान्त रहें।

अवस्था—६ अंक वाली तारीखों को युवा व ८ अंक वाली तारीखों को अतिवृद्ध जातक से पुरुष से स्त्री से अपने किसी व्यक्तिगत कार्य के लिए सलाह न लें या सम्पर्क न करें, यह ठीक रहेगा।

सात्विक भाव—३ अंक से सात्विक विचार बने रहेंगे।

राजस भाव—७ अंक से राजस भाव बना रहेगा और

तामस भाव—९ अंक के साथ परस्पर तामसी वृत्ती रहेगी।

दिशा—६।१५।२४ तारीख को आग्नेय कोण पूर्व-दक्षिण) दिशा सर्वथा विपरीत एवं ८।१७।२६ तारीख को पश्चिम दिशा में भूल कर भी यात्रा न करें या किसी से मिलने जाँय। यदि स्थानान्तरण हो गया है एवं स्थान नए पर जाना ही है तो इस ओर आज के दिन न जायें।

स्वभाव—६।१५।२४ तारीख को स्वभाव में ठंडापन, मिजाज में उदासीनता, लघुता, स्वयं के प्रति पराजय भाव रहेगा। इसी प्रकार ८।१७।२६ तारीख को स्वभाव में तीक्ष्णता तेजी व क्रोध का भाव रहेगा।

गुण—६।१५।२४ तारीख को रजोगुण की आप में प्रधानता बनी रहने के कारण भोग व सेक्स की भावना बढ़ जायेगी तथा व्यर्थ मनोरंजनादि, खेल-तमाशे में स्वस्थ्य, शक्ति व धन का दुरुपयोग करेंगे। वीर्य नाश व गुप्ताङ्ग सम्बन्धी यदि कोई रोग हैं तो वे और अधिक उभरेंगे। इसी प्रकार ८।१७।२६ को तमोगुण प्रधानता के कारण व्यर्थ क्रोध, झुंझलाहट, परेशानी व लड़ाई-झगड़ा

होता रहेगा ।

तत्व—६।१५।२४ तारीख को जल तत्व की प्रधानता के कारण तैरने का प्रयास करें नहीं, जल से दूर रहें तथा जलीय स्थान ठण्डे स्थल, आर्द्रता युक्त स्थल परेशानी देंगे अतः जल से सावधान रहें। ८।१७।२६ तारीख को वायु तत्व की प्रधानता रहेगी। लू लगने, वायु रोग, जोड़ दर्द, गठिया पीड़ा दे सकता है।

ऋतु—६।१५।२४ तारीख वसन्त में और ८।१७।२६ तारीख शिशिर ऋतु में और अधिक दुविधापूर्ण, परेशानीमूलक रहेगी।

वस्त्र—६।१५।२४ को मजबूत व मोटे, खद्दर के वस्त्र तथा ८।१७।२६ तारीख को जीर्ण-वस्त्र धारण करना सर्वथा दोषपूर्ण है।

द्रव्य—६ अंक वाली तारीख को अर्थात् ६।१५।२४ तारीख को स्वर्ण, स्वर्णाभूषण या अन्य अंगूठी आदि धारण न करे, ऐसा किया जाने पर उल्टे परिणाम भोगने पड़ सकते हैं। ८ अंक वाली तारीखों को अर्थात् ८।१७।२६ तारीख को लोहे की किसी वस्तु को उपयोग में न लाए, अस्त्र-शस्त्र, औजार, चाकू, ब्लेड आदि का उपयोग करते समय पूर्ण सावधान रहेंगे। हो सकता है चोट लग जाये या अन्य प्रकार से अहित।

रत्न—६।१५।२४ को हीरा न पहने, नाक, कान या अंगूठी में हीरा धारण किए हुए हैं तो कृपया उसे उतार कर रख दें एवं ८।१७।२६ तारीख को नीलम की अंगूठी उतार कर रख दें यह आपके वास्ते प्राण-घातक हो सकती है।

पशु-पक्षी—६।१५।२४ को मनुष्य मात्र व पक्षी कुल से और ८।१७।२६ को पशुओं से कहीं अधिक सावधान रहें।

क्रीड़ास्थल—तारीख ६।१५।२४ को शयनागार, मनोरंजन-स्थल, कौतुकागार, क्रीड़ागार, सिनेमा, जादू-टोना, खेल-तमाशे, बाजीगरी के कार्यों को देखना, करना या उपयोग सर्वथा अशुभ, प्रतिकूल व दोषपूर्ण है तथा ८।१७।२६ तारीख को कूड़ाघर, जुआ-घर, वेश्यालय, मदिरालय, डांसघर आदि का उपयोग नहीं किया जाना चाहिए अन्यथा अहित ही अहित होगा।

प्रभाव—६।१५।२४ तारीख को हुए कार्य का प्रभाव १ पक्ष

व ८।१७।२६ को हुए कार्य का प्रभाव वर्ष पर्यन्त रहेगा।

अध्ययन—६।१५।२४ को संगीत, वाद्य, फिल्म संबंधी कार्य, रियाज, सेक्स, जासूसी संबंधी अध्ययन व कार्य न करना ही श्रेयस्कर है। ८।१७।२६ तारीख को कानून का अध्ययन व अध्यापन अशुभ, प्रतिकूल, हानिकारक है अतः भूल कर भी तत्संबंधी कार्य या अध्ययन न करें।

कारक स्थल—६ सम्बन्धी तारीखों को जलाशय स्थल का व ८।१७।२६ तारीख, को पर्वत्-वन भाग का प्रयोग न करें, भ्रमण करने न जायें और न ही तत्संबंधी वार्ता ही करें।

सुख-दुख—६।१५।२४ तारीख को स्त्री को कष्ट उससे पीड़ा, गृह-कलह, अपमान या अन्यान्य परेशानी होना संभव है। काम-वासना व भोगेच्छा प्रबल रहने से अन्यान्य रोगों को निमन्त्रण दे सकते हैं। वीर्य-दोष उत्पन्न हो सकते हैं। शिश्न से वृषण तक के भाग में रोग व पीड़ा हो सकती है तथा ८।१७।२६ तारीख को नौकर-चाकरों से परेशानी, विवाद व परेशानियाँ होंगी। दुःख व कष्ट यकायक बढ़ जायेगा तथा मानसिक तनाव रहेगा, स्नायु संस्थान पीड़ित एवं घुटने से पिंडली तक के भाग पर चोट लग सकती है। अतः सावधान रहें।

भाग्योदय—६।१५।२४ तारीख को यदि २८वाँ वर्ष चल रहा है तो उन्नत्ति, भाग्योदय के लिए व्यर्थ दौड़-धूप या प्रयास न करें, इससे उल्टे ही परिणाम प्राप्त होंगे। ८।१७।२६ तारीख को यदि ३६ से ४२ वर्षायु का समय चल रहा है तो भूल कर भी भाग्योदय संबंधी प्रयास न करें।

दान—तारीख ६।१५।२४ को आप भूल कर भी हीरा, स्वर्ण, रजत, चावल, मिश्री, दूध, दही, श्वेत वस्त्र, अश्व, चंदन, घृत, सुगन्धित द्रव्य, पाहन का तला ८।१७।२६ तारीख को तेल, तिल, जूते, पंचधातु, लोहा, उड़द, काले वस्त्र, गौ, भैंस का दान भूल कर भी न करें।

आपको ध्यान रहे २।४।५ के अंक आपके साथ साम्य भाव रखते हैं अस्तु तारीख २।११।२०।२९।,४।१३।२२।३१ तथा ५।१४। २३ तारीखें भी मित्र और शत्रुता रहित साम्यभाव रखेंगी। सब

मिला कर ये तारीखें विपरीत फल देने वाली, प्रतिकूल, अहितकर या नुकशानदेह नहीं होंगी ।

शुभ वार मय तारीख—तारीख २।११।२०।२९ को सोमवार ४।१३।२२।३१ को सूर्यवार स्पष्ट कर चुका हूँ जो अंक १ के अनुसार है तथा ५।१४।२३ को बुधवार कहीं अधिक सुभत्व प्रदान करेगा ।

राशि-नामाक्षर-नक्षत्र की शुभता—तारीख २।११।२०।२९ को कर्क राशि अथवा ही. हू. हे. हो. हु. डा. डी. डू. डे. डो, पुनर्वसु का अंतिम चरण, पुण्य और आश्लेषा नक्षत्र अनुकूलता प्रदान करेंगे । इसी प्रकार अंक ५ अर्थात् ५।१४।२३ तारीख को मिथुन राशि का. की. कू. घ. ङ छ. के. को. ह. नामाक्षर वाले व्यक्ति तथा मृगशिरा नक्षत्र के अंतिम दो चरण आर्द्रा व पुनर्वसु के प्रथम ३ चरण व उनमें जन्में व्यक्ति खूब अनुकूलता प्रदान करेंगे । हित चाहे न करें पर अहित भी नहीं करेंगे ।

जाति—२।११।२०।२९ तारीख को वैश्य वर्ग के लोग तथाच ५।१४।२३ को शूद्र वर्ग के लोग आपका कहीं अधिक हित चिंतन करेंगे । इनसे आप अच्छा सहयोग प्राप्त कर सकते हैं । आप किसी कार्य विशेष के लिए इनसे सम्पर्क करें या हित चाहें, लाभ होगा ।

रंग—२।११।२०।२९ तारीख को आप सफेद, हल्के रंग की चीजें, प्याजी या काफूरी रंग की अधिक अनुकूलता देगा जबकि ५।१४।२३ तारीख को कालिमायुक्त हरे वस्त्रों का, खाद्य-पदार्थ व दैनिक उपयोग की वस्तु का प्रयोग करें, अधिक सहायता मिलेगी।

लिंग—२।११।२०।२९ तारीख को स्त्री वर्ग एवं ५।१४।२३ तारीख को पुरुष-स्त्री किसी से भी विशेष सम्पर्क बनाएँ, आपका हित होगा यह सुनिश्चित है ।

अवस्था—२।११।२०।२९ तारीख को युवा वर्ग और ५।१४।२३ को वृद्धजन सर्वाधिक सहायक होंगे ।

दिशा—२।११।२०।२९ तारीख को वायव्य कोण दिशा व ५।१४।२३ को उत्तर दिशा कार्यक्षेत्र, व्यवसाय, यात्रा, अन्य कार्यार्थ,

सम्पर्क सूत्र जोड़ने में सहायक है। इसी प्रकार—

स्वभाव—२ अंक से सम्बन्धित तारीख को स्वभाव में चंचलता का प्राबल्य रहेगा एवं ५।१४।२३ तारीख को मिश्रित स्वभाव बना रहेगा।

गुण—२।११।२०।२६ तारीख को सत्व गुण की प्रधानता के कारण दैविक रूप रहेगा। विचारों में सुन्दरता, अच्छे व धार्मिक विचारों का प्राबल्य रहेगा जबकि ५।१४।२३ तारीख को रजोगुण की प्रधानता के कारण स्वस्थ मनोरंजन, यात्रा, सैर-सपाटे में समय व्यतीत होगा।

तत्व—२।११।२०।२६ तारीख को जल-तत्व की व ५।१४।२३ को प्रधानता भूमि तत्व रहेगी। जलीय तट, नदी-किनारे बसे शहरों में, आर्द्र स्थानों में भाग्योदय होगा तथा भूमि से संबंधित कार्यों से ऐश्वर्य पायेंगे। लाभान्वित होंगे।

ऋतु—२।११।२०।२६ तारीख को वर्षा ऋतु व ५ को १४।२३ तारीख को शरद-ऋतु सर्वाधिक अनुकूल रहेगी।

वस्त्र—२।११।२०।२६ तारीख को नवीन वस्त्र और ५।१४। २३ तारीख को पुराने वस्त्र अनुकूलता देंगे।

द्रव्य—२।११।२०।२६ तारीख को चाँदी व राजत-पात्र अच्छी अनुकूलता देंगे जबकि ५।१४।२३ तारीख को कांस्य-पात्र व सीप सर्वाधिक हितकारक होगी।

रत्न—२।११।२०।२६ तारीख को मोती धारण करना और ५।१४।२३ तारीख को पन्ना पहनना अत्यन्त शुभ है।

पशु-पक्षी—२।११।२०।२६ तारीख को सरीसृप, रेंगने वाले जीव व ५।१४।२३ तारीख को पक्षी अनुकूलता प्रदान करेंगे।

क्रीड़ा-स्थल—२।११।२०।२६ तारीख को जलाशय तट व आर्द्र स्थल व ५।१४।२३ तारीख को क्रीड़ागार अधिक अनुकूल रहेगा इनका सदुपयोग अवश्य करें।

काल समग्र—२।११।२०।२६ तारीख को क्षणिक व ५।१४।२३ का प्रभाव ऋतु पर्यन्त रहता है।

अध्ययन—२।११।२०।२६ तारीख को ज्योतिष व दैविक, धार्मिक विषयों का अध्ययन करना व ५।१४।२३ को गणित का

अध्ययन करना उपयुक्त, रहेगा।

कारक-स्थल—२।११।२०।२९ तारीख को जलाशय व ५।१४।२३ तारीख को ग्राम्य स्थल व विद्वत् समाज सर्वथा श्रेष्ठता देता है।

सुख—२।११।२०।२९ तारीख को माता व मातृपक्ष तथा मन और मानसिक शक्ति, रक्त व रक्त सम्बन्धित रोग और गले व हृदय सम्बन्धी रोगों पर सर्वथा नियन्त्रण रहेगा अतः समस्त कष्टों व समस्याओं से मुक्ति मिल जायेगी। इसी प्रकार ५।१४।२३ तारीख को सन्तान सुख, ज्ञान-ध्यान में वृद्धि, वाणी शुद्धता, त्वचा संबंधी रोग, चर्मरोग से मुक्ति, हाथ-पांव सम्बन्धी रोग स्वतः आराम देंगे।

भाग्योदय—यदि २५ वां वर्ष चल रहा है तो २।११।२०।२९ तारीख को भाग्योदय के लिए प्रयास कर सकते हैं इसी प्रकार यदि ३५।३६ वां वर्ष चल रहा है तो ५।१४।२३ तारीख को भाग्य वृद्धि के लिए उत्तम उपाय आप कर सकते हैं।

दान—२।११।२०।२९ तारीख को विपति आने पर मोती, स्वर्ण, रजत, कर्पूर, चावल, मिश्री, दही, स्वेत वस्त्र, स्वेत पुष्प, शंख, पुस्तक का दान दें यह उत्तम रहेगा तथा ५।१४।२३ तारीख को पन्ना, स्वर्ण, मूँगा, कांस्य पात्र, घृत, शक्कर, कर्पूर, हरित वस्त्र, हाथी दाँत, पञ्चरत्न का दानादि करें।

यन्त्र व मन्त्र—तारीख २।११।२० व २९ तारीख को निम्न यंत्र को १०८ बार भोज पत्र पर लिखकर उन्हें जल में प्रवाहित कर दें तथा निम्न मन्त्र का उच्चारण करें।

७	२	९
८	६	४
३	१०	५

मंत्र—ॐ इमं देवा असपत्न घुं सुबद्धं महते क्षत्राय महते ज्येष्ठ्याय महते जान राज्यायेन्द्रिय स्येन्द्रियाय। इमम मुल्यै पुत्र

ममुत्यै पुत्र मस्यै विशएषवो ऽ भी राजा सोमो ऽ स्मार्क ब्राह्मवानां घुं राजा ।

५।१४।२३ तारीख को निम्न मंत्र व यंत्र का उपयोग करें—

मन्त्र—ॐ अुद्बुध्यस्वाज्ने प्रति जागृहित्वमिष्टा पूर्वे स घुं सृजेथामंय च । अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत ।

यंत्र—

१४	९	१६
१५	१३	११
१०	१७	१२

तारीख	शुभाशुभ	तारीख	शुभाशुभ
१	उत्तम	१७	कष्ट कारक
२	सामान्य	१८	सर्वोत्तम
३	सुन्दर	१९	उत्तम
४	उत्तम	२०	सामान्य
५	सामान्य	२१	सुन्दर
६	कष्टकारक	२२	उत्तम
७	सुन्दर	२३	सामान्य
८	कष्टकारक	२४	कष्टकारक
९	सर्वोत्तम	२५	सुन्दर
१०	उत्तम	२६	कष्टकारक
११	सामान्य	२७	सर्वोत्तम
१२	सुन्दर	२८	उत्तम
१३	उत्तम	२९	सामान्य
१४	सामान्य	३०	सुन्दर
१५	कष्टकारक	३१	उत्तम
१६	सुन्दर		

अङ्क ५ पाँच :—

सचमुच ही आप महा भाग्यशाली हैं कारण कि आपका मूलांक ५ है और आपका जन्म ५।१४ या २३ ता को हुआ है। जीवन का प्रतिनिधित्व आपका कर रहा है बुध देव। २१ मई से २२ जून के मध्य तथा २१ अगस्त से २० सितम्बर के मध्य यदि आपका जन्म हुआ है तो आप पर बुध का वर्चस्व सर्वाधिक रहेगा।

आपको क्या यह ज्ञात है कि सुभाष चन्द्र बोस, शेक्सपियर, कार्ल मार्क्स, कामिनी कौसल, थामस हुड, एलबर्ट, आइन्स्टीन, फेरेन टाइट, रानी विक्टोरिया, नेहरू लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक, प्रेम चौपड़ा, सायरा बानू, आइजन हॉवर, शक्ति शामन्त, सी. डी. देशमुख, के आसिफ, गीतादत्त व तनुजा, चितरंजन दास, का भी जन्म का मूलांक ५ ही है आप इनके जीवन चरित्र को पढ़ें तथा उनसे कुछ शिक्षा ग्रहण कर तदुनुकूल जीवन ढालने का प्रयास करें।

आप व्यवसायी हों या नौकरी पेशा व्यक्ति, सामान्य जन हो या असामान्य, धनी हों या निर्धन, अध्यापक हों या मजदूर पर आपको तार व टेलिफोन विभाग, मशीन निर्माण व रिपेयरिंग, ज्योतिष, खराद, मोटर पार्ट्स, स्कूटर कार आदि के पुर्जे बनाना, खरीदना व बेचना मेकेनिकल वर्क्स, पोलोटेक्निकल विभाग से संबन्धित कार्य, पोस्टमैन, बीमा विभाग, बैंक सम्बन्धित कार्य, बजट निर्माण, रेलवे, संपादन कार्य, प्राइवेट वर्कशॉप, स्टेनो, गणित, सेल्समेनसिप, दलाली का कार्य, वैज्ञानिक, राजनीतिज्ञ और इतिहासकार, पुरातत्व वेत्ता, पुस्तकालय व वाचनालय कार्य, अनुवादक, तम्बाकू का व्यवसाय, मुद्रणालय, संचार व्यवस्था, यातायात सम्बन्धित कार्य, खोज कार्य, मुनीमी टूरिंग एजेंट व बौद्धिक कार्यों की ओर समुचित ध्यान दें। यह आपको यकायक ऊपर उठायेंगे।

जब जब भी बुध की निर्बलता आती है, आप रोग-ग्रस्त हो जाते हैं तथा आपको आंत व आंत से सम्बन्धित रोग हो जाते हैं इसके अतिरिक्त फेफड़े, त्वचा व तत्सम्बन्धी रोग पीड़ा देते हैं। ढलती उम्र के साथ में स्नायु रोग, चर्म रोग, एग्जीमा, दाद, फ्लू, जुकाम सम्बन्धी रोग हो जाते हैं। आयु के साथ-साथ स्मरण-शक्ति भी कमजोर हो जाती है। प्रायःकर शिर-दर्द रहता है। आपको

चाहिए कि आप दिमाग को अच्छी खुराक प्रदान करें।

आप विचार-प्रधान व्यक्ति हैं अतः जीवन में शारीरिक श्रम की अपेक्षा मानसिक श्रम अधिक करेंगे आपकी नयी सूझ-बूझ, अच्छी कल्पना-शक्ति, अकाट्य तर्क नवीन युक्तियाँ, नए-नए विचार श्लाघनीय हैं। सतत क्रियाशीलता, निरन्तर संघर्ष, उद्यमी बने रहने की कला कोई आपसे सीखे। आप स्वयं झुके यह तो सम्भव नहीं पर आप सामने वाले को झुका कर ही रहते हैं ऐसी ही दृढ़ता आप में रहती है।

साहसी, हिम्मती और आत्म-विश्वास के बल पर जीने वाले व्यक्ति आप हैं। हर कार्य, हर क्षण, हर बात को चुनौती के रूप में ही लिये रहते हैं। चुनौतियों का सामना करना सचमुच कोई आपसे सीखें। यही आपकी विशिष्टता है। गहराई से खूब सोचना जिससे सामने वाला आपकी बुद्धि का लोहा तत्काल मान लेता है। सत्य-सटीक व सही दृष्टिकोण, विनोदपूर्ण व्यवहारयुक्त, भौतिक सुख सुविधाओं की प्रबल इच्छा रखने वाले व्यक्ति आप हैं

गौरवपूर्ण, गौरवमय, प्रभविष्णु व्यक्तित्व के कारण लोग आपमें इच्छा रखते हैं, सम्बन्ध बढ़ाना चाहते हैं। आपका बाह्य व्यक्तित्व व आन्तरिक व्यक्तित्व इतना भिन्न है कि प्रायः लोग धोखा खा जाया करते हैं। आपके लिए लगाए अनुमान निराधार व गलत निकलते हैं। शरीर शौष्ठव सुदृढ़, मजबूत कद काठी रहती है। अकाट्य तर्क और विलक्षण सूझ-बूझ के धनी आप भी अद्भुत हैं जो निरन्तर अपने विचारों में परिवर्तन करते रहते हैं। एक मत पर ही स्थिर रह जाना आपके वास्ते कत्तई सम्भव नहीं। प्रायः शत्रुता करते नहीं पर किसी से शत्रुता हो जाये तो शत्रु का जड़-मूल से नाश ही आवश्यक है। दिखने में सौम्य, भव्य चेहरा-मोहरा पांडित्य प्रदर्शित करता हुआ रूप, बुद्धि-ज्ञान-ध्यान से सुसम्पन्न आप विनोदी हैं।

तेज-तर्रार, कई बार बुध की कमजोर स्थिति होने पर आप नाहक ही, बिना बात ही बात में झगड़ा व विवाद खड़ा कर देते हैं। स्वभाव में शक्कीपन आपको शोभा नहीं देता पर इस शक्की मिजाज को आप छोड़ भी नहीं सकते। किसी के मीन मेख

निकालना, हृदय की बात की थाह पाना, आन्तरिक भेदों का पता लगाने में आप सिद्धहस्त हैं। निरन्तर क्रियाशीलता, उथल-पुथल आपको प्रिय है आप शांत हो कर बैठ नहीं सकते।

मस्तिष्क की उर्वरता आपको व्यवसाय विशेष के लिए प्लानिंग करने में पूर्ण सफल रहते हैं। यो भी व्यापार आपके वास्ते अधिक हितकर है नौकरी की अपेक्षा। जुए, सट्टे, घुड़-दौड़ लॉटरी आदि जिससे शीघ्र लाभ हो आप कार्य करना अधिक पसन्द करते हैं। मिलनसारिता और सामाजिकता के कारण मित्र समुदाय सदैव आपको घेरे रहता है। दूसरों को सम्मोहित करने में आप सिद्ध हस्त हैं। एक बार जो आपसे मिल जाय वह फिर सदैव के लिए आपका बन कर रह जाता है। मानसिक दृष्टि से आप अधिक योग्य, उर्वर मस्तिष्क, सुयोग्य व तेज होने के कारण किसी भी कार्य के लिए आपका दृष्टिकोण सटीक रहता है ग्राह्य शक्ति सच-मुच आपमें अद्भुत है।

यात्रा आपको कहीं अधिक प्रिय है तथा लगभग यात्रा आपके जीवन का अंग बन जाती है। हाँ, यह अलग बात है कि अत्यधिक व्यस्तता के कारण कई बार आप यात्रा नहीं कर पाते पर यात्राएँ आप अवश्य करें, कारण यात्राएँ आपके भाग्योदय में सहायक होंगी। यात्राएँ हर बार लाभ भी देंगी। यात्रा नए सम्पर्क बनायेंगी, योजनाओं का सूत्रपात जोड़ पायेंगी। अतः आप एक अच्छे टूरिस्ट एजेंट सिद्ध हो सकते हैं।

निरन्तर सोचते रहना आपकी आदत में सुमार है। बारीक से बारीक वस्तु की थाह पा लेते हैं। उठते-बैठते चलते-फिरते, खाते-पीते-व्यवहार करते आप अपने भावी जीवन के बारे में सोचते रहते हैं। बचपन में एक शरारती बालक के रूप में आप रहे हैं, खूब शरारतें की हैं और शरारतें भी दिमागी। उद्देश्यहीन कार्य करते रहे हैं कुशल नेतृत्व दिया है आपने हमजोलियों को, लीडर रहे हैं आप जाति व समाज के। संचालन किया है आपने अपने कार्य-क्षेत्र में, पर मजाल है कभी नेतृत्व दोषपूर्ण दिशा में गया हो या चिन्तन धारा उन्मुख हुई हो गलत मार्ग की ओर।

त्वरित निर्णय ले लेना भी आपकी एक अन्य खूबी है, विशेषता

है। अपरिचित से अपरिचित व्यक्ति को चुटकियों में आप अपना बना लेते हैं। सर्वथा अपरिचिन व्यक्ति को देख कर आप भांप जाते है कि वह क्या चाहता है ? उसके आने का क्या प्रयोजन है ? वह धोखेबाज तो नहीं ? इसके मन में क्या है ? मुझे कौन-सा क्या व कब कदम उठाना है ? इन सब का उत्तर तत्काल पा लेते हैं।

मस्तिष्क उर्वर, प्रखर बुद्धि, स्थितिनुसार स्वयं को मोड़ना आपकी अपनी विशेषता है। देश-काल व परिस्थिति के अनुसार स्वयं ढाल सकते हैं। व्यर्थ किसी बात पर चिल्लपों करना, हाय-तोबा मचाना, रोना-धोना या पश्चाताप या चिन्ता करना आपको अभीष्ट नहीं। स्नायु मण्डल आपका बड़ा फुर्तिला होता है अतः जल्दबाज व चञ्चल हैं। बड़े से बड़े मानसिक आघात को आप थोड़े समय बाद में हृदय से भूल जाते हैं। वृद्धावस्था स्नायविक दोष से संवन्धित रोग होने के कारण कष्ट पायेंगे अतः समय रहते सावधान हो जायें।

किसी से हार मानना या मात खा जाना आपको अभीष्ट नहीं। झुकने की अपेक्षा अपनी पूरी शक्ति झुकाने में आप खर्च कर देते हैं। जिद्दी मिजाज होने के कारण अड़ने की आदद आपमें है, जिससे एक बार चिढ़ गए जिन्दगी भर उसे मुंह लगाना पसंद नहीं करते। आप जिसे चाहते हैं उससे प्यार करते हैं और जिससे प्यार करते हैं उसकी ओर आँख उठा कर भी नहीं देखते, उनकी कमियाँ नजर अंदाज कर जाते हैं।

आप पिता को सर्वथा विरोधी व वैचारिक मतभेद रखने वाले हैं तो माता के उतने ही बड़े भक्त हैं। मां से अत्यधिक लगाव रहता है आवश्यकता से कहीं अधिक निर्भीक, सिंह गर्जन व प्रभावी हैं। सच्चे मित्रों का आपके जीवन में अभाव नहीं है। मित्र कदम-कदम पर आप को सहायता प्रदान करेंगे, वे सदैव आपसे दोस्ती निभायेंगे। आपके विचारों के सामने सिर झुकायेंगे। मित्रों द्वारा की गई चापलूसी भी आपको पसंद है।

पूर्ण एकाग्रता व कार्य पर पूर्ण मनोयोग से जुट जाना आपकी दूसरी विशेषता है। हाथ में लिया कार्य पूरा करके ही छोड़ेंगे चाहे राह में कितनी भी रुकावटें उत्पन्न हों। आजीवन बदल-बदल कर

आजीविका के साधन अपनाते रहते हैं। एकाधिक उपायों से सदैव अर्थोपार्जन करते हैं अर्थात् आप के एकाधिक स्त्रोत रहते हैं। रेत से भी आप पैसा बना लेने की कला जानते हैं।

मशीनरी के कार्यों में आपकी बुद्धि अधिक कार्य करती है। पेचिदा कल पुर्जों को समझना आपके लिए कोई मुश्किल नहीं। प्रायः घर मे उठा-पटक आप करते रहते हैं। बड़े-बड़े लोगों से मेल जोल बढ़ाना व सम्पर्क साधने की कला में आप पारंगत है और बिना हिचकिचाहट के हर एक से सम्पर्क जोड़ लेते हैं। घर के वन्धन या रुकावट आपको मानो काटते से लगते हैं। स्वतन्त्रता के समर्थक व स्वतन्त्रता प्रेमी होने के कारण स्वतन्त्र जीवन निर्वाह व घूमना फिरना, इच्छानुसार स्थान बदलना, भ्रमण और मनोरंजन आपको प्रिय रहता है। दकिया दनूसी, रुढ़िवादिता व पुरातनता को भी आप पसन्द नहीं करते न ही पुराने कार्यक्रम ही पसंद करते हैं। एक जगह टिक कर आप कार्य इसी कारण नहीं कर पाते। शेखी मारना, गप्प गजट चलाना, प्रदर्शन और बात को बढ़ा-चढ़ा कर कहना हवाई किले बनाना आपको भली प्रकार आता है।

आप यदि महिला जातक हैं तो अवश्य ही आप प्रायः अनिश्चय के वातावरण का बोझ उठाती है आप प्रयास करें अनिश्चय की भावना को छोड़ने का। कार्य के शुभारंभ करने से पूर्व घण्टों नहीं दिनों तक सोचती रहती हैं। फिर भी एक निर्णय पर नहीं पहुँच पातीं। दिमाग में एक उथल-पुथल बनी ही बनी रहती है! सुदृढ़ योजना का अभाव प्रायः असफलता की ओर ले जाता है। प्रायः कार्य अधूरे ही रह जाते हैं। पूर्ण योग्यता होते हुए भी आप अपने कार्यों से लाभ नहीं उठा पाती हैं। कार्य जल्द बाजी में किया जाता है फलतः अनेकों बार काम बिगड़ भी जाता है। धैर्य व अध्यवसाय का भी आपमें भारी अभाव हैं।

तीव्र बुद्धि व सुलझा हुआ दृष्टिकोण होने के कारण बात की बात में बात की गहराई तक पहुँच जाती हैं अनजान से अनजान व्यक्ति को अपना बना लेने की क्षमता भी आपमें है। हृदय से चाह कर भी किसी के प्रति दुराभाव नहीं रख सकती। पर मन में भी

न रख दूसरों की जलती मूँह पर बता देती हैं। स्वयं दोषी होने पर तुरन्त अपना दोष मान भी लेती हैं। इसी गुण के कारण आपके सहयोगियों की भरमार रहती है।

प्रकृति में विवधता, दिमाग में हर समय नए-नए विचार, स्पष्ट व सही दृष्टिकोण, स्पष्ट व सही निर्णय शक्ति, कार्य के प्रति पूर्ण संलग्नता पर एकाधिक कार्य एक साथ पूर्ण करने की आदत के कारण कई बार हानि और घोखा भी उठा लेते हैं, बना-बनाया कार्य बिगड़ जाता है। स्वयं पर किसी का अंकुश आपसे सहन नहीं होता कारण आप कुछ अधिक ही स्वतन्त्र विचारों की हैं। आपकी हर समय इच्छा रहती है कि आप कुछ ऐसा कार्य करें कि लोग आपकी प्रशंसा करें आपको सराहें।

आपकी धारणाओं में विचारों में, जीवन में पूर्णतः रूढ़िवादिता का अभाव रहता है। हर समय हर स्थान पर आधुनिक बनी रहना पसंद करती हैं। जीवन को हँसते-हँसते गुजारना पसंद करती हैं। किसी भी कार्य पर किसी बात पर आप गंभीर हो ही नहीं सकती। इसी कारण प्रारम्भ में तो लोग आपसे प्रभावित होते हैं पर धीरे-धीरे किन्नी काटने लगते हैं। प्रभाव धीरे-धीरे घटने लगता है।

गृहस्थ जीवन भी आपका विशेष अनुकूल या आनंदमय नहीं माना जा सकता किसी न किसी कारण प्रलिकूलता बनी रहती है।

इनके अतिरिक्त आपमें कुछ दोष भी हैं कमियाँ भी हैं उन्हें पहिचाने और दूर करने का प्रयास करें—(१) झगड़ा मोल लेने की आपमें बड़ी बुरी आदत है उसे छोड़ने का प्रयास करें, व्यर्थ झगड़ा मोल न लें। प्रायः गली मुहल्ले, विद्यालय, घर-बाहर, कार्य क्षेत्र सर्वत्र विरोध सा वातावरण बना रहता है।

(२) आप अपने साथ कार्य करने वालों में सर्वाधिक चतुर हैं सर्वाधिक कार्य क्षमता है परन्तु विवाद की स्थिति भी आप उत्पन्न कर लेते हैं उस समय आप शान्त व चुप नहीं रह सकते। सामने वाले के तर्कों को कुटिलता व बेरहमी से काट लेते हैं फलतः व्यर्थ में आपकी शत्रुता का क्षेत्र बढ़ जाता है।

(३) आप योजनाएँ खूब से खूब बनाते हैं परन्तु उन्हें पूर्णता की ओर नहीं पहुँचने देते कारण आप एक साथ बहुत सारे कार्य

प्रारम्भ कर देते हैं। तीव्र बुद्धि होते हुए भी उसका प्रयोग ठीक जगह पर ठीक कार्य में नहीं होता।

(४) आप भूल कर भी अपनी व्यक्तिगत बातों को दूसरों के सामने प्रकट नहीं करें। कारण यही है कि वे आपके दिली मर्म को समझ नहीं पाते। आपके पास जो आवें उसे स्वयं में समाहित कर लें, यह नहीं कि अपना सारा भेद उनके सामने प्रकट कर दें।

(५) जरूरत से अधिक शक करने की आदत को भी आप छोड़ दें। यही शक जानलेवा सिद्ध हो सकता है। आपको मालूम हैं पति-पत्नी के मध्य दुराभाव का कारण भी आपका शक्कीपन है।

(६) अपने क्रोध पर नियन्त्रण करते हुए शान्त रहने का प्रयास करें, स्वभाव को विनम्र बनावें। क्रोध वहीं करें जहाँ उसकी जरूरत हो अन्यथा व्यर्थ क्रोध शोभनीय नहीं कहा जा सकता।

(७) आप अपने समक्ष एक उचित लक्ष्य रखें और तदनुकूल उसे प्राप्त करने का प्रयास करें। जो भी कार्य हाथ में ले उसे प्राण-प्रण से पूरा करने में जुट जायें। चाहे जितना श्रम करना पड़े पर उससे आप घबराएँ नहीं। कठिनाइयों और बाधाओं से घबरा कर आप अपने लक्ष्य को न बदलें।

(८) व्यर्थ गप्पे मारना, डींग हांकना व शेखी मारना, झूठे आश्वासन देना, भरोसा देकर उसे पूरा न करने का भी आदत छोड़ दें इससे आप अपना ही विश्वास खोते हैं।

(९) हर समय लाभ का दृष्टिकोण ही अपने सामने न रखें कुछ कार्य समाज में निःस्वार्थ भी करने पड़ते हैं अन्यथा व्यवहार निभते नहीं। कुछ झुकना व कुछ झुकाना भी पड़ता हैं।

(१०) जहाँ मित्र बनाने में सिद्ध हस्त हैं वहाँ झूठ के महलों पर दोस्ती को न टिका कर सही, मजबूत, दृढ़ धरातल भी दें।

आपको ध्यान रहे मिथुन और कन्या राशि आपको सर्वाधिक शुभ फल देने वाली और तदनुसार का, की, कू, घ, ङ छ के को ह, टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो नामाक्षर वाले जातक या मृगशिरा नक्षत्र के अंतिम दो चरण मे जन्मे, आर्द्रा व पुनर्वसु के प्रथम तीन चरणोत्पन्न व्यक्ति व उत्तराफाल्गुनी के शष तीन चरण, हस्त व चित्रा के प्रथम दो चरणों में उत्पन्न व्यक्ति व उक्त नक्षत्र

आजीवन शुभत्व प्रदान करेंगे। किसी भी शुभ कार्य व श्रेष्ठता के लिए इन्हें कार्य रूप में लें।

बुधवार व ५।१४।२३ तारीख सर्वाधिक श्रेष्ठता प्रदान करेंगी। स्वभावतः ही बुध एक सौम्य व शुभ ग्रह है। कन्या व मिथुन राशि पर सहज स्वामित्व रहता है। शूद्र वर्ण के व्यक्तियों के साथ आपके सर्वाधिक सुन्दर व उत्तम संबंध रहेंगे एवं वे भरपूर सहायता प्रदान करेंगे। आपके लिए ५।१४।२३ ता० को तो ये और अधिक अनुकूल रहेंगे और इसीलिए शूद्र वर्ण के लोगों से सम्पर्क रखें। आपको अपने दैनिक उपयोग में आने वाली चीजें कालिमायुक्त हरी रखनी चाहिए। पर्दे, जालियाँ, चद्दर, बैडशीट, तकिये के गिलाफ, वस्त्र, घड़ी का पट्टा, मोजे, पुस्तक कवर, पेन आदि इसी रंग के रखें। भोजन के साथ एक आध वस्तु भी इस रंग को हो तो और उत्तम होगा।

अंक ३ व ३।१२।२१।३० तारीख नीच दोष-ग्रसित हैं वहीं उच्चता का व स्वगुण द्योतक अंक ५ व तारीख ५।१४।२३ हैं। आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती नक्षत्र सौम्यता प्रदान करते हैं। ६ व १ अंक अच्छे मित्र हैं फलतः ६।१५।२४ व १।१०।१९।२८ तरीखें मैत्री संबंध रखेंगी। अंक ७ व ७।१६।२५ तारीखें शत्रुवत व्यवहार रखेंगी। ६।१५।२४ तारीख के साथ राजसी भाव प्रधान रहेगा। आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती रोहिणी, हस्त शुभत्व तथा आर्द्रा स्वाति, पुष्य, अनुराधा चित्रा, मघा, मूल नक्षत्र अशुभता देंगे। ३।१२।२१।३० तारीखें निर्बल, ३।७ के साथ होकर शुभत्व ६ से मिश्रित व १।८।९ के साथ शुभ फल प्रदान करते हैं।

उत्तर दिशा आपके लिए भाग्योदयकारी, कार्य में सफलता सूचक, उन्नति में सहायक व कार्य-क्षेत्र वास्ते उत्तम है। आप अपने जीवन का निर्माण करने के लिए उत्तर दिशा को ही प्रधानता दें। स्वभाव में क्षणे रुष्टा क्षणे तुष्टा का भाव ही प्रधानता लिए रहेगा। मूलतः रजोगुण की प्रधानता के कारण भोग के प्रति आसक्ति बढ़ जायेगी। काम-वासना प्रदीप्त होगी तथा प्रेम व प्रणय सम्बन्धी मामलों में किए गए प्रयास भली प्रकार सफलता प्रदान करेंगे।

पृथ्वी तत्व की प्रधानता के कारण उक्त तारीखों को यदि भू-भूमि व कृषि कर्म संबंधी कार्य किए जायँ तो सर्वोत्तम अनुकूल फल प्राप्त होंगे। शरद ऋतु आपके लिए और अधिक हितकारक है। जहाँ तक वस्त्रों का प्रश्न है पुराने वस्त्र अधिक अनुकूलता आपको देंगे। कांस्य व सीप द्रव्य बहुत अधिक शुभत्व देगा तथा कांस्य पदार्थ व कांस्य बर्तन में भोजनादि करना श्रेयस्कर है। संभव हो सके तो आप ४-५ रत्ती का शुद्ध, निर्मल पन्ना धारण करें। पन्ना धन प्राप्ति व भाग्योदय में अधिक सफल रहेगा।

क्रीड़ागार, जुआघर, कौतुकागार, भोग-स्थान पर विजय, स्वस्थ मनोरंजन होगा तथा आनन्दमग्न रहेंगे। अस्तु आप द्वारा किए कार्य का ऋतु पर्यन्त प्रभाव चिर स्थायी रहेंगे। वेदाध्ययन करना उपयुक्त है। गणित जैसे दुरूह विषय का अध्ययन आपके लिए श्रेयस्कर रहेगा, ऐसा करें। विद्वद स्थान, विद्वद समाज तथा ग्राम्य वातावरण सर्वथा अनुकूलता प्रदान करेगा। ग्राम्य जनों से आपको भर पूर सहयोग मिलेगा।

बहिन और बहिन पक्ष आपके लिए भाग्यवर्धक रहेगा। वाणी में मिठास एवं वाणी पर नियन्त्रण के ही कारण आपके मित्र भर पूर सहयोग करेंगे, उससे आनंद रहेगा।

यदि ३५ मतान्तर से ३६ वां वर्ष चल रहा है तो आप भाग्योदय के लिए प्रयास कर सकते हैं। उन्नति की देवी विजय माल लिए तैयार खड़ी है। आप अपने उच्चाधिकारियों से मिलें, संपर्क करें, प्रार्थन-पत्र दें, साक्षात्कार का प्रयास करें, नए व्यापार का शुभारंभ कर सकते हैं तथा साझेदार सहयोग देंगे। गया धन, चोरी गया धन, उधार दिया गया या राज्य कार्य से रुका धन पुनः प्राप्त हो जायेगा।

और अधिक श्रेष्ठता व उत्तमता के लिए आप निम्न मत्र को अष्टगंध से कमल पत्ते या भोजपत्र पर लिखें तथा उन्हें जल में बहा दें। रोगी व्यक्ति के द्वारा कांस्य पात्र में लिख कर धो कर वह जल पीने से व्यक्ति रोग-मुक्त हो जाता है। यंत्र लेखन के साथ साथ निम्न मंत्र का भी जाप करें एवं निम्न पदार्थ दान दें—श्रेष्ठ रहेगा।

यंत्र—

६	४	११
१०	८	६
५	१२	७

मंत्र—ॐ उद्बुध्य स्वाग्ने प्रति जागृहित्त मिष्टा पूर्ते स धुं सृज थामयं च। अस्मिन्त्सवस्थे अध्युप्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत।

दान—पन्ना, स्वर्ण, मूंगा, कांस्य पात्र, घृत, शक्कर, कर्पूर, हरावस्य, हाथी दांत, पंचरत्न।

आपको ध्यान है अंक ५ आपको सर्वोच्चता प्रदान करता है अतः ५।१४।२३ श्रेष्ठ फलदायी तिथियाँ हैं। अंक ३ में नीचत्व दोष प्राप्त होता है अतः ३।१२।२१।३० तारीखें अशुभ, प्रतिकूल व कष्टप्रद रहेंगी। आपको इन तारीखों में विशेष सावधान रहने की जरूरत है।

अंक तीन पर मंगल का प्रभुत्व रहता है अतः तारीख ३।१२। २१।३० को यदि मंगलवार हो जाय तो और भी अधिक अशुभ फल समझें। यों मंगल स्वयं भी पापी व अशुभ ग्रह है। मेष व वृश्चिक का स्वामित्व रखने के कारण मेष—वृश्चिक पर जब चंद्रमा आयें या वे व्यक्ति जो मेष-वृश्चिक राशि के हैं या जिनका जन्म अश्विनी, भरणी व कृतिका के प्रथम चरण, विशाखा के अंतिम चरण, अनुराधा या ज्येष्ठा नक्षत्र में हुआ है अथवा वे व्यक्ति जिनके नाम का प्रथम अक्षर चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, आ, या, तो, ना, नो, नू, ने, नो, या, पी, यू,है वे धोखेबाज मित्र साबित होंगे। उनके कारण व्यर्थ की परेशानियाँ बढ़ सकती हैं तथा आर्थिक हानि, मानसिक तनाव की स्थिति आ सकती है, तात्पर्य यह कि इनसे पूर्णतः सावधान रहें। इसी प्रकार अंक ३ देव गुरु का है पर बुद्ध का नीचत्व होने के कारण धनु व मीन राशि वाले व्यक्ति या जिनके नाम का प्रथम अक्षर ये, यो, भा, भी, भू, धा, फ़ा, ढा, मे, दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची है या मूला, पूर्वाषाण व उत्तराषाण के प्रथम चरण में जन्म हुआ हो या पूर्वाभाद्रपद के

अंतिम चरण, उत्तराभाद्र पद या रेवती नक्षत्र में जन्म हुआ है ऐसे व्यक्तियों से सावधानी अपेक्षित है। बृहस्पति स्वयं में सौम्य होकर भी आपको कष्टप्रद हो जाता है अतः बृहस्पतिवार भी अनुकूलता नहीं देते।

भूल कर भी ब्राह्मण वर्ग के व्यक्ति से ३।१२।२१।३० ता० को सम्पर्क न करें अन्यथा मति भ्रष्टता के कारण वे आपका सर्वथा अहित ही करेंगे।

आप भूल कर इन तारीखों को पीले वस्त्र न पहनें न ही पीली वस्तु का भक्षण करें अथवा दैनिक उपयोग में भी पीली वस्तु लाएँ। पीला रंग शुभ होते हुए भी आपके लिए अशुभता का कारक है। इसी प्रकार पुरुष वर्ग से सर्वाधिक कम सम्पर्क इन दिनों अर्थात् ३।१२।२१।३० तारीख को रखें। अन्यथा आपके साथ धोखा हो सकता है, वैमनस्यता बढ़ सकती है, व्यापार में घाटा या नौकरी में अनबन हो सकती है। युवा वर्ग व प्रौढ़ावस्था वाले पुरुष और अधिक प्रतिकूलता प्रदान करेंगे।

आप भूल कर भी ईशान कोण अर्थात् पूर्व-उत्तर की ओर यात्रा न करें, यह यात्रा नुकसानदेह, उन्नति में बाधक, चिन्ता कारक व पीड़ित करेगी। धन की हानि भी संभव है। स्वभाव में सरलता-सौम्यता-मृदुता का नाश हो जायेगा, उत्तेजना और क्रोधातिरेक के कारण उल्टे सीधे कार्य कर सकते हैं। हाँ सत्व गुणों की प्रधानता निरन्तर बनी रहेगी अस्तु ठंडापन, ढीलापन व अस्थिर विचारों की भी प्रधानता रहेगी।

आकाश तत्व प्रधान दिन होने के कारण वे व्यक्ति वायुयान से सम्बन्धित हैं उन्हें सर्वाधिक सचेत रहने की जरूरत है। यात्रा करने में पूर्ण सावधानी रखें। जो भी प्रभाव है भला या बुरा उसका प्रभाव हेमन्त ऋतु में तो और अधिक होगा। आप वस्त्रों में सावधानी रखें। काले या मैले वस्त्र कत्तई धारण न करें। भूल कर भी चांदी के गहने या रत्नों में पुखराज धारण न करें, यह दोष देते हुए प्रतिकूलता दे सकते हैं।

कोषागार, भण्डार गृह, सामुहिक स्थान व वे स्थान जहाँ गोदा म आदि हो वहाँ कार्य न करें तथा इसका प्रभाव मास पर्यंत

रहता है अतः अधिक सावधान रहें। वेदाभ्यास करना सर्वथा अनुचित रहता है। वेद व व्याकरण का अध्ययन भी कष्ट प्रदान करता है। व्याकरण का अध्ययन न करें, असफलता देता है। ग्राम्य जीवन व विद्वद समाज भी प्रतिकूलता ही देता है।

३।१२।२१।३० तारीख को सन्तान को कष्ट, ज्ञान व सुख में बाधा उत्पन्न होती है। चर्बी सम्बन्धी रोग और अधिक कष्ट देते हैं। कमर से जांघ तक के भाग पर चोट लगना संभव है या इस स्थान पर कोई रोग है तो वह और अधिक पीड़ा पहुँचा सकता है। यदि २१वां वर्ष चल रहा है तो आपको भूल कर भी भाग्योदय के लिए प्रयास नहीं करना चाहिए अन्यथा लेने के देने पड़ सकते हैं।

भूल कर भी आप पुखराज, केला, नारंगी, नीबू, चने की दाल, बेसन, पीत वस्त्र, पुस्तक, स्वर्ण कांस्य पात्र पीत पुष्प, चीनी, शक्कर, घृत, हल्दी, बेसन आदि का दान न दें।

आपको ध्यान है अंक ६ और १ आपके मित्र हैं फलतः ६।१५।२४ व १।१०।१९।२८ तारीखें भी मित्रता निभायेंगी। फलस्वरूप इन तारीखों में शुभ कार्य अवश्य करें। रुके हुए या आधे-अधूरे कार्य पूरा करने का प्रयास करें। किसी को उधार धन दिया हुआ है तो उसे प्राप्त करने का प्रयास कर सकते हैं। नए संबंध जोड़ सकते हैं। यात्रा कर सकते हैं। नए व्यापार के लिए योजना बना सकते हैं। चलते आये व्यवसाय में वृद्धि कर सकते हैं। मित्र-पत्नी-सन्तान व अन्यान्य व्यक्ति सहायक सिद्ध होंगे। रोगादि से मुक्ति हेतु प्रयास कर सकते हैं। ऑप्रेशन की आवश्यकता अनुभव कर रहे हैं तो ऑप्रेशन करवा सकते हैं।

वृष व तुला राशि वाले व्यक्ति या वे जिनका नाम, इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो, रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते, से, आरंभ हैं या कृत्तिका के अंतिम ३ चरण रोहिणी व मृगाशिरा के प्रथम दो चरण, चित्रा के अन्तिम दो चरणों, स्वाति व विशाखा के प्रथम तीन चरण में जन्मे व्यक्ति मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे मघा पूर्वा फाल्गुनी व उत्तराफाल्गुनी के प्रथम चरण में जन्मे व्यक्ति भले सिद्ध होंगे। कदम-कदम पर सहायता प्रदान करेंगे।

६।१५।२४ तारीख को ब्राह्मण वर्ग के व्यक्ति व १।१०।१६।२८ तारीख को क्षत्रिय वर्ग के व्यक्ति पूर्ण रूपेण आपको सहायता प्रदान करेंगे। अच्छे साथी सिद्ध होंगे। कदम-कदम पर अर्थ की सहायता देंगे। भाग्योदय में सहायक होंगे। आप ६।१५।२४ तारीख को रंग-रंगीले वस्त्र पहनें वे श्रेष्ठता प्रदान करेंगे तथा १।१०।१६।२८ तारीख को भी कालिमायुक्त लाल रंग का उपयोग खान-पान, वस्त्राभूषण, व दैनिक क्रिया-कलापों में प्रयुक्त करें। ये रंग आपके व्यक्तित्व को चार-चांद लगायेंगे।

६।१५।२४ तारीख को स्त्री जातक से और १।१०।१६।२८ तारीख को पुरुष वर्ग आपको अधिक सहायता देगा। सच्ची मित्रता देंगे। भाग्योदय में सहायक होंगे। जीवन यापन के कार्यों में भी सहायक होंगे अतः इनसे संपर्क बढ़ायें। ६।१५।२४ ता० को युवा वर्ग से व १।१०।१६।२८ तारीख को वृद्ध जन से संपर्क बनाएँ। वे आपको अच्छी सलाह देंगे। योजना निर्माण में सहायक होंगे। आपको आगे बढ़ाने में सहायता देंगे। आपको गलत मार्ग पर जाने से वे रोकेंगे।

आप ६।१५।२४ तारीख को आग्नेय कोण में यदि यात्रा करनी ही है तो करें, जीवन-यापन हेतु इसी दशा का चयन करें, इसी प्रकार १।१०।१६।२८ को पूर्व दिशा का सदुपयोग करें। स्वभाव में ६।१५।२४ को शान्ति व १।१०।१६।२८ को स्थिरता रहेगी इसी प्रकार अंक छः वाली तारीख को रजोगुण की प्रधानता के कारण भोग-ऐश्वर्य, स्वस्थ मनोरंजन, प्रेम-संबंध, प्रणय आदि के लिए श्रेष्ठ तिथियाँ हैं वहीं १।१०।१६।२८ तारीख को स्वगुण की प्रधानता के कारण धैर्य, अध्यवसाय व शान्त वातावरण पसंद करेंगे। छः अंक वाली तारीख को जल तत्व की प्रधानता के कारण आर्द्र स्थान, ठंडे मुल्क, नदियों के किनारे बसे नगरों व समुद्र किनारे बसे स्थान अधिक हितकर होंगे वहीं १।१०।१६।२८ तारीख को अग्नितत्व प्रधानता के कारण गर्म-स्थल या वे व्यक्ति जो ईंधन या ज्वलनशील पदार्थ, तेल का कार्य या विद्यु त का कार्य करते हैं उनके लिए श्रेष्ठ है। और ६।१५।२४ तारीख वसन्त ऋतु में अधिक हितकर रहेंगी वहीं १।१०।१६।२८ तारीख

ग्रीष्म ऋतु में सर्वाधिक सहायक होंगी। वस्त्रों का जहाँ तक प्रश्न है आप छः अंक वाली तारीख को मोटे, खद्दर के व दृढ़ वस्त्र तथा १।१०।१६।२८ को भी मोटे वस्त्र पहनना सर्वथा शुभत्व देगा।

१।१०।१६।२८ तारीख को आप हो सके तो दैनिक कार्यों में खाने-पीने व उपयोग के लिए ताम्रपात्र प्रयोग में लायें तथा माणिक्य धारण करें। माणिक्य आपके सभी रुके हुए कार्यों को पूर्ण करने में सहायता देंगे तथा ६।१५।२४ ता० को स्वर्णभूषण पहनें, हीरा पहनें तथा पक्षी जगत से सर्वथा लाभान्वित होंगे।

६।१५।२४ तारीख को क्रीड़ागार, कौतुकागार, शयनागार, भोग-स्थान सहायता देगा, ऐश्वर्य वृद्धि होगी तथा १।१०।१६।२८ तारीख को देव-स्थान मददगार साबित होगा तथा इसका प्रभाव लगभग छः माह तक रहेगा जबकि ६।१५।२४ को किए कार्य का प्रभाव १ पक्ष तक रहेगा।

जहाँ तक अध्ययन का प्रश्न है ६।१५।२४ को आप संगीत व वाद्य का अभ्यास करें। यदि फिल्मालय से संबंधित व्यक्ति हैं तो सफल रहेंगे पर १।१०।१६।२८ को राजनीति के अध्ययन या कार्यों के लिए श्रेष्ठ दिन हैं। राजनीतिक गति-विधियाँ तेज रहेंगी व सफल भी। ६।१५।२४ ता० को विद्वद् समाज व ग्राम्य जीवन सहायक रहेगा वहीं १।१०।१६।२८ को पर्वतीय-पठारी व मैदानी भाग की अपेक्षा वनीय स्थल अधिक अनुकूल हैं।

यदि २८वां वर्ष आपका चल रहा है तो ६।१५ व २४ तारीख को अपनी उन्नति, विकास के लिए प्रयास कर सकते हैं। मिलें, सम्पर्क सूत्र जोड़ें तथा प्रार्थना-पत्र दें, साक्षात्कार करें, इसी प्रकार यदि २५वां वर्ष चल रहा है तो १।१०।१६।२८ को किए प्रयास विशेष सफलता देंगे।

ता: ६।१५।२४ तारीख को आप निम्न यन्त्र भोजपत्र पर

११	६	१३
१२	१०	८
७	१४	९

१०८ बार लिख कर जल में प्रवाहित कर दें तथा निम्न मंत्र का जाप करें

मंत्र—ऊँ अन्नात् परिस्त्रुतो रस ब्रह्मण व्यपिबत् क्षत्रं पयः। सोम प्रजापति ऋंतेन सत्यमिन्द्रियं विपान धुं शुक्र मन्ध स इन्द्रस्योन्द्रियमिदं पयोमृतम्मधु ॥

दान—हीरा, स्वर्ण, रजत, चावल, मिश्री, दूध, दही, श्वेत-वस्त्र अश्व, चन्दन, घृत, सुगन्धित द्रव्य, वाहनादि।

१।१०।१९।२८ तारीख को निम्न मंत्र का जाप करते हुए निम्न यंत्र बनावें एवं दान दें।

८	१	६
३	५	७
४	९	२

मंत्र—ॐ आकृष्णेन राजसा वर्तमानो निवेशयन्नभूतं मर्त्यं च। हिरण्णेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।

दान—माणिक्य, स्वर्ण, ताम्र, गेहूँ, गुड़, घी, रक्त वस्त्र, रक्त पुष्प, कनेर पुष्प, रक्त चंदन, धेनु आदि।

अंक ७ से आपका सर्वथा विरोध है अतएव ७।१६।२५ तारीख सर्वथा कुयश-विरोध, दुविधा व परेशानी मूलक है।

७।१६।२५ तारीख को सोमवार होने पर और भी अधिक दुखदायी है अतः सावधान रहना चाहिए। अतः पुनर्वसु का अंतिम चरण, पुण्य व आश्लेषा नक्षत्र ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो नाम से आरंभ होने वाले व्यक्ति सर्वथा धोखेबाज, विरोधी व परे-शानी देने वाले होंगे।

इन तारीखों में आपको वैश्य जाति व व्यवसायी वर्ग से सर्वथा सावधान रहने का प्रयास करना चाहिए अन्यथा व्यापार में घाटा व साझे में नुकसान, उच्चाधिकारी यदि वैश्य है तो आपका अहित संभव है, रिकॉर्ड बिगाड़ देंगे। आप सफेद रंग से बचे रहें। बेड शीट, चद्दर, तकिये के गिलाफ, मोजे, पहनने के वस्त्र व अन्यान्य दैनिक

उपयोग की चीजें सफेद न हों तो श्रेष्ठ हैं। भोजन में दूध, दही, मट्ठा व अन्य सफेद चीज नहीं लें। स्त्री वग से कम से कम सम्पर्क रखें।

आप भूल कर भी वायव्य कोण की ओर यात्रा नहीं करें। मन में उच्चाटन, उठा-पटक, अशांति व चिन्ता का भाव प्रधानतः बना रहेगा। सत्व गुण की प्रधानता होते हुए भी अपव्ययी रहेंगे। जल से दूर रहें यदि तैरने का शौक रखते हैं तो कम से कम इन दिनों में तो नहीं तैरे। शर्दी-जुकाम की प्रायः शिकायत रहेगी और आप आर्द्र स्थान पर कार्य-क्षेत्र बनाए हुए हैं तो हानि को प्राप्त होंगे। वर्षा ऋतु कार्य की दृष्टि से अनुकूल नहीं है। वर्षा ऋतु रोग कारक विपत्ति जन्य, निराशामूलक है। नए वस्त्र नहीं पहनें तथा इन दिनों न ही पर्दे आदि बदलें।

आप चाँदी के आभूषण नहीं पहनें तथा मोती धारण किए नहीं जायें। मोती यदि पहने हुए हैं तो कृपया उतार दें। रेंगने वाले कीड़े-मकोड़े से बचें, काट सकते हैं। जहरीले जीव-जन्तुओं से भी स्वयं की रक्षा करें। जलाशय तट पर कार्य-क्षेत्र यदि बनाए हुए हैं तो कुछ शान्त रहें। नए, कार्य का श्रीगणेश नहीं करें। यदि साझे का व्यापार है तो साझेदार धोखा दे दें तो क्या आश्चर्य ? हाँ, जो भी अशुभता होगी उसका प्रभाव अवश्य क्षणिक होगा। ज्योतिष का अध्ययन भूल कर भी न करें अन्यथा अपमान का सामना करना पड़ेगा। यदि आप एक सफल ज्योतिषी भी हैं तो फलादेश व गणित पक्ष को स्थगित रखें।

जलाशय स्थान पर भ्रमण करने न जायें। माता व मातृपक्ष कमजोर रहेगा। मन में अशान्ति, मानसिक तनाव व व्यर्थ चिन्ता तथा रक्तदोष व चर्म रोग पीड़ा देगा। गले व हृदय से सम्बन्धित रोग होंगे। यदि आप २५वें वर्ष में चल रहे हैं तो भाग्योदय या उन्नति सम्बन्धी प्रयास न करें। सफेद वस्तु का दान या सोमवार का व्रत भी न करें।

आपको ध्यान होना चाहिए कि अंक ८ व ९ से आपकी भर पूर मित्रता है फलतः तारीख ८।१७।२६ तथा ९।१८।२७ भी फल देने में शुभ रहेंगे। अंक आठ के स्वामी शनि तथा ९ के स्वामी

मंगल हैं अतः इनका शुभत्व निम्न प्रकार से समझना चाहिए—

शुभ तारीख—८।१७।२६ तथा ९।१८।२७

शुभ वार—८।१७।२६ को शनि तथा ९।१८।२७ को मंगलवार।

स्वाभाविक शुभत्व—शनि अशुभ व मंगल भी अशुभ है।

शुभ नामाक्षर—८।१७।२६ तारीख को मो, जा, जी, खी, खू, खे, खा, गा, गी, गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा तथा ९-१८-२९ को चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ।

शुभ नक्षत्र—८।१७।२६ को उत्तराषाढ़ के अंतिम ३ चरण, श्रवण घनिष्ठा, शतभिषा व पूर्वा भाद्रपद के प्रथम ३ चरण तारीख ७।१८।२७ को अश्विनी, भरणी, कृतिका का प्रथम चरण, विशाखा अंतिम चरण, अनुराधा व ज्येष्ठा नक्षत्र।

जाति—८।१७।२६ तारीख को अन्त्याज व ९।१८।२७ को क्षत्रिय वर्ण के लोग।

रंगों की शुभता—८।१७।२६ को हरापन लिए काला व ९-१८-२७ को गौरवर्ण युक्त लाल रंग।

लिंग—८।१७।२६ को नपुंसक व ९।१८।२७ को पुरुष वर्ग।

अवस्था—८।१७।२६ तारीख को अत्यन्त वृद्ध जन ९।१८।२७ तारीख को बाल्यावस्था के व्यक्ति शुभत्व देंगे।

दिशा—८।१७।२६ तारीख को पश्चिम दिशा एवं ९।१८।२७ को दक्षिण दिशा अनुकूलता प्रदान करेगी।

स्वभाव—८।१७।२६ को तीक्षणता ९।१८।२७ को उग्रता रहेगी।

गुण—८।१७।२६ को तमोगुण व ९।१८।२७ को भी तमोगुण ही प्रधानता बनाए रखेगा।

तत्व—८।१७।२६ को वायु तत्व व ९।१८।२७ को अग्नि तत्व की प्रमुखता बनी रहेगी।

ऋतु—८।१७।२६ को शिशिर ऋतु व ९।१८।२७ को ग्रीष्म ऋतु सर्वोत्तम फलदायी रहेगी।

वस्त्र—८।१७।२६ को जीर्ण-शीर्ण व ९।१८।२७ को पुराने वस्त्र करना आपयोगी है।

द्रव्य—९।१८।२७ तारीख को स्वर्ण एवं ८।१७।२६ का लोह।

रत्न—८।१७।२६ को नीलम एवं ९।१८।२७ को प्रवाल, याने मूंगा धारण करना शुभ है।

पशु-पक्षी—८।१७।२६ को चतुष्पाद अर्थात् पक्षी एवं ९।१८। २७ को भी चौपाए जानवर शुभता व अनुकूलता देंगे।

क्रीड़ास्थल—८।१७।२६ तारीख को कूड़ाघर व गंदगी में स्थान व ९।१८।२७ को अग्नि कुंड।

काल समय—८।१७।२६ को वर्ष पर्यन्त व ९।१८।२७ को दिन भर का समय।

अध्ययन—८।१७।२६ को कानून का अध्ययन व ९।१८।२७ को युद्धाभ्यास व वीरोचित साहित्य।

कारक स्थल—८।१७।२६ को पर्वतीय व वनीय भाग ९।१८। २७ को भी।

सुखानुरूपता—८।१७।२६ तारीख को भ्रत्य-सुख-स्नायु संस्थान पाँव का निम्न भाग तथा ९।१८।२७ को बहिन व बहिन का परिवार, शक्ति, मज्जा व पेट से पीठ तक का भाग।

भाग्योदय—८।१७।२६ तारीख को यदि ३६ से ४२ वर्ष की आयु का मध्य भाग है तथा ९।१८।२७ को यदि ३० से ३२ वर्ष की आयु का समय है।

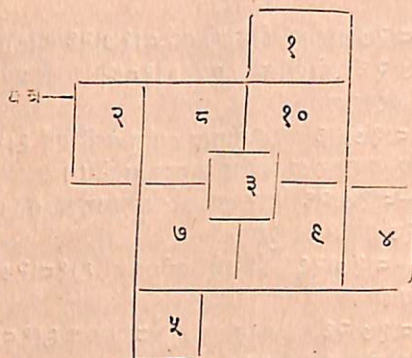
यंत्र—८।१७।२६ तारीख को

१२	७	१४
१३	११	९
८	१५	१०

मंत्र—ॐ शन्नोदेवी रभिण्टय आपो भवन्तु पतिये शयोरभि स्त्रवन्तु नः।

दान—तेल-तिल, जूते, अष्टधातु, पंचधातु, लोह, उड़द, काला वस्त्र, भैंस आदि

९।१८।२७ को



मंत्र—ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम् । अपा घुंरेता छुं सिजिन्विति :

दान—मूँगा, स्वर्ण, गहूँ, ताम्र, मसूर, गुड़; घृत, रक्त वस्त्र, कनेर पुष्प, रोली, गुलाल, रक्त चंदन केशरादि ।

सब मिला कर हम इन तारीखों की शुभाशुभता का ज्ञान निम्न प्रकार कर सकते हैं—

तारीख	शुभाशुभता	तारीख	शुभाशुभता
१	शुभ	१४	अत्युत्तम
२	अशुभ	१५	शुभ
३	सर्वथा अशुभ	१६	अशुभ
४	अनुकूल	१७	अनुकूल
५	अत्युत्तम	१८	अनुकूल
६	शुभ	१९	शुभ
७	अशुभ	२०	अशुभ
८	अनुकूल	२१	सर्वथा अशुभ
९	अनुकूल	२२	अनुकूल
१०	शुभ	२३	अत्युत्तम
११	अशुभ	२४	शुभ
१२	सर्वथा अशुभ	२५	अशुभ
१३	अनुकूल	२६	अनुकूल

२७ अनुकूल
२८ शुभ
२९ अशुभ
३० सर्वथा अशुभ
३१ अनुकूल ।

अंक छः (६) :—

सचमुच अंक छः के स्वामी होने के नाते आप भाग्यशाली व्यक्ति हैं। वे समस्त स्त्री और पुरुष जिनका जन्म ६।१५।२४ तारीख को हुआ है, मूलांक छः ही है। आप सौभाग्यशाली इसलिए हैं कि आपके जीवन पर शुक्र का विशेष प्रभाव है। शुक्र के ही कारण आपमें एक सच्चे कलाकार के कीटाणु पनप रहे हैं। शुक्र के कारण आप सौंदर्य, कामुकता, ऐश्वर्य प्रसाधनों, वीर्य व गुप्त स्थानों का कारकत्व संभाले हुए हैं। शुक्र साक्षात कामदेव का अवतार है इसी कारण आप में कामुकता का बाहुल्य है।

आप हँसमुख, सदैव प्रसन्न रहने वाले, सुन्दर व सुन्दरता के पुजारी, प्रसन्न-चित्त, स्वस्थ, सुन्दर देह के धनी, पतली व सुन्दर बाल, सुन्दर साज-सज्जा के चहेते, वस्त्राभूषण प्रेमी, दीर्घायु, शक्तिमान, सम्मोहन करने में सिद्धहस्त हैं इसी कारण सुन्दरतम स्त्रियाँ आपके ही भाग्य से अपने हिस्से में आई हैं। यदि आप स्त्री हैं तो यही गुण आप में भी है। आप सुन्दर, सुघड़ व सुरुचिपूर्ण स्त्री हैं। काम-पिपासा आपमें आवश्यकता से भी अधिक है।

आप गम्भीर, सर्वथा विश्वासपात्र, उदार, प्रत्येक के प्रति विश्वसनीय हैं। स्नेह व आदर आपको सदैव सर्वत्र मिलता रहता है। आपको पूर्ण सामाजिक भी कहा जा सकता है। सामान्य रूप से आप घुलने-मिलने वाले, लोकप्रिय, सभा सोसायटियों, क्लबों व नांचघरों में भाग लेने वाले, सुन्दर वस्त्र, सुन्दर भोजन, सुन्दर स्त्री, सुन्दर भवन की सदैव इच्छा रखते हैं। कलात्मक वस्तुएँ संग्रह करना चाहते हैं। बनाव-शृङ्गार व सुन्दर साथी की सदैव इच्छा आपको रहती है, अतिथि सत्कार में आप चार हाथ आगे रहते हैं।

'ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत' चार्वाक की थ्यौरी पर आप विश्वास करते हैं। चाहे जैसी स्थिति हो या वातावरण आप अपने खान-

पान, बनाव-शृङ्गार, रहन-सहन में कमी नही आने देते । सामान्य को असामान्य बना देने की कला आप जानते हैं । दूसरों के बिना बात टोकते रहते हैं । छोटी-छोटी बातों पर आलोचना करना, मीन-मेख निकालना, कमियाँ ढूँढना आपकी अपनी आदत में सुमार है । झगड़े-टण्टे से दूर रहने वाले, आपको समझौतावादी कहा जा सकता है ।

• आप भौतिकवादी होकर भी अपव्ययी व खर्चालू हैं । संगीत, काव्य, चित्रकला में विशेष रुचि आपकी बनी रहती है ।

आप अपनी बात को निभाने वाले, बात के धनी व हठी स्वभाव के हैं । जान जाय पर आप अपनी बात नहीं जाने देते । मित्र सदैव आपको घेरे रहते हैं । मित्र बनाने में जितने आप सिद्ध हस्त हैं उतना कोई नहीं । अनुशासनहीनता, औघड़पन व गंदगी, फूहड़पन को आप कत्तई सहन नहीं कर सकते ।

आप अपने जीवन में कभी भी आकस्मिकता को प्रश्रय नहीं देते । आप यह भी नहीं चाहते कि जीवन में एकदम यकायक से उतार-चढ़ाव भी आये । जीवन जिस गति से चलता है उसे उसी गति से चलते रहने देना चाहते हैं । हाँ, मानसिक रूप से आपको अवश्य असंतुष्ट या चिंतित कहा जा सकता है और इसका कारण यही है कि आपकी हर आधुनिकता की पूर्ति हर समय संभव नहीं होती इतना ही क्यों व्ययशील होने के कारण पैसा आपके पास टिकता नहीं और फलतः समय पर इच्छा-पूर्ति नहीं हो पाती । नतीजे के रूप में मानसिक तनाव बढ़ जाता है और छोटी-छोटी बात पर झुंझला उठते हैं, परेशान हो जाते हैं, सन्तुलन खो देते हैं स्वभाव में एक अजीब सा जिद्दीपन या चिड़चिड़ाहट आ जाती है ।

आपके लिए अगर यह कहें कि आप सीधे बचपन से बुढ़ापे में ही प्रवेश करते हैं । आपके कंधों पर सदैव जिम्मेवारी का बोझ लादे रहते हैं अतः समय से पहले ही आप पर बुढ़ापा हावी हो जाता है । आपकी अपने परिवार के प्रति, समाज के प्रति जिम्मेदारी कुछ अधिक ही बनी रहती है । आप अपने भविष्य के प्रति सदैव चिन्तित रहते हैं । वर्तमान सदैव चिन्ता में बनाए रखता है ।

मानसिक परेशानियाँ निरंतर घेरे रहती हैं। भूत काल को सदैव आप याद करते रहते हैं या कहें भूत के प्रति बड़ा स्नेह रहता है। स्वयं को दूसरों से ऊँचा उठाए रखना पसन्द करते हैं। आशावादिता का दीपक निरन्तर जगमगाता रहता है तथा भारी कष्ट, विपत्ति व परेशानी होने पर भी आशा को नहीं छोड़ते। यदि सत्य कहूँ तो आशा ही आपका सच्चा साथी है तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। आशा ही जीवन में संघर्ष करने की सच्ची प्रेरणा देता है।

सौंदर्य की ओर भर पूर आकर्षण के कारण बाल्य काल से ही सुन्दर व नवीन ढंग से फोटू खिचवाना, फोटो के एलबम तैयार करना, सिनेमा, देखना व नायक-नायिकाओं के चित्र सँजोना ड्रामा, डांस, नाचघरों के चक्कर काटना व उनमें भाग लेना पसन्द करते हैं।

सदैव दूसरों की सहायता करने में आप आगे रहते हैं तथा यथा सामर्थ्य दूसरों की भरपूर सहायता करते हैं। आपको दान वीर कहा जाय तो अन्युक्ति नहीं होगी। आप आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न तो नहीं कहे जा सकते परन्तु आवश्यकताएँ इतनी बढ़ी-चढ़ी रहती हैं कि निरन्तर कमी का ही अनुभव करते हैं। इतने पर भी परोपकार की आदत नहीं छूटती।

गुप्त रहस्यों का पता लगाने में आप की बराबरी कोई कर सके ऐसा सम्भव नहीं। कोई व्यक्ति क्यों आया है? वह क्या चाहते हैं? उसके मन में क्या है? यह धोखा देने की स्थिति में है अथवा नहीं? इन सभी बातों का पता आप बात ही बात में लगा लेते हैं। गंभीर से गंभीर बातों का पता साधारण बातचीत से लगा लेते हैं। सांसारिक ही नहीं घोर सांसारिक होते हुए भी चतुर व नीतिज्ञ हैं आप! किसी भी कार्य को करने से पूर्व हानि-लाभ, जय-पराजय, यश-अपयश की परीक्षा कर लेते हैं।

पूर्ण मनोयोग व एकाग्रता से काम में जुट जाने की आप में अद्भुत क्षमता है। जो कार्य हाथ में ले लिया है उसे पूरा करके ही छोड़ेंगे। राह में चाहे जितनी रुकावटें आ जायें पर आपके मार्ग को डिगा सकें, ऐसा संभव नहीं है। जीवन भर बदल-बदल कर आजीविका के साधन अपनाते रहेंगे। एक साथ एकाधिक कार्य

कर आप अर्थोपार्जन भी करेंगे अर्थात् आय के कई स्रोत होंगे।

हाँ, आपका गृहस्थ जीवन श्रेष्ठ नहीं कहा जा सकता। निरन्तर कारण-अकारण उठा-पटक, अनबन या कलह का वातावरण बना रहता है। इसका कारण क्षमा करें मात्र अन्यान्य स्त्रियों के पीछे आपका भागते रहना है। पत्नी की ओर जितना ध्यान देना चाहिए आप देते नहीं हैं।

आपको हर समय किसी न किसी साथी की आवश्यकता रहती है। संगे-साथी के बिना आप एक क्षण भी रह नहीं सकते। पार्टियों में जाना, शराब पीना, नाच-गाने, खेल-तमाशे और मनोरंजन बिना आप नहीं रह सकते।

आप शारीरिक श्रम अधिक नहीं कर सकते कारण आलस्य व निराशा की भावना आप में आवश्यकता से भी अधिक है। श्रम के अभाव में आपकी उन्नति रुक जाती है। श्रम करने की क्षमता तो आप में है, आगे बढ़ने की योग्यता भी है पर आलस्य व विलासिता अवरुद्धता उत्पन्न कर देता है। गप्पे मारने का भी बुरा शौक आपको है।

माता-पिता से भी आपके सम्बन्ध मधुर नहीं रह पाते। आपकी शौकीन प्रवृत्ति व लड़कियों के पीछे भागने की प्रवृत्ति के कारण वे सदैव रुष्ट रहते हैं पर आप उतने ही अधिक माता-पिता के भक्त व अनुयायी हैं तथा उनकी सेवा में सदैव तत्पर रहते हैं।

यदि आप महिला हैं तो आप सौभाग्यशालिनी हैं विश्व में सुन्दरतम स्त्रियों में आपकी गणना की जा सकती हैं। आप चतुर, सुघड़, सुरुचिपूर्ण, चंचल व घोर आधुनिक हैं कपड़ों के प्रति, व्यवहार के प्रति, सुघड़ता के प्रति तत्पर रहती हैं। व्यक्तित्व में दृढ़ता, रुचि व मनमौजीपन है। व्यक्ति को अपनी ओर अकर्षित करने में आप सिद्धहस्त हैं, सौंदर्य के प्रति सदैव जागरुक बनी रहती हैं। भौतिक सुख व सांसारिक सुख आप पूर्णतः भोगती हैं।

कतिपय दोष :—(१) आप श्रम से दूर भागते हैं यह ठीक नहीं है तथा साथ ही साथ निट्ठलेपन व आलस्यपन पर भी नियन्त्रण रखें। चाहे लाभ कम दिखायी दे पर आलस्य न कर निरन्तर कार्य करते हैं। एक- एक सीढ़ी चढ़ते चले जायँ आप अपनी मंजिल पा

लेंगे।

(२) कला व सौंदर्य के प्रति इतने बावले नहीं हो जायें कि घर-गृहस्थी के काम को ही भूल जायें या घरेलू कर्त्तव्य से विमुख हो जायें।

(३) वासनाग्रस्त इतने नहीं हो जायें कि बदनामी की सीमा तक पहुँच जायें या परिवार को, खानदान को कलंकित कर जायें।

(४) हर समय आधुनिक बने रहने या दिखावे या प्रदर्शन में आवश्यकता से अधिक खर्च नहीं करें। उधार लेने की प्रवृत्ति छोड़ दें।

(५) संगी-साथियों के संग बैठ जुआ खेलने, शराब पीने वेश्यागमन आदि कुप्रवृत्तियों को अपना लेते हैं यह ठीक नहीं है। अश्लील साहित्य व चित्रों के व्यवसाय में भी न लगे।

(६) अधिक नशे के कारण चरित्रहीन बन व्यक्तित्व को कुण्ठित कर जाते हैं व समाज में पतित हो जाते हैं।

(७) ईर्ष्या व बदला लेने की भावना पर नियन्त्रण रखें।

आपको यह ध्यान होना चाहिए कि आपके लिए कौन-सा कार्य या व्यवसाय उपयोगी है—

रेस्टोरेंट, होटल, ढाबा, भोजनालय, शिल्पकार, डिजायनर महाजनी कार्य, संगीतज्ञ, उपन्यासकार, नाट्यकार, कहानीकार, लेखन कार्य, बागवानी, वस्त्र व्यवसाय, अभिनय, शृंगार प्रसाधन के क्रय-विक्रय का कार्य, इत्र-सेंट आदि तेलीय पदार्थों का विक्रय, पुष्प विक्रेता, वस्त्राभूषण व्यवसाय, रेशम-टेरेलीन, टेरीन, ऊनी वस्त्रादि का विक्रय, मिष्ठान्न विक्रेता, घड़ी साजी, नृत्याभिनय, काव्य तथा साहित्योपार्जन, सार्वजनिक कार्य, समाज सेवा, दास-वृत्ति, यातायात, मुद्रणालय, खाद्य-विभाग संबंधित समस्त कार्य।

आप देखेंगे कि आप के ही अंक से संबंधित देश-विदेश के कितने महान व्यक्ति हुए हैं जो आपके लिए प्रेरणास्प्रद हो सकते हैं। वे हैं—

१. सज्जन
२. तलत महमूद
३. क्रामवेल
४. लार्ड टेनिसन
५. अकबर महान
६. संत कृपाल सिंह

७. एडमाइरल पेरि
८. दलाईलामा
९. मनोज कुमार
१०. नेपोलियन प्रथम
११. चंगेज खाँ
१२. मोहम्मद रफी
१३. सर वाल्टर स्कॉट
१४. पृथ्वीराज कपूर
१५. जयन्त
१६. शेख मुख्तार
१७. जय मुकर्जी
१८. सईद खां
१९. रीना राय

आपको मालूम होना चाहिए कि आपके संपूर्ण जीवन पर शुक्र का विशेष आधिपत्य है जो स्वाभाविक रूप से शुभकारी ग्रह है। जो वृष एवं तुला राशि पर अपना वर्चस्व बनाए रखता है अतः वे समस्त व्यक्ति जिनकी राशि वृष या तुला है आपके सच्चे साथी, हमदर्द, अच्छे सहायक, भाग्योदय में हितकर एवं कदम-कदम पर आपको उचित सलाह देंगे। शुक्र जब-जब भी गोचर द्वारा वृष या तुलाराशि पर आयेगा। आपका मान, कार्य-क्षेत्र, ऐश्वर्य, धन व स्वास्थ्य बढ़ेगा। वे दिन जिन दिन ६।१५।२४ तारीख को शुक्रवार होगा, सर्वोत्तम रहेंगे। इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो, रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते नाम के प्रथमाक्षर वाले व्यक्ति एवं वे सज्जन जिनका जन्म कृतिका के शेष तीन चरणों में रोहिणी, मृगशिरा के प्रथम दो चरणों में, चित्रा के अंतिम दो चरणों में, स्वाति व विशाखा के प्रथम तीन चरणों में हुआ है आपके लिए भाग्यशाली सिद्ध होंगे। इनसे आप मनचाही सलाह या सहयोग प्राप्त कर सकते हैं।.

६।१५।२४ तारीख को ब्राह्मण वर्ग के व्यक्ति आप की अच्छी सलाह देंगे तथा आपके दुःख-दर्द में सहायक होंगे भाग्य-निर्माण में सहायता देंगे आपके वास्ते ब्राह्मण व्यावसायिक लाभ व नौकरी में उन्नत्ति के कारण बनेंगे अतः इनका सहयोग अवश्य लें।

आपको चाहिए कि आप रंग-रंगीले, चितकबेर चटक रंग के वस्त्रों, पर्दों, जालियों, बैडशीट, तकिये के गिलाफ व अन्यान्य उपयोगी चीजों में यह रंग आवश्यक रूप में लें। आपके व्यक्तित्व को बढ़ाने में यह सहायता देगा। स्त्री जातक आपके भाग्योदय में सहायक होंगी तथा प्रेम-प्रणय और ऐश्वर्य-भोग के क्षेत्र में सहायक

सिद्ध हागो। स्त्री भी यदि युवा वर्ग की है अथवा मध्यावस्था में है तो सोने में सुहागे वाली बात है।

आपको ज्ञात होगा अंक ३ के साथ आप उच्चता का व ५ के साथ नीचता का प्रभाव देते हैं। १।२।४।७।८।९ के साथ साम्य भाव रखते हैं। ६।१५।२४ आप की महा बलवान तारीखें हैं। भरणी, पूर्वा फाल्गुनी, पूर्वाषाढा अपने नक्षत्र हैं। ३।८ अंक के साथ मैत्री पूर्ण निर्वाह करते हैं अर्थात् ३।१२।२१।३० व ८।१७।२६ आपकी मित्र तारीखें हैं। ७ व १ के साथ शत्रुतापूर्ण व्यवहार होने के कारण तारीख १।१०।१९।२८ व ७।१६।२५ शत्रुतापूर्ण रहेंगी, सावधान रहें। २ अंक भी प्रायः शत्रुता का निर्वाह करता है अतः २।११।२०।२४ को सावधानी अपेक्षित है। अंक ५ के साथ सात्विक भाव, ८ के साथ तामस भाव, ७।१।९ के साथ शत्रुभाव रहता है। जातक के मिथुन, कन्या, मकर या कुम्भ लग्न होने पर आपका अंक योगकारक रूप ग्रहण कर लेता है।

आवश्यक होने पर जब यात्रा करनी हो तो आपको आग्नेय कोण में यात्रा करना शुभ फलदायी रहता है और ऐसी स्थिति में यात्रा अवश्य करें, भाग्य लक्ष्मी आपका इन्तजारकर रही है। स्वभाव में धैर्य, लघुता व शान्ति तथा रजो गुण की प्रधानता के कारण भोग-विलास मनोरंजन, यात्रा, पर्यटन को कहीं अधिक पसंद करेंगे। जल तत्व को प्रधानता के कारण जो स्थान आर्द्र हैं, जलीय तट पर बसे हैं कार्य-क्षेत्र के रूप में, व्यावसायार्थ उत्तमोत्तम फल प्रदान करेंगे यदि ऐसे स्थानों पर आपका कोई कार्य रुका है या नए सिरे से प्राम्भ करना है तो थूकना नहीं चाहिए, यह स्थान लाभ ही देंगे। यदि ऋतु के अनुसार बसन्त ऋतु है तो क्या कहना? साफ, चमकीले वस्त्र आपके व्यक्तित्व में निखार लायेंगे।

अगर संभव हो सके तो आप स्वर्णाभूषण धारण करें तथा हीरा जड़ित अंगूठी पहनें। ऐसा करने पर आपके रुके हुए कार्य, आधे अधूरे कार्य पूर्ण होंगे। आशातीत लाभ व भाग्योदय में सहायता मिलेगी।

शयनागार, कौतुकागार, शयन स्थल, मनोरंजन स्थल-सार्व जनिक स्थानों के प्रति आपकी रुचि सर्वाधिक बनी रहेगी। जो भी भला-बुरा कार्य होगा उसका प्रभाव वर्ष पर्यन्त बना रहेगा। संगीत व वाद्य का अभ्यास, मनोरंजन आदि के क्षेत्र में आप विशेष सफलता अर्जित करेंगे। जलाशय तट भाग्योदय में सहायक है। स्त्री, परिवार व कुटुम्ब की ओर से शुभ फलों की प्राप्ति होगी।

यदि २८ वाँ वर्ष आपको गतिमान है तो आप भाग्योदय के लिए प्रयास कर सकते हैं, मिलना-जुलना, भेंट या प्रार्थना-पत्र देना, संपर्क साधना, यात्रा करना उत्तम रहेगा आप अपने उद्देश्य में सफल होंगे।

आप प्रातः उठ कर स्नानादि से निवृत्त होकर धुले वस्त्र पहन, स्वस्थ मन:स्थिति में निम्न मंत्र का जाप करते हुए भोज-पत्र पर यन्त्र बनावें। यंत्र अष्ट गंध से अनार की कलम से बनावें उसके बाद उन्हें जल में प्रवाहित कर दें, आशातीत सुफल प्राप्त करेंगे।

यंत्र—

११	६	१३
१२	१०	८
७	१४	९

मंत्र—ॐ अन्नात् परिस्त्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत् क्षत्रं पयः। सोमं प्रजापतिर्ऋतेन सत्य मिन्द्रियं विपान घुं शुक्रमन्धस इन्द्र-स्येन्द्रिय मिद पयोमृतम्मधु॥

दान—हीरा, स्वर्ण, रजत, चावल, मिश्री, दूध, दही, घृत, चीनी श्वेत वस्त्र, अश्व, चंदन, सुगन्धित द्रव्य, वाहनादि।

आपको ज्ञात होगा अंक ३ के साथ आपके सर्वोच्च सम्बन्ध हैं अतः ३।१२।२१।३० तारीख भी सर्वोत्तम फल प्रदान करेंगी। यदि उक्त तारीख को बृहस्पतिवार हो तो क्या कहना? बृहस्पति स्वतः अपने में शुभ ग्रह है, अतएव उक्त तारीख को

उसका शुभता और अधिक बढ़ जायेगी। ३।१२।२२।२० तारीख को मूल, पूर्वाषाढ़ा उत्तराषाढा नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्मे व्यक्ति ये,यो,भा,भी,भू,धा,फा,ढा भे नाम से प्रारम्भ होने वाले व्यक्ति तथा दी,दूँ,घ,झ,ज,दे,दो,चा,ची नाम से प्रारम्भ होने वाले व्यक्ति या पूर्वाभाद्र पद के अंतिम चरण, उत्तराभाद्रपद व रेवती नक्षत्रोत्पन्न व्यक्ति सच्चे साथी सिद्ध होंगे। ब्राह्मण वर्ण के व्यक्ति आपको सर्वाधिक सहायता देंगे। उनके द्वारा आपको लाभ होगा।

आप पीले रंग के वस्त्र धारण करें। दैनिक उपयोग में खान-पान में भी पीले रंग का उपयोग करना अधिक शुभ रहेगा। यह रंग आपके व्यक्तित्व को निखारेगा। वर्चस्व बढ़ायेगा। धनोपार्जन में सहायक होगा। पुरुष वर्ग और वह भी प्रौढ़ व्यक्ति अधिक मददगार साबित होगा। प्रौढ़ से की गई सलाह अधिक उचित व हितकारी होगी।

किसी कार्य विशेष के कारण यात्रा करना आवश्यक हो, किसी से मिलना भेंटना हो या सम्पर्क साधना हो तो उसके लिए ईशान कोण दिशा ही सर्वाधिक श्रेष्ठता प्रदान करेगी। स्वभाव में मृदुता, धैर्य, अध्यवसाय व शान्ति बनी रहेगी। मन मस्तिष्क में सात्विक भाव प्रधान रहेगा। मित्रता का क्षेत्र अधिक बढ़ेगा तथा उच्चाधिकारियों के साथ मृदु संबंध रहेंगे। वैर-विरोध समाप्त हो जायेगा। पुरानी वैमनस्यता का अंत निश्चित समझें। आकाश तत्व की प्रधानता रहने के कारण वायु रोग, गठिया रोग से मुक्ति, वायु यात्रा द्वारा लाभ एवं ऐश्वर्य प्राप्त होगा। हेमन्त ऋतु सर्वाधिक अनुकूल व हितकर रहेगी इस ऋतु में ३।१२।२१।३० तारीख को किए कार्य अवश्य ही पूर्ण सफलता प्रदान करेंगे।

यथासम्भव आप चाँदी के आभूषण धारण करें तथा पुखराज निर्मित अंगूठी धारण करने पर समस्त समस्याओं से मुक्ति मिल जायेगी। मनुष्य मात्र से आपको लाभ प्राप्त होगा, इसी प्रकार पक्षी जगत भी हितवर्धक होगा। भण्डारगृह, कोषागार व गोदाम में कार्य-क्षेत्र रखने वालों के लिए ये दिन सर्वोत्तम फल दायी हैं। जो कुछ भी आप कार्य करते हैं उसका प्रभाव महिने

भर तक बना रहेगा। वेदाभ्यास करना श्रेष्ठ है। इसके अतिरिक्त व्याकरण का पढ़ना व पढ़ाना भी सर्वोत्तम रहता है। विद्वद समान व ग्राम्य भाग में आपका मान-सम्मान बढ़ेगा।

सन्तान पक्ष से शुभ समाचार प्राप्त होंगे। संतान पक्ष आपको लाभ देगा। परीक्षा में उत्तीर्ण, यदि नौकरी के उच्छुक हैं तो नौकरी प्राप्त होगी। ज्ञान-ध्यान व सुख-सुविधाओं में वृद्धि होगी। चर्बी संबंधी या कमर पीड़ा या जाँघ संबंधी रोग है तो उस रोग से आपको छुटकारा मिल जायेगा। शांति व धैर्य की प्राप्ति होगी। यदि आपको २१वाँ वर्ष चल रहा है तो आप भाग्योदय के लिए प्रयास कर सकते हैं।

आप नित्य प्रातः निम्न यंत्र को भोजपत्र पर निम्न मन्त्र का जाप करते हुए बाजार तदुपरान्त उसे जलाशय में बहा दें यह उत्तमता, धन व ऐश्वर्य प्रदान करेगा—

यंत्र

१०	५	१२
११	९	७
६	१३	८

मंत्र—ॐ बृहस्पते अदितयदर्य्यो अर्हाद्युमद्वि भाति ॠतु मज्ज नेषु यद्दीदयच्छवस ऋत प्रजातदस्मासु द्रविर्ण धेहि चित्रम्।

दान—पुखराज, केला, नारंगी, नीबू, बेसन, चने की दाल, पीला वस्त्र, पीत पुष्प, पुस्तक, स्वर्ण, कांस्य पात्र, चीनी, शक्कर, घृत, हल्दी व अन्यान्य पीली वस्तु।

अंक ५ आपके लिए नीचत्व कारक है फलतः ५।१४।२३ तारीख को सर्वथा अशुभ फल प्राप्त होंगे। यदि उक्त तारीख को बुधवार रहे तो वह सर्वथा अशुभ फल प्रदान करेगा की. की. कू, घ. ड. छ. के. को. हा. टो. पा. पी. पू. ष. ण. ठ. पे. पो. नाम से प्रारम्भ होने वाले व्यक्ति, मृगशीर्ष के शेष दो चरण आर्द्रा व पुनर्वसु के प्रथम तीन चरण वाले, उ. फाल्गुनी के अंतिम तीन

चरण, हस्त व चित्रा के प्रथम दो चरणोत्पन्न व्यक्ति आपको सर्वथा धोखा देंगे। आपके लिए परेशानियाँ उत्पन्न करेंगे, अत: ऐसे लोगों से सावधान रहना चाहिए। वे व्यक्ति जो शूद्र जाति के, अनुसूचित जाति, या जनजाति के हैं उनसे कुछ अधिक सावधान रहें।

जहाँ तक वस्त्र व रंग-खान-पान व दैनिक उपयोग की वस्तु का प्रश्न है कालिमा-युक्त हरे रंग से सर्वथा दूर रहें अन्यथा कुछ भी अहित हो सकता है। विपत्ति का सामना करना पड़ सकता है। आपका अंक स्वयं नपुंसक है अत: बाल्यावस्था वाले लोगों से सावधान रहें। उनके कारण विपत्ति में पड़ सकते हैं।

वृद्ध या प्रौढ़ व्यक्ति भी आपके लिए विपत्तिमूलक हो सकते हैं भूल कर भी उत्तर दिशा में यात्रा नहीं करें तथा अपना कार्य स्थल हैं, व्यवसाय स्थान है, किसी से मिलना-भेंटना है तो पूर्ण सावधानी रखें। स्वभावत: उदासीन रहेंगे, झुंझलाहट मानसिक कुंठा व संत्राश का भाव आप पर छाया रहेगा। रजोगुण की प्रधानता के कारण भोग व प्रेम सम्बन्धों को लेकर अपमानित हो सकते हैं, कुछ भी अहित हो सकता है गुप्तांग संबंधी रोग पीड़ा दे सकते हैं, पृथ्वी तत्व के कारण भूमि-भवन-मकान-कृषि या तत्संबंधी कार्यों के कारण समस्याएँ नए शिरे से उभर सकती हैं, विपत्ति में डाले या आर्थिक हानि पहुँचाना संभव है।

मूलत: शरद ऋतु और अधिक कष्ट प्रधान रहेगी तथा परेशानियाँ बढ़ेंगी। पुराने व उतरे हुए वस्त्र भूल कर भी नहीं पहनें। कांस्य या सीप की बनी वस्तु को दैनिक उपयोग में लाएँ। यदि पन्ना जड़ित अंगूठी पहन रखी है तो उसे उतार दें वह परेशानी देगी। अकस्मात चोट का लगना संभव है। आंत संबंधी विभिन्न रोग परेशान कर सकते हैं। क्रीड़ागार को ५।१४।२३ ता० को मोह छोड़ दें तो ही उत्तम रहेगा, ऋतु पर्यन्त इस प्रभाव से बचे रहें। गणित संबंधी कार्य में, बैंकिंग में पूर्ण सावधान रहें; भूल पर भूल होने के कारण नौकरी पर आंच आ सकती है या अपना रिकार्ड बिगड़ सकता है। पढ़ें-लिखे लोगों से सर्वाधिक वैर विरोध होगा।

बहिन व बहिन पक्ष से वैमनस्यता, विरोध, कलह व परस्पर अनबन हो सकती है। आप अपनी जिह्वा पर नियन्त्रण नहीं रख सकेंगे इसी कारण कलह की भी स्थिति उत्पन्न होगी। चर्म रोग फोड़े-फुंसी पीड़ा देंगे और हाथ-पाँव के चोट लगने की आशंका सर्वाधिक है अतः सावधान रहें। अनावश्यक खतरा उठा कर कोई भी कार्य आप न करें।

यदि ३५-३६ वां वर्ष चल रहा है तो आपको भाग्योदय के लिए प्रयास करने की आवश्यकता नहीं है ऐसा करने पर प्रायः असफलता ही प्राप्त होगी। दान पुण्य की आवश्यकता होने पर भी पन्ना, स्वर्ण, मूंगा, कांस्य पात्र, घृत, शक्कर, कर्पूर, हरे वस्त्र, हरित वस्तु, हाथी दाँत, पंचरत्न आदि का दान न दें।

अंक आठ भी आपका मित्र है अतः ८।१७।२६ तारीख भी मित्रतापूर्ण व्यवहार रखेंगी। स्वामित्व शनि से होने के कारण उक्त तारीख को शनिवार होना और भी उत्तम है वे व्यक्ति जो मकर व कुंभ राशि के हैं या जिनका नाम भो. जा. जी- खू. खो. गा. गी. गू. गे. गो. सा. सी. सू. से. सो दो अक्षर से आरंभ होते हैं अथवा जिनका जन्म उत्तराषाढा नक्षत्र के अंतिम चरण, श्रवण, धनिष्ठा या शतभिषा व पूर्वा भाद्रपद के प्रथम तीन चरण में हुआ है, वे अच्छे साथी सिद्ध होंगे।

अन्त्यज, समाज व्यक्त व प्रताड़ित व्यक्तियों से आपको भरपूर सहयोग प्राप्त होगा अतः उनसे भरपूर सहायता लें। हरे व गहरे रंग के काले रंग के वस्त्र पहनना व दैनिक उपयोग में आने वाली वस्तुएँ यदि इसी के रंग की हों तो सर्वोत्तम रहेगा। अत्यन्त वृद्ध व्यक्तियों द्वारा आपको भरपूर सहयोग प्राप्त होगा। वे अच्छे सलाहकार रहेंगे। उनकी राय अमूल्य रहेगी।

पश्चिम दिशा में की गई यात्रा कारगर होगी एवं अपने उद्देश्य में सफलता व इष्ट सिद्धि मिलेगी। किसी कार्य के लिए आप जायेंगे उनके आशाजनक परिणाम भी प्राप्त होंगे। स्वभाव में तीक्ष्णता के कारण जोशीले कार्य आप अधिक सुघड़ता व आनंद से कर सकते हैं, करें। तमोगुण की प्रधानता भी रहेगी। वायु तत्व प्रधानता के कारण वायुरोग से मुक्ति, हवाई यात्रा

करने पर पूरी सफलता एवं शिशिर ऋतु में यह प्रभाव और बढ़ जाता है। हो सके तो पुराने वस्त्रों को ही पहनें वे ठीक फल देंगे। लोहे की या पंच धातु की अंगूठी पहनना, नीलम धारण करना सुख सौभाग्य, आनंद, ऐश्वर्य, धन वृद्धि, आदि के लिए श्रेष्ठ है। मनुष्य मात्र आपके लिए हितकर है।

कूड़ाघर, गंदे स्थान पर अधिक सफलता मिलती है या वे स्थान जहाँ समाज से छुप कर कार्य होते हैं, हित होता है कानून के अध्ययन, कोर्ट कचहरी के कार्यों में, दावे व मुकदमेबाजी में अधिक सफलता मिलती है। पर्वतीय व वनीय स्थान आपके भ्रमण का कार्य के लिए उत्तम है, लाभ लें।

भत्यों से आनंद व कार्य की सफलता तथा दुःखों से छुटकारा स्नायविक दुर्बलता का नाश तथा घुटने से पांव तक के भाग में कोई रोग है तो उससे छुटकारा पायेंगे। ३६ से ४२ वर्ष के मध्य की आयु है तो आप भाग्योदय के लिए सफल प्रयास कर सकते हैं। लोगों से मिलें, सम्पर्क साधें एवं दौड़ धूप कर सकते हैं।

नित्य प्रातः निम्न मंत्र का जाप करते हुए निम्न यंत्र भोज पत्र पर १०८ बार बनावें एवं उसे जल में बहा दें यह उपाय भाग्योदय में सहायक होगा।

मंत्र—शन्नोदेवीरमिष्टय आपो भवन्तु पीतये शंय्योरभिस्य वन्तुनः।

यंत्र—

१२	७	१४
१३	११	९
८	५	१०

दान—तेल, तिल, जूते, पंचधातु, लोहा, उड़द, काले वस्त्र, गौ, भैंस आदि।

अंक १।७।२।४ के साथ शत्रुगत भाव होने के कारण इनसे संबंधित तारीखों को सर्वथा ही अशुभ, हानि कारण, धोखा प्राप्त होने, कष्ट, रोग कारक हैं।

अशुभ तारीखें—१।१०।१९।२८, ७।१६।२५, २।११।२०।२९ तथा ४।१३।२२।३१।

अशुभ वार—१।१०।१९।२८ तारीख को रविवार तथा शेष २।११।२०।२९, ४।१३।२२।३१ तथा ७।१६।२५ तारीख को सोमवार।

अशुभ नक्षत्र—१।१०।१९।२८ तारीख को मघा, पूर्वा फाल्गुन व उ फाल्गुनी का प्रथम नक्षत्र तथा २।११।२०।२९, ४।१३।२२। ३१ तथा ७।१६।२५ तारीख को पुनर्वसु का अंतिम चरण, पुष्य व आश्लेषा नक्षत्र।

अशुभ नामाक्षर—१।१०।१९।२८ तारीख को मा मी मू मे मो टा टी टू टे तथा शेष २।११।२०।२९, ४।१३।२२।३१ तथा ७।१६।२५ तारीख को ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो।

अशुभ राशि—१।१०।१९।२८ तारीख को सिंह राशि तथा शेष २।११।२०।२९, ४।१३।२२।३१ व ७।१६।२५ तारीख को कर्क राशि अशुभता देती है।

अशुभ जाति—१।१०।१९।२८ तारीख को क्षत्रिय एवं २। ११।२०।२८, ४।१३।२२।३१ व ७।१६।२५ तारीख को वैश्य।

अशुभ रंग—१।१०।१९।२८ तारीख को कालिमायुक्त लाल रंग तथा २।११।२०।२९, ४।१३।२२।३१ व ७।१६।२५ ता० सफेद रंग का प्रयोग सर्वथा अशुभ रहेगा।

लिंग—१।१०।१९।२८ तारीख को पुरुष वर्ग व २।११।२०। २९, ४।१३।२२।३१ व ७।१६।२५ तारीख को स्त्री वर्ग सर्वथा प्रतिकूल रहेंगी।

अवस्था—१।१०।१९।२८ तारीख को वृद्ध एवं २।११।२०। २९, ४।१३।२२।३१ व ७।१६।२५ तारीख को युवा वर्ग सर्वथा धोखेबाज सिद्ध होंगे।

अशुभ दिशा—१।१०।१९।२८ तारीख को पूर्व तथा २।११। २०।२९, ४।१३।२२।३१ व ७।१६।२५ तारीख को वयव्य कोण दिशा यात्रार्थ प्रतिकूल रहेगी।

स्वभाव—१।१०।१९।२८ को स्वभाव अस्थिर व शेष २।११ २०।२९, ४।१३।२२।३१ व ७।१६।२५ तारीख को चलायमान

रहेगा ।

गुण—१।१०।१९।२८ तारीख को सत्वगुणों का अभाव तथा इसी प्रकार २।११।२०।२९, ४।१३।२२।३१ व ७।१६।२५ तारीख को भी सत्व गुणों का अभाव ही रहेगा ।

तत्व—१।१०।१९।२८ तारीख को अग्नि तत्व से अहित व २।११।२०।२९, ४।१३।२२।३१ तथा ७।१६।२५ तारीख को जल तत्व से अहित सम्भव है ।

ऋतु—१।१०।१९।२८ तारीख को ग्रीष्म ऋतु व २।११।२०। २९, ४।१३ २२।३१, ७।१६।२५ को वर्षा ऋतु अशुभता मूलक है ।

वस्त्र अशुभता—१।१०।१९।२८ को मोटे वस्त्र और २।११। २०।२९, ४।१३।२२।३१ व ७।१६।२५ ता० को नए वस्त्र पहनना ठीक नहीं है ।

अशुभ द्रव्य—१।१०।१९।२८ तारीख को ताम्र तथा २।११। २०।२९, ४।१३।२२।३१ व ७।१६।२५ तारीख को चांदी का उपयोग अशुभ सूचक है ।

अशुभ रत्न—१।१०।१९।२८ को माणिक्य तथा २।११।२०। २९, ४।१३।२२।३१ तथा ७।१६।२५ तारीख को मोती पहनना सर्वथा अशुभ है ।

पशु-पक्षी-रूप—१।१०।१९।२८ को पक्षी वृंद तथा २।११। २०।२९, ४।१३।२२।३१ तथा ७।१६।२५ ता० को रेंगने वाले जीव जन्तु से सावधान रहें ।

अशुभ कार्य स्थल—१।१०।१९।२८ को देव स्थान तथा २। ११।२०।२९, ४।१३।२२।३१ व ७।१६।२५ को आर्द्र स्थान तटीय नगर, नदी-समुद्र आदि के किनारे बसे नगर अशुभता मूलक हैं ।

काल-समय—१।१०।१९।२८ को किए कार्य का प्रभाव अयन पर्यन्त तथा २।११।२०।२९, ४।१३।२२।३१ व ७।१६।२५ को हुए अशुभ कार्य का प्रभाव अत्यल्प समय तक रहेगा ।

अध्ययन—१।१०।१९।२८ तारीख को राजनीति का व २। ११।२०।२९, ४।१३।२२।३१ और ७।१६।२५ तारीख को भूल कर भी ज्योतिष या दैविक, धार्मिक अध्ययन न करें ।

अकारक स्थल—१।१०।१९।२८ को पर्वतीय क्षेत्र व वनीय

भाग तथा २।११।२०।२९, ४।१३।२२।३१ व ७।१६।२५ तारीख को जलाशय स्थल अशुभ फल देंगे।

सम्बन्ध व रोग—१।१०।१९।२८ को पिता से अनबन व मत-भेद आत्मिक कष्ट, अस्थि संबंधी पीड़ा व सिर, मुख पर चोट लग सकती है जबकि २।१०।२०।२९, ४।१३।२२।३१ व ७।१६।२५ को माता व मातृपक्ष से अनबन, मानसिक कष्ट, रक्त विकार, गले व हृदय संबंधी रोग।

अभाग्य मूलक—यदि २४।२५ वां वर्ष चल रहा है तो १।१० १९।२८ को व २५ वां ६ वर्ष है तो शेष तिथियों को भाग्योदय संबंधी प्रयास न करें।

दान—१।१०।१९।२८ को माणिक्य, स्वर्ण, ताम्र, गेहूँ, गुड़, घी, लाल वस्त्र, रक्त पुष्प, रक्त चंदन का दान तथा २।११।२०। २९, ४।१३।२२।३१ और ७।१६।२५ को मोती, चांदी, कपूँर, दूध-दही, कर्पूर, चावल, मिश्री श्वेत पुष्प, शंख, पुस्तक का दान न दें।

तिथियों की अशुभता-शुभता—

तारीख	शुभाशुभ	तारीख	शुभाशुभ
१	अशुभ	१५	उत्तम
२	,,	१६	अशुभ
३	सर्वोत्तम	१७	सुन्दर
४	अशुभ	१८	मध्यम
५	नि:कृष्ट	१९	अशुभ
६	उत्तम	२०	अशुभ
७	अशुभ	२१	सर्वोत्तम
८	सुन्दर	२२	अशुभ
९	मध्यम	२३	नि:कृष्ट
१०	अशुभ	२४	उत्तम
११	अशुभ	२५	अशुभ
१२	सर्वोत्तम	२६	सुन्दर
१३	अशुभ	२७	मध्यम
१४	नि:कृष्ट	२८	अशुभ

२९ अशुभ ३१ अशुभ
३० सर्वोत्तम

अंक सात ७)—

आपका जन्म ७।१६।२५ तारीख को हुआ है अतः आपका मूलांक ७ है और हैं आप भाग्यशाली। आप अपने जीवन में उन लोगों से प्रेरणा ले सकते हैं जिनका मूलांक ७ है और वे हैं—विलियम वर्ड्सवर्थ, ब्राऊनिंग, ओ० पी० नय्यर, मदन मोहन, अटल बिहारी बाजपेयी, श्यामा प्रसाद मुकर्जी, रानी एलिजा बथ, लीला नायडू, मार्कोनी, उषा खन्ना, रानी लक्ष्मीबाई, चन्द्र शेखर, जितेन्द्र, रवीन्द्रनाथ टैगोर, हेमा मालिनी आदि।

आप जब कर्म-क्षेत्र में उतरें तो आपको यह ध्यान होना चाहिए कि आपके लिए कौन-कौन से कार्य सर्वथा उपयोगी व हितकारक हैं। वे हैं—तैरानी, फिल्मी उद्योग, अभिनय, वायुसेना, यात्रा सम्बन्धी कार्य प्रधानतः समुद्र यात्रा, पर्यटन, ड्राइवरी, बाबू गिरी, दूध विक्रेता, सेक्रेटरी जल जहाज के कार्य, औषधि कार्य, चिकित्सक, मछियारा, केमिस्ट, सर्जन, कृषि कर्म, गुप्तचरी का कार्य, पत्र-कारिता, रबर डीलर, स्टेट्समेन, प्रकृति लेखन, सम्पादन, प्लास्टिक वर्क, ललित कला सम्बन्धी कार्य, राज्याधिकारी, अँधेरे के कार्य, कूटनीटिक कार्य, नियन्त्रक, भूमिगत पदार्थों का व्यवसाय एवं ट्रांस-मीटर, रेडियो, ट्रांसलेटर का कार्य हितकर रहता है। आपको इस ओर ध्यान देना चाहिए।

नेप्च्यून या वरुण का आपके जीवन पर प्रभुत्व है, वर्चस्व है जो मूलतः जलीय ग्रह है। यह चन्द्रमा के ही समान गुणधर्मी ग्रह चन्द्रमा से परस्पर गहरी सहानुभूति है।

वरुण के वर्चस्व से आप कष्ट सहिष्णु, धैर्यवान, श्रेष्ठ विचारक, श्रेष्ठ तार्किक तथा भावी को भाँपने की अच्छी क्षमता अपने में रखते हैं। किसी भी घटना की अन्तल गहराई में जाने की क्षमता रखते हैं। बाह्याडम्बर से आपको प्रभावित कर लेना एक दुष्तर कार्य है। कार्य को गुण-धर्मिता को आप तुरन्त पहचान लेते हैं। छोटी-मोटी घटनाएँ आपको कभी प्रभावित नहीं कर सकतीं। किस व्यक्ति से कितना सहयोग लेना है क्या व कब सहयोग लेना

है यह कोई आपसे पूछे ?

आप सैकड़ों-हजारों में अलग ही से पहचान लिये जाते हैं। ..बसे अलग ही आपका व्यक्तित्व दिखायी देता है आपके व्यक्तित्व की यह मूलभूत विशेषता है कि आप क्षुद्र मनोवृत्तियों की ओर ध्यान ही नहीं देते। व्यर्थ गप्पे मारना, बकवास करना, तर्क या विवाद आप पसंद नहीं करते। आप सदैव अपने उद्देश्य को सामने रख कर आगे बढ़ते हैं इसी कारण आप उच्चाभिलाषी, महत्वाकांक्षी, स्वस्थ चिंतन-मनन के धनी, निर्भीक व विशाल व्यक्तित्व के धनी हैं।

सचमुच आप भावना-प्रधान, कल्पनाशील हैं। विशाल मस्तिष्क, उन्नत भाल, सामान्य कद, देदीप्यमान चेहरा, वाणी में ओज व गाम्भीर्य, स्वभाव में व चाल में तीव्रता, बुद्धि से कुशाग्र निर्णायक मति, ऐसे व्यक्तित्व के आगे स्वतः ही झुक जाते हैं।

एक अच्छे साहित्यकार, काव्य-प्रणेता, दार्शनिक, वैज्ञानिक-के कीटाणु आप में विद्यमान हैं। मौलिकता का आप में दूसरा गुण है। कोई भी कार्य, कहीं भी कार्य, कैसी भी कार्य कभी भी हो, पुराने ढर्रे से छोड़ नवीनता का जामा पहना कर उसे प्रस्तुत करेंगे। कार्य के प्रति पूर्ण विश्वास तथा व्यर्थ से व्यर्थ वस्तु में से सार ग्रहण करना कोई आपसे सीखे, धन की अपेक्षा मान-सम्मान की आप अधिक इच्छा करती हैं तीव्र बुद्धि, सदैव आपको कार्य पूर्णता में लाभ की ओर ही ले जाती है।

स्वभावतः दयालु, कृपालु, भावुक हैं अतः निन्दा स्तुति, आलोचना आदि की आप परवाह नहीं करते। आप यह भी नहीं चाहते कि आपके द्वारा किसी को हानि पहुँचे। यही कारण है कि लोग प्रायः आपसे सहयोग लेते हैं पर सहयोग देने के नाम पर शून्य रहते हैं। कार्य-क्षमता की सीमा नहीं पर आपके मूड को क्या कहा जाय। मूड की विचित्र सी एक बीमारी आप से लगी हुई है।

स्वभाव में सिंह गर्जन, निर्भीकता व स्वतन्त्रता के पोषक आप पूर्ण आत्म-विश्वास व आत्म-बल के साथ कोई बात कहने की सामर्थ्य रखते हैं। ऊपर से वज्रादपि कठोर पर भीतर से, अन्तस

से नवनीत सम मृदुल, अन्याय के विरुद्ध आप हर घड़ी संघर्ष करने को तैयार रहते हैं। सन्तोषी, सहिष्णु सीधे-सादे, सौम्य, सुखदायक, योगी व सहयोगी बने रहते हैं समाज में आपका प्रभुत्व अक्षुण्य बना रहता है।

ठंडे मिजाज, कल्पना का संबल लिए, साहस को साथी बनाए धीमी गति से आगे बढ़ते चले जाते हैं। एक साथ अनेक सीढ़ियाँ लाँघने की अपेक्षा एक-एक सीढ़ी चढ़ना ही प्रिय रहता है। कई बार दूसरों की प्रगति आप में हीनता की भावना पैदा कर जाती है और यही आपकी प्रगति का रोड़ा बन जाती है, इस पर समय पर ध्यान देना चाहिए। आप भीतर ही भीतर घुटते रहते हैं, टूटते रहते हैं और अन्ततः निराशा को अपना पतनोन्मुखी हो जाते हैं पर फिर सँभल पूरे जोश से आगे बढ़ते हैं और सफलता पा जाते हैं।

सामाजिक कार्य अपना व्यक्तिगत कार्य छोड़ कर भी, घर का पैसा लगा कर भी पूरा करते हैं। समाज में एक विशेष स्थान बनाए रखने की इच्छा रहती है और उसमें सफल भी होते हैं। आपके मान-सम्मान को कोई चुनौती दे नहीं सकता। मूड व अद्भुत कार्य-क्षमता ही आपको उन्नति के सर्वोच्च शिखर पर पहुँचा देती है। जीवन में कदम-कदम कर सहयोगी तैयार मिलते हैं इस रूप में आप सौभाग्यशाली व्यक्ति हैं। जब भी आपका कार्य अवरुद्ध होता है, कोई व्यवधान आता है, कोई न कोई सहायक स्वतः तैयार हो जाता है।

दया व सहायता करने में भी आपको अद्भुत आनन्द की अनुभूति होती है। दूसरों का दुख असह्य होता है।

जलप्रियता के कारण आप दूरस्थ देशों को कई बार जल यात्रा भी करेंगे पर आवश्यकता इस बात की है कि आप सही समय को पहचान सकें। वायु यात्रा के भी अवसर एकाध बार आपको आयेंगे। ग्रन्थ रचना में आप सफल सिद्ध होंगे। ये लेखन कार्य आपके व्यक्तित्व को बढ़ाने और भविष्य को सँवारने में सहायक हैं। रूढ़िवादी नहीं होने के कारण धार्मिक रीति-रिवाजों के आपको भंजक मान सकते हैं। आयात-निर्यात का कार्य कर आप शत-प्रतिशत सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

अनोखी सूझ-बूझ के धनी आपका मस्तिष्क कभी खोखली या निष्क्रिय रह ही नहीं सकता। हर समय नवीन और नवीन से नवीनतम वस्तुओं का सृजन करते ही रहते हैं, योगसिद्धि, साधना, चिन्तन और मनन आपका उद्देश्य है। न तो स्वयं किसी के बन्धन में रहते हैं और न ही किसी को बन्धन में देखना ही पसन्द करते हैं। जहाँ स्वतन्त्रता के मार्ग में बाधक तत्व दिखे आप विरोध के लिए कूद पड़ते हैं और मरने-मारने पर उतारू हो जाते हैं।

आपको सामान्य रूप से धनी तो नहीं कर सकता परन्तु यदि आप धन-संग्रह के लिए कमर कस लें तो भी धन नष्ट होने की आशंका बनी ही रहती है। हाँ आपका विवाह अवश्य धनाढ्य घर में होने के कारण अर्थाभाव से मुक्त हो जाते हैं।

धोखेबाजी से सदैव परे रहने के कारण व्यापार, व्यवसाय, नौकरी, कारोबार, ऑफिस सर्वत्र अपनी ईमानदारी का धाक जमाए रहते हैं। विनम्रता, दया, घमण्डरहित व ऊपर उठने की लालसा जैसे कुछ अन्यान्य गुणों के आप सागर हैं। आवश्यकता पड़ने पर जहाँ सलाह देते हैं वहीं उचित सलाह देने में चिचकिचाते भी नहीं हैं। उतावलेपन व जल्दबाजी पर नियन्त्रण कर लें तो जीवन देखने योग्य होता है।

परिवार के सदस्यों के साथ आपके सम्बन्ध मधुर नहीं रह सकते कारण आप धोखा, फरेब, लुच्चई, बेईमानी, मक्कारी, चुगलखोरी, हेरा-फेरी, अविश्वास आदि को कभी सहन नहीं कर सकते। थोड़ी-सी गलती से आप बौखला उठते हैं और झगड़ पड़ते हैं।

इन गुणों के अतिरिक्त आपमें कुछ दोष भी हैं जिन पर ध्यान देने व उन्हे दूर करने की आवश्यकता है।

(१) आप जो भी योजनाएँ बनावें उसे अधूरा न छोड़े अन्त तक उसे निभावें। नयी-नयी आधी अधूरी योजनाएँ आपके व्यक्तित्व को कुंठित कर देती हैं।

(२) भावुकता व उतावलेपन पर रोक लगाये, इससे होने वाले अनर्थ से आप बच सकते हैं। संयमित जीवन जिएँ तथा कई एक कार्यों के लिए दूसरों की सलाह भी मानें।

(३) आप यकायक किसी पर विश्वास नहीं करें, चाहे वह कितनी ही नजदीकी व्यक्ति क्यों न हो। सम्भव है वह स्वार्थवश आपसे सम्बन्ध जोड़ रहा है।

(४) परोपकार व दयालुता को सीमित करें। भावुकता में गोपनीय बातें प्रकट न करें। प्रेम-प्रसंगों में सावधान रहें।

(५) जल्दबाजी, हड़बड़ाहट पर नियन्त्रण करें, दूसरों पर निर्भर भी न रहें। पानी से बचे रहें। कटु सत्य भी बोल कर शत्रुता को नहीं बढ़ावें।

(६) आप मात्र दिल की ही बात मानते हैं, दिमाग की नहीं यह ठीक नहीं। अनुभवों से भी कुछ सीखें। समयानुकूल स्वयं को मोड़ने का प्रयास करें।

(७) अस्थिर जीवन के कारण कदम-कदम पर पिछड़ जाते हैं इस अस्थिरता को छोड़ना पड़ेगा। घर व परिवार को भी महत्व देने का प्रयास करें।

आपको ध्यान होगा अंक ६ से आपके सर्वोच्च व ९ से निम्नतर सम्बन्ध है जबकि २।३।४।८ से मित्रतापूर्ण व्यवहार है। अंक १ व ५ साथी हैं। अंक ६ के साथ सात्विक भाव, ५ से राजस व अंक ८ से तामसी भाव है।

आइये प्रत्येक अंक व तारीखानुसार फलों का लेखा-जोखा करें। अंक ६ आपके लिए सर्वोत्तम है अतः ६।१५।२४ तारीख सर्वोत्तम फल प्रदान करेंगी और उस पर भी यदि शुक्रवार हो तो क्या कहना? प्रत्येक शुभ कार्य व्यवसाय, यात्रा, तीर्थाटन, नौकरी, इन्टरव्यू, परीक्षा की तैयारी, उद्देश्य विशेष के लिए मिलने-भेंटने, क्रय-विक्रय आदि के लिए ६।१५।२४ तारीख श्रेष्ठ रहेंगी। शुक्र स्वतः स्वयं में भी शुभ फलदायी ग्रह है।

इ. उ. ए. ओ. वा. वी. वू. वे. वो तथा रा. री. रु. रे. रो. ता. ती. तू. ते नाम से जाने जाने वाले व्यक्ति व वे व्यक्ति जिनका जन्म कृत्तिका के २।३।४ चरण में, रोहिणी व मृगशिरा के प्रथम दो चरण व चित्रा के अन्तिम दो चरण, स्वाति व विशाखा के प्रथम २ चरण में जन्म हुआ है वे सर्वोत्तम साथी सिद्ध होंगे। ये मदद देंगे। आपकी समस्याओं को दूर करने में ये विशेष सहायक होंगे।

उच्चाधिकारी यदि इनमें से हैं तो इन ३ दिन में अपनी समस्या समाधान हेतु प्रयास करें, समस्याएँ समाप्त हो सकेंगी।

यदि ६।१५।२४ तारीख को आप किसी ब्राह्मण वर्ग से संपर्क जोड़ें एवं उनसे सहयोग लें तो सफलता अवश्यंभावी है। ये आपके सुख-दुख के साथी होंगे। यदि यह पात्र स्त्री हो एवं युवा/पौढ़ा अवस्था की हों तो निश्चय ही आप आपको अपनी सिद्धि मिलेगी एवं उद्देश्य में सफल रहेंगे। आप अपने दैनिक उपयोग की वस्तुओं में रंग रंगीले वस्त्रों छींट व भड़कीले रंग को प्रधानता दें। पर्दे, जालियाँ, कपड़े, बेडशीट, तकिये के गिलाफ, सोफासेट, टी सेट, कारपेट कुर्सी, तकिए, पेन-पेंसिल, पुस्तक कवर व अन्यान्य वस्तुएँ चटकीले रंग की व चमकदार, चितकबरी रखें तो श्रेष्ठ होगा। यात्रा या कार्य-क्षेत्र के लिए आग्नेय दिशा सर्वोत्तम फलदायी रहेगी जिसका आपको लाभ अवश्य लेना चाहिए। स्वभाव में धीमापन, लघुता भाव, शांति व धैर्य का प्रादुर्भाव होगा। रजोगुण की प्रधानता के कारण भोग, एश्वर्य, मनोरंजन, प्रेम व प्रणय, फिल्मी क्षेत्र की ओर रुझान अधिक रहेगा व इन्हीं क्षेत्रों में भरपूर सहायता भी प्राप्त होगी। इस मद पर बढ़ चढ़ कर खर्च भी होता रहेगा।

वे स्थान जो सागर तट पर हैं, नदी घाटियों में या ध्रुव प्रदेश में हैं अथवा आर्द्र स्थान हैं आप सर्वाधिक सफल रहेंगे। वसन्त ऋतु भाग्योदय में सहायक होगी। वसन्त ऋतु म ६।१५।२४ तारीख को व्यापार, भाग्योदय व नौकरी के लिए निरन्तर प्रयास करें सफलता कदम चूमेगी मजबूत व दृढ़ वस्त्र धारण किए रहें।

यदि संभव हो सके तो स्वर्णाभूषण धारण करें तथा हीरा पहनें। नित्य 'श्री सूक्त' का पाठ करते हुए महालक्ष्मी की पूजा करें। अष्ट सिद्धि नव निद्धि के वास्ते यह सर्वोत्तम उपाय रहेगा। मनुष्य मात्र से आप सहयोग की अपेक्षा कर सकते हैं। हीरा पहनना भाग्योदय में सहायक उन्नतिमूलक ऐश्वर्य कारक होगा।

शयनागार, भोग व ऐश्वर्य स्थान, मनोरंजन गृह, आदि स्थान श्रेष्ठता देंगे तथा इन सब का प्रभाव लगभग १ पक्ष तक अक्षुण्य बना रहेगा। कामोत्तेजना में अनावश्यक वृद्धि इतर सम्बन्ध भी बना सकती है अतः सावधान रहना चाहिए। जहाँ तक शिक्षा व अध्ययन

का प्रश्न है संगीत के क्षेत्र व वाद्य की ओर बल दिया जाना चाहिए। आप संगीत के क्षेत्र में महारत हासिल कर सकते हैं एवं कोई पारितोषिक पा सकते हैं, सम्मानित हो सकते हैं।

स्त्री पक्ष द्वारा आपको भरपूर सहयोग मिलेगा वह आपके वर्चस्व को बढ़ायेंगी, कदम-कदम पर विजयी होंगी भोग-प्रणय व गृहस्थ कार्यों में तन-मन-धन से सहयोग देंगी।

आप यदि २८ वें वर्ष में चल रहे हैं तो भाग्योदय हेतु सफल प्रयास कर सकते हैं। दौड़ धूप कर सकते हैं। मिलने-साक्षात्कार करने का प्रयास करें। आप प्रातः नित्य क्रिया से निःवृत्त होकर निम्न यंत्र कंकु से भोजपत्र पर लिखें १०८ बार और तब उन्हें बिना बोले जल में प्रवाहित कर दें। यन्त्र लेखन के साथ-साथ निम्न मंत्र का जाप भी करते रहना श्रेयस्कर है—

यंत्र—

११	६	१३
१२	१०	८
७	१४	९

मंत्र—अन्नात् परिस्त्रुतो रसं ब्रह्मणाव्यपिबत्क्षत्रं पयः। सोमं प्रजापतिच्छंतेन सत्यमिन्द्रियं विपान घुं शुक्र मन्धस इन्द्र स्योन्द्रियमिदं पयोमृतम्मधु।

दान—हीरा, स्वर्ण, रजत, चावल, मिश्री, दूध, दही, श्वेत, वस्त्र, सफेद पुष्प, अश्व, चंदन, घृत, सुगन्धित द्रव्य, वाहन आदि।

अंक ९ के साथ आपके औचित्य पूर्ण, शत्रुतापूर्ण सम्बन्ध हैं अतः तारीख ९।१८।२७ को आवश्यकता से भी अधिक सावधान रहने की आवश्यकता है। अपमान, मान, हानि, धर्म से विमुखता, शत्रु, प्रबलता, खिन्नता सम्भव है। कदम-कदम पर विरोधों का सामना करना पड़ेगा। घर परिवार के सदस्य व मित्र वर्ग ही धोखा देंगे। गुप्तांग सम्बन्धी रोग पीड़ा दे सकते हैं। उसमें भी यदि ९।१८।२७ तारीख को मंगलवार हो तो और अधिक सावधान रहें। मंगलवार

स्वतः स्वयं अपने आप में अशुभ ग्रह है। अश्विनी-भरणी व कृतिका के प्रथम में जन्मे चू. चे. चो. ला. ली. लू. ले. लो. अ एवं विशाखा के अन्तिम चरण, अनुराधा व ज्येष्ठा में उत्पन्न तो. ना नी. नू. ने. नो. या. यू. यी अक्षर से प्रारम्भ होने वाले व्यक्ति सर्वथा प्रति-कूल फल देने वाले सिद्ध होंगे। क्षत्रिय जाति के व्यक्ति से आप अवश्य सावधान रहें। भूल कर भी भोजन व वस्त्र, रहन-सहन व दैनिक उपयोग की चीजों में न लें यह प्राणघातक, अपमानकारक व निराशासूचक रहेंगे।

पुरुष एवं वह भी बालक से अधिक सचेत रहें। बालक को लेकर लड़ाई-झगड़ा, विवाद या कलह होना संभव है। दक्षिण दिशा को भूल कर भी कार्य-क्षेत्र न बनावें और न ही यात्रा करें। स्वभाव में उग्रता, तेजी, क्रोध, वैर-विरोध रहेगा कुंठा व संतास से पीड़ित रहेंगे। तमोगुण की प्रधानता पतन का कारण बनेगी। अग्नितत्व प्रधानता के कारण जलना, चोट लगना, गिरना, धातु अदि से कटना संभव है। ग्रीष्म ऋतु और अधिक पीड़ादायक है। जलने की संभावना सर्वाधिक रहती है।

किसी भी कारण स्वर्ण, स्वर्णाभूषण व प्रवालः भूल कर भी नहीं पहनें। चौपाए जानवर चोट पहुँचायेंगे, लात मार सकते हैं, काट सकते हैं। ऐसा न हो कि असावधानी आपको ले डूबे। अग्नि स्थान, गर्म भट्टी, तपती लू, जहाँ आग या विद्युत का कार्य हो वहाँ साव-धानी अपेक्षित है। युद्धाभ्यास, लड़ाई-झगड़ा आदि न करें। छोटा सा कारण भी महान हानि का कारण बन सकता है। पर्वतीय क्षेत्र, ऊँचे स्थान, पठारी भाग व घने जंगलों में भ्रमण, शिकार या घूमने के लिए नहीं जायें। ऐसे स्थान हानिकारक रहेंगे।

बहिन व बहिन के परिवार के कारण आप पीड़ित, प्रताड़ित, अपमानित हो सकते हैं। उनको लेकर व्यर्थ की चिन्ता, तनाव की स्थिति आ सकती है। शक्ति—हीनता मांस रोग व उदर पीड़ा, जलंघर आदि से कष्ट पा सकते हैं। ३० से ३२ के मध्य अवस्था है तो अपनी उन्नति व भाग्योदय के लिए किसी से संपर्क न करें, साक्षात्कार, इन्टरव्यू यात्रा आदि अशुभ रहेगी।

मूँगा, स्वर्ण, गेहूँ, ताम्र, मसूर, गुड़, घृत, रक्त वस्त्र, कनेर

पुष्प, रक्त चंदन आदि का दान देने का प्रयत्न न करें।

अंक १।५।७ आपके मित्र हैं एवं २।३।४।८ साम्य भाव रखते हैं अतः आपको उक्त अंक से सम्बन्धित तारीखों को शुभ फल प्राप्त होंगे। उन्हें निम्न प्रकार समझें। दिनांक २।११।२०।२६, ४।१३। २२।३१ व ७।१६।२५ का फल हर प्रकार से एक समान ही है।

शुभत्वदायक अंक—१।१०।१६।२८, ५।१४।२३, ६।१७।२५, २।११।२०।२६, ३।१२।२१।३०, ८।१७।२६, ४।१३।२२।३१।

शुभ कारक वार—१।१०।१६।२८ तारीख को रविवार ५।१४। २३ तारीख को बुधवार ७।१६।२५ तारीख को सोमवार २।११। २०।२६ तारीख को सोमवार ३।१२।२१।३० तारीख को बृहस्पति वार ८।१७।२६ तारीख को शनिवार ४।१३।२२।३१ को सोमवार।

शुभ नक्षत्र—१।१०।१६।२८ को मघा, पूर्वा फाल्गुनी व उत्तरा फाल्गुनी का प्रथम चरण।

५।१४।२३ तारीख को मार्गशीर्ष के शेष दो चरण आर्द्रा व पुनर्वसु के प्रथम तीन चरण, उत्तराफाल्गुनी का शेष तीन चरण, हस्त व चित्रा के प्रथम दो चरण।

७।१।६२५, २।११।२०।२६, ४।१३।२२।३१ तारीख को पुर्नवसु का अंतिम चरण, पुष्य व आश्लेषा नक्षत्र एवं ३।१२।२१।३० तारीख को सूल, पूर्वाषाढा, उत्तराषाढ़ा का प्रथम चरण, पूर्वाभाद्रपद का अंतिम चरण, उत्तराभाद्रपद व रेवती नक्षत्र, ८।१७।२६ तारीख को उत्तराषाढा के अंतिम ३ चरण, श्रवण घनिष्ठा, शतभिषा व पूर्वाभाद्रपद के प्रथम तीन चरण।

शुभ नामाक्षर—१।१०।१६।२८ तारीख के दिन मा. मी. मू. मे. मौ. टा. टी. टू. टे.।

५।१४।२३ तारीख को का, की, कू, घ, ङ, छ, के, को, ह एवं टो, पा, पी, पू, प, ठ, पे, पो।

७।१६।२५, २।११।२०।२६, ४।१३।२२।३१, तारीख को ही हु, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो।

३।१२।२१।३० तारीख को ये, यो भा, भी, भू, धा, फा, ढा, भे, दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची।

८।१७।२६ तारीख को भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा

गी, गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा।

शुभजाति–१।१०।१९।२८ तारीख को क्षत्रिय २।११।२०।२९, ४।१३।२२।३१, ७।१६।२५, तारीख को वैश्य, ५।१४।२३ को शूद्र एवं ८।१७।२६ को अन्त्यज।

शुभरंग—१।१०।१९।२८ को कालिका युक्त लाल। २।११। २०।२९, ४।१३।२२।३१, ७।१६।२५। को सफेद ५।१४।२३ तारीख को कालिमा युक्त हरा, ८।१७।२६ को हरापन लिये काला, ३।१२।२१।३० पीला।

लिंग—१।१०।१९।२८ को पुरुष २।११।२०।२९, ४।१३।२२। ३१, ७।१६।२५ तारीख को स्त्री, ३।१२।२१।३० तारीख को पुरुष ८।१७।२६ को नपुंसक ५।१४।२३ तारीख को नपुंसक।

शुभ अवस्था—१।१०।२९।२८ को वृद्ध जन, ५।१४।२३ को युवा ७।१६।२५, २।११।२०।२९, ४।१३।२२।३१ युवा ३।१२।२१। ३० को मध्यम् ८।१७।२६ को अतिवृद्ध।

शुभ दिशा—मूलांक १ के तारीख को पूर्व २।७।४ मूलांक की तारीखों को वायव्य कोण, ३।१२।२१।३० तारीख को ईशान कोण, ५।१४।२३ को उत्तर, ८।१७।२६ को पश्चिम दिशा।

स्वभाव—१।१०।१९।२८ को स्वभाव में स्थिरता एवं सत्व गुण का प्राबल्य। ५।१४।२३ तारीख को मिश्रित स्वभाव व रजोगुण की प्रधानता ७।१६।२५, २।११।२०।२९, ४।१३।२२।३१ तारीख को चंचलता व सत्व गुण की प्रधानता ३।१२।२१।३० को मृदुता एवं सत्व गुण प्रधान, ८।१७।२६ को स्वभाव में तीव्रता व तमोगुण का प्राबल्य रहेगा।

तत्व—१।१०।१९।२८ तारीख को अग्नि तत्व प्रधान ५।१४।२३ को पृथ्वी तत्व प्रधान ७।१६।२५, ४।१३।२२।३१, २।११।२०।२९ को जल तत्व प्रधान, ३।१२।२१।३० को आकाश तत्व प्रधान। ८।१७।२६ को वायु तत्व प्रधान।

ऋतु शुभता—१।१०।१९।२८ को ग्रीष्म, ५।१४।२३ को शरद, ७।१६।२५, ४।१३।२२।३१, २।११।२०।२९ को वर्षा, ३।१२।२१।३० हेमन्त एवं ८।१७।२६ को शिशिर ऋतु।

वस्त्र—१।१०।१९।२८ को मोटे वस्त्र, २।११।२०।२९,

४।१३।२२।३१, ७।१६।२५ को नवीन ३।१२।२१।३१ को मध्यम, ५।१४।२३ को पुराने, ८।१७।२६ को जीर्ण ।

द्रव्य व रत्न—१।१०।१६।२८ को ताम्र एवं माणिक्य, २।११।२०।२६, ७।१६।२५; ४।१३।२२।३१ को चाँदी व मोती, ५।१४।२३ को कांस्य-सीप व पन्ना ३।१२।२१।३० को चाँदी व पु खराज ८।१७।२६ को लोहा व नीलम ।

पशु-पक्षी आदि की शुभता—१।१०।१६।२८ को पक्षी ५।१४। २३ को पक्षी ७।१६।२५, २।११।२०।२६, ४।१३।२२।३१ को सरीसृप ३।१२।२१।३० को मनुष्य व पक्षी, ८।१७।२६ को चतुष्पदो अर्थात् पशु ।

क्रीड़-स्थल—१ १०।१६।२८। को देवस्थान अयन पर्यन्त । ५।१४।२३ को क्रीड़ागार ऋतु पर्यन्त, ७।१६।२५, २।११।२०।२६, ४।१३।२२।३१ को जलाशय तट व क्षणिक ३।१२।२१।३० को भण्डारगृह मास पर्यन्त ८।१७।२६ को कूड़ाघर वर्ष पर्यन्त ।

अध्ययन—१।१०।१६।२८ को राजनीति ५।१४।२३ को वेद व व्याकरण ७।१६।२५, २।११।२०।२६, ४।१३।२२।३१ को ज्योतिष, ३।१२।२१।३० को वेद व व्याकरण ८।१७।२६ को कानून ।

शुभकारक स्थल—१।१०।१६।२८ को पर्वत वन, ५।१४।२३ को जलाशय, ७।१६।२५, २।११।२०।२६, ४।१३।२२।३१ के जलाशय, ३।१२।२१।३० को विद्वद समाज व ग्राम, ८।१७।२६ को पर्वतीय व वनीय स्थल ।

सुखानुभूति—१।१०।१६।२८ को पिता-आत्मा अस्थि-सिर-मुख ५।१४।२३ को बहिण, वाणी त्वचा हाथ-पांव, २।११।२०।२६, ४।१३ २२।३१, ७।१६।२५ माता-मन-रक्त व गले से हृदय तक का भाग, ३।१२।२१।३० को सन्तान, ज्ञान, चर्बी, कमर से जांघ तक का भाग, ८।१७।२६ को भृत्य, दुःख-स्नायु-मंडल घुटने से पिंडली भाग।

भाग्योदय—१।१०।१६।२८ को यदि २४ वां वर्ष हो । ५।१४।२३ को यदि ३५ वां वर्ष हो ।

७।१६।२५, २।११।२०।२६, ४।१३।२२।३१ यदि २५ वां वर्ष हो। ३।१२।२१।३० यदि २१ वां वर्ष हो ।

८।१७।२६ यदि ३६ से ४२ वें वर्ष के मध्य का भाग हो ।

यंत्र लेखन—१।१०।१९।२८ को

८	१	६
३	५	७
४	९	२

मंत्र—ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यंच। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।

दान—माणिक्य, स्वर्ण, ताम्र, गेहूँ, गुड़, घी, रक्त वस्त्र, रक्त पुष्प, कनेर, रक्त चंदन, धेनु !

२।११।२०।२९, ४।१३।२२।३१। ७।१६।२५ को

यंत्र—

७	२	९
८	६	४
३	१०	५

मंत्र—ॐ इमं देवा असपत्न घुं सुबद्धं महते क्षत्राय महते ज्येष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रियस्येन्द्रियाय। इममुष्यै पुत्रस मुस्यै पुत्र मस्यै विष एषवोऽमी राजा सोमोऽस्मांक ब्राह्मणानां घुं राजा।

दान—मोती, रजत, स्वर्ण, कर्पूर, चावल, मिश्री, दूध, दही, श्वेत वस्त्र, श्वेत पुष्प, शंख, पुस्तक।

५।१४।२३ को

यंत्र—

९	४	११
१०	८	६
५	१२	७

मंत्र—ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहित्वमिष्ठापूर्ते स घुं सृजेथा-मयं च । अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत ।

दान—पन्ना, स्वर्ण, मूँगा, कांस्य पात्र, घृत, शक्कर, कर्पूर, हरित वस्त्र, हाथी दांत, पंच रत्न ।

३।१२।२१।३० को

यंत्र—

१०	५	१२
११	९	७
६	१३	८

मंत्र—ॐ बृहस्पते अतियदर्य्यो अर्हाद्द्युमद्विभाति क्रतुमज्ज नेषु । यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणंधेहि चित्रम् ।

दान—पुखराज, केला, नारंगी, नीबू, चने की दाल, पीला वस्त्र पुस्तक, स्वर्ण, कांस्य, पति पुष्प, चीनी, घृत, हल्दी, बेसन ।

१।१७।२६ को

यंत्र—

१२	७	१४
१३	११	९
८	१५	१०

मंत्र—ॐ शन्नो।देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतथे शंय्योर मिस्त्र वन्तु नः ।

दान—तेल, तिल, धातु, लोह, काला वस्त्र, उड़द, भैंसा, जूते ।

तारीखानुसारशुभाशुभत्व—

तारीख	शुभत्व	तारीख	शुभत्व
१	शुभ	३	मध्यम
२	मध्यम	४	मध्यम

तारीख	शुभत्व	तारीख	शुभत्व
५	शुभ	१९	शुभ
६	सर्वोत्तम	२०	मध्यम
७	शुभ	२१	मध्यम
८	मध्यम	२२	मध्यम
९	निकृष्ट	२३	शुभ
१०	शुभ	२४	सर्वोत्तम
११	मध्यम	२५	शुभ
१२	मध्यम	२६	मध्यम
१३	मध्यम	२७	निकृष्ट
१४	शुभ	२८	शुभ
१५	सर्वोत्तम	२९	मध्यम
१६	शुभ	३०	मध्यम
१७	मध्यम	३१	मध्यम
१८	निकृष्ट		

अक आठ (८)—

अद्‌भुत व्यक्तित्व है आपका ! सम्पूर्ण जीवन पर है शनि का प्रतिनिधित्व। शनि का स्वभाव स्वभावतः अनोखा एवं विचित्र है। अति मंद गति से गतिशील, आकस्मिकता का ज्वलन्त उदाहरण, विश्वास और निःस्वार्थ भाव, परोपकार व गोपनीयता का आप प्रतिनिधित्व करते हैं। जिम्मेदारी को आप तन-मन-धन से निभाते हैं। संघर्ष की पाठशाला में पढ़ कर विपत्तियों की आग में तप कर, कठिनाइयों का मल्हम लेप भाग्यदेव को अनुकूल बनाया है और बनाते जा रहे हैं।

अच्छा तो यह कि सब की सुन कर करते खुद का हैं सोचने-समझने की शक्ति शायद, शायद सबसे तीव्र है। दबाव जहाँ किसी पर डालते नहीं वहीं अपने पर किसी का दबाव सहन भी नहीं होता। दृढ़ता एक सहज गुण है, सेवा-भाव अपना भूषण है दुःखी को देख द्रवित हो रो उठते हैं तो झूठ, धोखा, नीचता, धृष्टता, चापलूसी, भ्रष्टता देख लाल हो उठते हैं।

अपने सम्पर्क में आए व्यक्ति के लिए आप ढाल का कार्य करते

हैं। अपनी दशा को शीतल छाया में विश्राम देते हैं। आप गजब के परिश्रमी, उद्यमी, जिद्दी, लगनशील, चिन्तनशील, संजोदा, श्रेष्ठ विचारक, उत्साही, मान प्रिय धनवान, स्पष्ट वक्ता, वीतरागी व निर्मोही, निर्णय है। आप आश्वस्त रहें, अपने जीवन में १-२ नहीं कई एक विशिष्ट कार्य सम्पूर्ण कर यश, मान, सम्मान, धन, ऐश्वर्य पायेंगे। आजीवन यावत्जीवेत् निराशा, संघर्ष व कठिनाइयों से जूझते रहेंगे।

आपमें बाहरी प्रेम-प्रदर्शन की भावना नहीं है फलतः अन्तर्मुखी व्यक्तित्व के कारण लोग आपको समझ नहीं पाते और शुष्क मिजाज मुश्किल मिजाज एवं कठोर समझते हैं। पर वस्तुतः ऐसा है नहीं। आप एकान्तप्रिय, गंभीर, परिपक्वता युक्त हैं। प्रदर्शन से आपको चिढ़ सी रहती है। आप तभी कार्य प्रकट करते हैं जब वह पूर्ण हो जाता है। अत्यल्प मित्र पर जो भी मित्र हैं वे सच्चे हैं।

जहाँ तक दैहिक रूप रंग का प्रश्न है प्रायःकर गंभीर, प्रभावशाली व्यक्तित्व, श्यामवर्ण (प्रायः) लंबकाय, घने, पर रुखे-फटे बाल, अति घनी भौंहे, सुगठित देह, सजल सदैव आर्द्र, गहरी, खोयी खोयी सी आँखें हैं। देखते हो तो आपको वैरागी, तपस्वी, साधु, संन्यासी, योगी कहना पड़ता है। धर्म व धार्मिक क्रिया-कलापों में अग्रगण्य हैं। शोर-गुल, भीड़-भाड़ व्यर्थ की बकवास, चिल्लपों, हाय-तोबा आपको रास नहीं आती।

आपके लिए एक खुशखबरी! वह यह कि आपको अपने जीवन में अकस्मात द्रव्य की प्राप्ति होगी और यह अवसर एक बार नहीं एकाधिक बार आयेगा। सट्टे से, जुए, लॉटरी, घुड़दौड़ आदि से द्रव्य अवश्य मिलता है।

जीवन के प्रति सर्वथा भौतिकवादी दृष्टिकोण लेकर चलते हैं। भाग्यवादिता को प्रश्रय नहीं देते। व्यापार चाहे जो हो, कहीं भी हो और कैसा भी हो, इससे आपको कोई मतलब नहीं! मतलब इस बात से है कि पैसा ज्यादा से ज्यादा किस प्रकार बनाया जाय।

शनि प्रतिनिधित्व के कारण आपको शनि प्रधान कार्य करने की सलाह दूँगा—वे कार्य हैं—कसरत, खेल-कूद, तेल का व्यवसाय,

धातु की बनी वस्तुएँ, काली वस्तु का व्यापार, पुलिस व सैन्य विभाग, ठेकेदारी, जंगलात, महकमा, कुलीगिरी, उद्योग, ज्योतिष कार्य, वकालत, नशीली वस्तु का व्यवसाय, खराद की वस्तुएँ, बस आदि का क्रय-विक्रय, ट्रांसपोर्ट, पेट्रोलिंग, वैज्ञानिक कार्य, घड़ी साज का कार्य, मुर्गीपालन, बागवानी, ईंधन, बिजली का कार्य, कोयले का व्यापार, तेल, रंगादि, नेतृत्व, नीति निर्धारण, धर्म-कर्म यज्ञादिक कार्य, अध्यापन, संगीत आदि ।

आप अपने गिरेबान में झांक कर देखेंगे तो पायेंगे कि आपके जीवन में बीच की स्थिति घड़ी के पेंडुलम के समान कहीं नहीं है । उन्नति की ओर चल पड़े हे तो सर्वोच्च पद प्राप्त करके रहेंगे और दुर्भाग्य से पतनोन्मुखी हो गए तो गहन गर्त तैयार है । धन पायेंगे तो अतुल धन क स्वामी होंगे और हानि की राह पा ली तो भक्षुक बनने में देरी नहीं ।

आमोद-प्रमोद या मनोरंजन से आपकी रुचि नहीं पर यदि इस प्रकार के प्रोग्राम्स को अपना लिया तो अपनी कार्य-कुशलता से उसमें चार चांद लगा देंगे । एकान्त आपका मनोरंजन है । एकान्त म बनी आपकी योजनाएँ कारगर सिद्ध होती हैं । भविष्य के प्रति आप जागरूक व कदम-कदम पर फूंक मार कर चलते हैं । ऐसा कोई कार्य करते नहीं कि बाद में पछताना पड़े । आडंबर व कुरुतियों से कोसों दूर व्यर्थ व झूठें प्रपंच, पूजा-पाठ व कर्मकाण्ड से आपको घृणा रहती है इतने पर भी आपको नास्तिक नहीं कहा जा सकता !

फूहड़पन, अनुशासनहीनता, गंदगी दुर्गंधपूर्ण वातावरण, गन्दा व भद्दा मजाक आपको प्रिय नहीं है । दिखावा चाहते नहीं । साफ व स्पष्ट हैं । सामाजिकता से आप कटे-कटे से रहते हैं ।

आप महिला हैं इसलिए आपमें सेवा-भाव प्रधान है तथा दया-ममता-मोह-परोपकार-करुणा का दरिया बहता रहता है । सहयोग, सेवा व विश्वास आपके साथी हैं । यश की इच्छा नहीं व घर, परिवार, अपनों-परायों की उन्नति में सहयोग अपना कर्त्तव्य मानती हैं । जिम्मेदारी निभाने की आपमें अद्‌भुत क्षमता है ।

आपका दृष्टिकोण है परम्परावादी, बड़ों का विरोध आपको

प्रिय नहीं। प्रतिकार आप किसी का कर नहीं सकती। दृढ़ निश्चयी, अद्भुत निर्णय लेने की क्षमता, अनिश्चय को कहीं स्थान नहीं, प्रचार-प्रसार से कोसों दूर, अन्तर्मुखी व्यक्तित्व, आडम्बर व प्रदर्शन से घृणा तथा अर्थ को बचा कर रखने में आप सक्षम हैं घर का बजट सदैव सन्तुलित रहता है।

सब कुछ होकर भी आपमें कुछ अभाव हैं उन्हें पहचानें एवं दूर करने का प्रयास करें।

(१) आपको सामाजिकता से कटा-कटा-सा नहीं रहना चाहिए तथा मितव्ययी होना तो ठीक है परन्तु मेल-जोल भी बढ़ाएँ।

(२) मादक द्रव्यों का सेवन, वैराग्य भावना, शुष्क जीवन, नीरस वाणी, जीवन के प्रति निराशा, अकुशल व अव्यवहारिक व्यवहार कंजूसी आपके जीवन को कुंठित कर देती है।

(३) गहरे व राजदार, जासूसी व गोपनीयता आपके जीवन की व्यथा का प्रमुख दोष है। मन की बात दूसरों को कह कर मन का बोझ हल्का करने का प्रयास करें।

(४) पत्नी, घर व परिवार के सदस्यों के प्रति या तो अत्यधिक व या अत्यधिक अलगाव दोनों ठीक नहीं अपितु व्यावहारिक बनने का प्रयास करें।

(५) जुए, सट्टे, लॉटरी व अकस्मात् धन प्राप्ति जैसे तुच्छ प्रयोगों से सदैव दूर रहने का प्रयास करें।

(६) अन्तर्मुखी होने की अपेक्षा बाहर समाज में घुलने-मिलने का भी प्रयास करें जिससे व्यक्तित्व में निखार आयेगा।

(७) व्यर्थ चिन्तन, प्रेम व वासना से सर्वथा परे रहना भी तो ठीक नहीं।

आपके जीवन अंक से ही कुछ महान हस्तियाँ हैं उनके जीवन से आपको कुछ सार ग्रहण करने का प्रयास करना चाहिए—

१. अनिता गुहा
२. डॉ० जाकिर हुसेन
३. गुरु नानक
४. क्वीन मेरी
५. माओत्से तुंग
६. धर्मेन्द्र
७. देवानन्द
८. जॉन बर्नार्ड शॉ
९. कैलाश नाथ काटजू
१०. फिल्म अभिनेत्री सिम्मी

धातु की बनी वस्तुएँ, काली वस्तु का व्यापार, पुलिस व सैन्य विभाग, ठेकेदारी, जंगलात, महकमा, कुलीगिरी, उद्योग, ज्योतिष कार्य, वकालत, नशीली वस्तु का व्यवसाय, खराद की वस्तुएँ, बस आदि का क्रय-विक्रय, ट्रांसपोर्ट, पेट्रोलिंग, वैज्ञानिक कार्य, घड़ी साज का कार्य, मुर्गीपालन, बागवानी, ईंधन, बिजली का कार्य, कोयले का व्यापार, तेल, रंगादि, नेतृत्व, नीति निर्धारण, धर्म-कर्म यज्ञादिक कार्य, अध्यापन, संगीत आदि।

आप अपने गिरेबान में झांक कर देखेंगे तो पायेंगे कि आपके जीवन में बीच की स्थिति घड़ी के पेंडुलम के समान कहीं नहीं है। उन्नति की ओर चल पड़े हैं तो सर्वोच्च पद प्राप्त करके रहेंगे और दुर्भाग्य से पतनोन्मुखी हो गए तो गहन गर्त तैयार है। धन पायेंगे तो अतुल धन के स्वामी होंगे और हानि की राह पा ली तो भिक्षुक बनने में देरी नहीं।

आमोद-प्रमोद या मनोरंजन से आपकी रुचि नहीं पर यदि इस प्रकार के प्रोग्राम्स को अपना लिया तो अपनी कार्य-कुशलता से उसमें चार चांद लगा देंगे। एकान्त आपका मनोरंजन है। एकान्त में बनी आपकी योजनाएँ कारगर सिद्ध होती हैं। भविष्य के प्रति आप जागरूक व कदम-कदम पर फूंक मार कर चलते हैं। ऐसा कोई कार्य करते नहीं कि बाद में पछताना पड़े। आडंबर व कुरुतियों से कोसों दूर व्यर्थ व झूठें प्रपंच, पूजा-पाठ व कर्मकाण्ड से आपको घृणा रहती है इतने पर भी आपको नास्तिक नहीं कहा जा सकता!

फूहड़पन, अनुशासनहीनता, गंदगी दुर्गंधपूर्ण वातावरण, गन्दा व भद्दा मजाक आपको प्रिय नहीं है। दिखावा चाहते नहीं। साफ व स्पष्ट हैं। सामाजिकता से आप कटे-कटे से रहते हैं।

आप महिला हैं इसलिए आपमें सेवा-भाव प्रधान है तथा दया-ममता-मोह-परोपकार-करुणा का दरिया बहता रहता है। सहयोग, सेवा व विश्वास आपके साथी हैं। यश की इच्छा नहीं व घर, परिवार, अपनों-परायों की उन्नति में सहयोग अपना कर्त्तव्य मानती हैं। जिम्मेदारी निभाने की आपमें अद्भुत क्षमता है।

आपका दृष्टिकोण है परम्परावादी, बड़ों का विरोध आपको

प्रिय नहीं। प्रतिकार आप किसी का कर नहीं सकती। दृढ़ निश्चयी, अद्भुत निर्णय लेने की क्षमता, अनिश्चय को कहीं स्थान नहीं, प्रचार-प्रसार से कोसों दूर, अन्तर्मुखी व्यक्तित्व, आडम्बर व प्रदर्शन से घृणा तथा अर्थ को बचा कर रखने में आप सक्षम हैं घर का बजट सदैव सन्तुलित रहता है।

सब कुछ होकर भी आपमें कुछ अभाव हैं उन्हें पहचानें एवं दूर करने का प्रयास करें।

(१) आपको सामाजिकता से कटा-कटा-सा नहीं रहना चाहिए तथा मितव्ययी होना तो ठीक है परन्तु मेल-जोल भी बढ़ाएँ।

(२) मादक द्रव्यों का सेवन, वैराग्य भावना, शुष्क जीवन, नीरस वाणी, जीवन के प्रति निराशा, अकुशल व अव्यवहारिक व्यवहार कंजूसी आपके जीवन को कुंठित कर देती है।

(३) गहरे व राजदार, जासूसी व गोपनीयता आपके जीवन की व्यथा का प्रमुख दोष है। मन की बात दूसरों को कह कर मन का बोझ हल्का करने का प्रयास करें।

(४) पत्नी, घर व परिवार के सदस्यों के प्रति या तो अत्यधिक व या अत्यधिक अलगाव दोनों ठीक नहीं अपितु व्यावहारिक बनने का प्रयास करें।

(५) जुए, सट्टे, लॉटरी व अकस्मात् धन प्राप्ति जैसे तुच्छ प्रयोगों से सदैव दूर रहने का प्रयास करें।

(६) अन्तर्मुखी होने की अपेक्षा बाहर समाज में घुलने-मिलने का भी प्रयास करें जिससे व्यक्तित्व में निखार आयेगा।

(७) व्यर्थ चिन्तन, प्रेम व वासना से सर्वथा परे रहना भी तो ठीक नहीं।

आपके जीवन अंक से ही कुछ महान हस्तियाँ हैं उनके जीवन से आपको कुछ सार ग्रहण करने का प्रयास करना चाहिए—

१. अनिता गुहा
२. डॉ० जाकिर हुसेन
३. गुरु नानक
४. क्वीन मेरी
५. माओत्से तुंग
६. धर्मेन्द्र
७. देवानन्द
८. जॉन बर्नाल्ड शॉ
९. कैलाश नाथ काटजू
१०. फिल्म अभिनेत्री सिम्मी

११. ललिता पँवार	१४. राजेन्द्र नाथ
१२. राजकुमार	१५. नीतू सिंह
१३. सर हैंफ्री डेवी	१६. नन्दा

शनि आपके जीवन पर अपना प्रभुत्व रखता है जो कि स्वाभाविक रूप ने पापग्रही है पर धर्माचार्य भी होते हुए अशुभ ग्रह है। मकर व कुम्भ आपकी राशियाँ हैं अतः सहज, स्वाभाविक रूप में वे व्यक्ति जो मकर या कुम्भ राशि के हैं या वे व्यक्ति जिनका जन्म उत्तराषाढ़ के प्रथम चरण के बाद, श्रवण घनिष्ठा, शतभिषा व पूर्वाभाद्र पद के प्रथम तीन चरणों में हुआ है किंवा जिनके नाम के प्रथम अक्षर भो. जा. जी. खी. खू. खे. खो. गा. गी. गू. गे. गो. सा. सी. सू. से. सो. दा. हैं आपके सच्चे साथी, मित्र, लाभदायक, भाग्योदय में सहायक, अच्छे अधिकारी, श्रेष्ठ व्यवसाय में साझेदार, जीवन साथी, प्रेम प्रसंग में अधिकारी सिद्ध होंगे। इनसे मेल-जोल बढ़ाना शुभ है।

यदि आप अपने जीवन में अन्त्य जाति, समाज द्वारा व्यक्त जो त्याज्य, घृणित व दलित वर्ग से सम्पर्क जोड़ें तो वे आपको अधिक लाभदायक सिद्ध होंगे। सच तो यह है कि आप इन्हीं के द्वारा अपना भाग्य निर्माण कर सकते हैं। दलित नारायण बन कर अपने समाज में यश, मान-सम्मान, धन-ऐश्वर्य, कीर्ति, उच्च पद सब कुछ पा सकते हैं। अति वृद्ध व्यक्ति से आपको जो सलाह मिलती है वह अधिक गुणकारी, भाग्य सहायक व हितकर रहती है। उनकी सलाह के आधार पर आप अधिक आगे बढ़ सकते हैं।

आप अपने दैनिक उपयोग में काला व हरापन लिये काले रंग को प्राथमिकता दें। यह रंग जीवन-यापन में सहायक है। सोफासेट, दरी, पर्दे, जालियाँ, बेडशीट, तकिये के गिलाफ, वस्त्र, घड़ी के पट्टे, पेन, पेंसिल, मोजे, जूते व अन्य समस्त वस्तुएँ इसी रंग की रखें। भोजन में एकाध चीज, तेल-तिलहन, घी, तली व भुंजी हुई वस्तु, उड़द आदि लें श्रेष्ठ रहेगा।

आपको ध्यान होना चाहिए कि अंक १ व तारीख १।१०।१६। २८ से आपकी सर्वथा दुश्मनी है जबकि अंक ६ व ६।१५।२४ तारीख से उच्च स्तरीय सम्बन्ध है अंक ८ आपका व शेष अंक

२।३।४।५।७ व ९ के साथ प्रेम भरा व्यवहार है, सामान्य शुभता व कम से कम प्रतिकूलता नहीं है। पुण्य, अनुराधा व उत्तरा भाद्र पद नक्षत्र श्रेष्ठतामूलक ६ व ५ परम मित्र, ७।१।९ शत्रु अंक २।३।४।८ समभावी हैं। अंक ५ के साथ सात्विक भाव ६ से राजश व १।७ से शत्रुवत् व्यवहार रखते हैं अतः १।१०।१९।२८ व ७।१६।२५ तारीखें दुश्मनी भरा वातावरण पैदा करेंगो।

८।१७।२६ तारीख को यदि यात्रा करनी है, किसी से मिलना है या प्रेम-प्रसंग बढ़ाना है या कहीं आना-जाना है अथवा कुछ भी शुभ-कार्य करना है तो आपको पश्चिम दिशा ही सर्वत्र अत्यन्त शुभ व अनुकूल, भाग्यवर्द्धक और ऐश्वर्यदायक रहेगी। स्वभावतः आप तीक्ष्ण बुद्धि व्यक्ति हैं अपने स्वाभिमान पर चोट कोई करे या कुतर्क करे, मान-हानि करे अथवा चैलेंज करे आप कतई बर्दाश्त नहीं कर सकते। तमोगुण प्रधानता शत्रुओं को समाप्त करने में सहायक है वहीं वीरोचित कार्यों में प्राथमिकता प्रदान भी करता है। शत्रु पक्ष तक से आप धन प्राप्त कर लेते हैं यह सबसे बड़ा आश्चर्य है। आपकी शक्ति-सामर्थ्य एवं ओजस्विता के सम्मुख शत्रु पराभूत हो जाते हैं।

वायु तत्व प्रधान व्यक्ति होने के कारण हवाई यात्रा या हवाई सेवा, पैरासूट या इसी प्रकार एयर होस्टेस जैसी नौकरी में खूब मन रमता है व सफलता प्राप्त होती है। शिशिर ऋतु आपके जीवन निर्माण में, आपके भाग्योदय में अधिक सहायक है। जहाँ तक वस्त्रों का प्रश्न है आपको जीर्ण-शीर्ण व पुराने वस्त्र अधिक मदद करते हैं।

अच्छा तो यह रहेगा कि आप लोहे की अंगूठी या काले घोड़े के नाल से बनी अंगूठी धारण किये रहें तथा नीलम धारण करना अधिकाधिक शुभ व अनुकूल रहता है। पशु धन और वह भी काले रंग के हों तो वे अधिक धनदायक, शुभत्व कारक, ऐश्वर्य वृद्धि कारक रहेंगे। कूड़ाघर, मैले कार्य, अँधेरे घुप कर किये गए कार्य, श्मशान, अधार्मिक व उल्टे सीधे कार्य कहीं अधिक लाभ देते हैं और इन स्थानों पर किये कार्यों का प्रभाव वर्ष भर बना रहता है। कानून के अध्ययन, अध्यापन, लेखन, कोर्ट-कचहरी के कार्य,

दावे व मुकदमेंबाजी वास्ते ये सर्वश्रेष्ठ दिन घटित होते हैं । इस प्रकार के कार्यों में ८।१७।२६ तारीख व शनिवार को आपको प्राथमिकता देनी चाहिए । पर्वतीय, पठारी, ऊँचे स्थान, कठोर भूमि स्थान, घने जंगल, वनीय प्रदेश आपके जीवन-यापन के लिए सर्वथा शुभ हैं ।

नौकर-चाकरों की दृष्टि से अत्यन्त शुभ, दुःख दारिद्रय से मुक्ति, स्नायु संस्थान सम्बन्धी कष्ट व रोग दूर हो जाते हैं । घुटने व पिंडली सम्बन्धी, बद्ध कोष्ठता जैसे रोग दूर हो जाते हैं । यदि ३६ से ४२ वर्ष के मध्य की अवस्था है तो भाग्योदय हेतु तैयार रहना चाहिए ।

आप अपनी शुभता, अनुकूलता, ऐश्वर्य, सुख, धन, यश, कीर्ति बढ़ाने के लिए निम्न यंत्र को भोजपत्र पर लिख कर १०८ बार मंत्रोच्चार सहित व उन्हें तदुपरान्त जल में प्रवाहित कर देना चाहिए । यंत्र की पूजा या घर में सदैव के लिए ताम्रपत्र पर लिख कर, उत्कीर्ण कर रखना व मन्त्र पाठ १००% शुभत्वकारी है । धनदायक व दारिद्रयनाशक है—

यंत्र—

१२	७	१४
१३	११	९
८	१५	१०

मंत्र—ॐ शन्नो देवी रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये शयोरभिस्त्रवन्तु न : ॥

दान—तेल, तिल, उड़द, जूते, लौह, पंच धातु, काले वस्त्र, गौ, भैंस ।

आपको ध्यान है अंक छः के साथ आपके उच्च स्तरीय संबंध हैं अतः ६।१५।२४ तारीखें सर्वोत्तम फल देंगी ।

यदि ६।१५।२४ तारीख को शुक्रवार है तो अत्यन्त ही शुभ फल प्रदान होंगे । इष्टसिद्धि व नवनिद्धि को प्राप्त होंगे । वृष व

तुला राशि वाले व्यक्ति इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वै, वो व, रा, रा, री, रु, रे, रो, ती, तू, ते नाम के प्रथमाक्षर वाले जातक वे जिनका जन्म कृतिका के २।३।४ चरण में रोहिणी व मृगशिरा के प्रथम दो चरण में हुआ है या जिनका जन्म चित्रा व अन्तिम दो चरण में, स्वाति व विशाखा के ३ चरण तक में हुआ है, आपके अच्छे व श्रेष्ठ साथी सिद्ध होंगे। यदि आप ब्राह्मण वर्ग से सम्पर्क सूत्र जोड़े या भाग्योदय में भी सहायता लें, व्यावसायिक कांट्रेक्ट करें या अपने अधिकारी वर्ग से समस्या समाधान वास्ते प्रयास करें तो सर्वोत्तम होगा। स्त्री जातक और वह भी यदि युवा हो तो उसकी सलाह कारगर होगी। प्रेम-प्रणय के मामलों मे सफल होंगे। घर की समस्याओं का निराकरण पत्नी की मदद से करना उचित रहेगा। रंग-रंगीले, चटक व तेज रंग आपके व्यक्तित्व में निखार लायेंगे। दैनिक उपयोग की वस्तुओं में इसी रंग को प्राथमिकता दें।

यात्रा व गमनार्थ आग्नेय दिशा सर्वथा श्रेष्ठ रहेगी इसी दिशा में अपना कार्य-क्षेत्र बनाए व सम्पर्क साधें। स्वभाव में लघुता, धीमापन व धैर्य तथा शान्ति बनी रहेगी। रजो गुण की प्रधानता। भ्रमण, मनोरंजन व भोज की ओर अधिक आसक्त होंगे। जल तत्व की प्रधानता के कारण आर्द्र स्थान, ठंडे स्थान, ध्रुव-प्रदेश, समुद्र या नदियों के किनारे बसे नगर-गाँव अधिक सहायक व धन लाभ में हितकर होंगे। बसंत ऋतु भी आपका अनुकूल कुछ विशेष रहेगी। मजबूत व दृढ़ वस्त्रों का उपयोग करें।

संभव हो तो आप स्वर्ण आभूषण पहनें तथा हीरा पहनना बहुत श्रेष्ठ रहेगा, भाग्य में सहायक एवं जीवन दृष्टिकोण में आगे बढ़ायेगा। वर्चस्व बढ़ेगा, ऐश्वर्य वृद्धि, भाग्य में अनुकूलता, समाज में सम्मान वृद्धि, व्यापार में यकायक वृद्धि होगी।

पत्नी व पत्नी पक्ष से आप शुभ व अनुकूल समाचार पायेंगे। पत्नी से सुख व भोग में वृद्धि, ऐश्वर्य प्रसाधनों की खरीददारी बढ़ेगी। मनुष्य मात्र आपके लिए सहायक होंगे। शयनागार, कौकुतागार, भोग स्थान सजायेंगे पक्ष तक प्रभाव अक्षुण्य रहेगा। संगीत व वाद्य का अभ्यास बहुत अनुकूल, भाग्यवर्धक व शुभ

रहेगा। विद्वद समाज में आदर व ग्राम्य वातावरण में विशेष भाग लेंगे। अस्तु

यदि २८ वां वर्ष चल रहा है तो आपको भाग्य वृद्ध के लिए अधिक प्रयास करना चाहिए।

११	६	१३
१२	१०	८
७	१४	९

यंत्र पूजा—निम्न यंत्र भोजपत्र पर प्रातः अष्टगंध से लिखें व उसे जल में प्रवाहित करें—

यन्त्र लेखन के साथ-साथ निम्न मन्त्र का जाप भी सर्वथा आवश्यक है—

ॐ अन्नात् परिस्त्रुतोरसं ब्रह्मणा व्यापिबत् क्षत्रं पत्रः सोम प्रजापतिऋतेन सत्य मिन्द्रियं विपान घुं शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रिय पयोमृतम्मधु इन्द्रस्येन्द्रियमिदं। पयोमृतम्मधु ॥

दान—हीरा, स्वर्ण, रजत, चावल, मिश्री, दूध, दही, सफेद वस्त्र, अश्व, चंदन, घृत, सुगन्धित द्रव्य, वाहनादि।

अंक एक व तारीख १।१०।१९।२८ के साथ आपके नीचता पूर्ण व्यवहार होने के कारण तत्संबंधी कार्यों से बचने का प्रयास करना चाहिए।

१।१०।१९।२८ को यदि रविवार है तो और भी कहीं अधिक सावधान रहने का प्रयास करें। रविवार स्वतः ही अशुभ होने के कारण और अधिक असफलतासूचक रहता है। अश्विनी, भरणी व कृत्तिका के प्रथम चरण, विशाखा के अंतिम चरण, अनुराधा व ज्येष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न व्यक्ति, चू. चे. चो. ला. ली. लू. ले. लो. अ ब तो. ना. नी. नू. ने. नो. या. यी. यू. जिनके नाम का प्रथम अक्षर है अथवा वे व्यक्ति जिनकी राशि मेष या वृश्चिक है, सर्वथा धोखेबाज, अशुभ, प्रतिकूल व दोषी रहेंगे। क्षत्रिय जाति

के व्यक्ति से आप कतई सावधान रहें। पुरुष वर्ग व वृद्ध जन अशुभताकारक रहेंगे। भूल कर भी कालिमा-युक्त लाल रंग का उपयोग, खान-पान व पहनने करने में न करें।

पूर्व दिशा में यात्रा करना भी अशुभता मूलक है एवं स्वभाव में स्थिरता व सत्वगुण में न्यूनता दृष्टिगोचर होगी। व्यर्थ विवाद व कलह का वातावरण बनेगा। आपसी मतभेद पीड़ा देंगे, हितैषी शत्रु बन कर उभरेंगे। मन की चलायमता कोई कार्य पूर्ण न करने देंगे। अग्नि से जलने, विद्युत से हानि, धातु से चोट व अन्याय प्रकार से गर्मी व अग्नि तत्व संबंधी दुष्परिणाम भोगने होंगे। ग्रीष्म ऋतु मानसिक तनाव कारण व दुविधाकारक रहेगी। मोटे वस्त्रों का उपयोग भूल कर भी न करें। ताम्र पात्र, माणिक्य की अंगूठी पहने हुए हैं तो कृपया उतार दें। पक्षी जगत अशुभ है।

भक्ति, देवराधना, कर्मकाण्ड व धार्मिक कृत्यों से विमुखता एवं नास्तिक भाव बढ़ जायेगा जिसका प्रभाव लगभग छः माह तक बना रहेगा। भूल कर भी राजनीति का अध्ययन व राज-नीतिक क्रिया-कलापों में भाग न लें। पर्वतीय स्थल, पठारी भाग व वनीय स्थल अशुभता सूचक हैं।

पिता से विरोध व वैचारिक मतभेद बना रहेगा। आत्मिक सुख-सुविधा में बाधा व मानसिक तनाव, हड्डो पर चोट व दर्द तथा सिर से मुख तक के भाग पर गिरने से या वाहन एक्सीडेंट से चोट लग सकती है। यदि आप २४ से २५ वर्ष की अवस्था में हैं तो भूल कर भी भाग्योदय हेतु प्रयास न करें। लाल वस्तु का दान न दें यथा माणिक्य, स्वर्ण, ताम्र, गेहूँ, गुड़, घी, लाल वस्त्र, रक्त पुष्प, रक्त चंदनादि।

अंक ५ व ६ के साथ मैत्री भरा संबंध होने के कारण ये तारीख अर्थात् ५।१४।२३ एवं ६।१८।२७ शुभ फल प्रदान करेंगे जिनका फल निम्न प्रकार समझें—

शुभ तारीखें—५।१४।२३ और ६।१८।२७

शुभ वार—मंगल एवं बुध तथा विशेष कर ५।१४।२३ को बुध एवं ६।१८।२७ को मंगलवार।

शुभ नक्षत्र—५।१४।२३ को मृगशिरा के अंतिम दो चरण,

आर्द्रा व पुनर्वसु के प्रथम ३ चरण एवं उ. फाल्गुनी के २।३।४ चरण हस्त व चित्रा के प्रथम दो चरण एवं ९।१८।२७ को अश्विनी भरणी व कृतिका का प्रथम चरण व विशाखा का अंतिम चरण अनुराधा व ज्येष्ठा नक्षत्र।

शुभ नाम का प्रथमाक्षर—९।१८।२७ तारीख को चू. चे. चो. ला, ली, लू, ले. लो. अ ब तो ना. नी. नू. ने. नो. या. यी. यू एवं ५।१४।२३ को का. की. छ. घ. ड. छ. के. को. ह. व रो. पा. पी. पू. ष. ण. ठ. पे. पो।

शुभ राशि—५।१४।२३ को मिथुन व कन्या व ९ १८।२७ को मेष व वृश्चिक राशि।

शुभ जाति—५।१४।२३ तारीख को शूद्र वर्ग एवं ९।१८।२७ को क्षत्रिय वर्ग।

शुभ रंग—५।१४।२३ तारीख को कालिमा युक्त हरा एवं ९।१८।२७ तारीख को कालिमा युक्त लाल रंग।

शुभ लिंग—५।१४।२३ को वृद्ध एवं नपुन्सक तथा ९।१८।२७ तारीख को वृद्ध पुरुष।

शुभ दिशा—५।१४।२३ तारीख को उत्तर दिशा एवं ९।१८।२७ तारीख को दक्षिण दिशा।

स्वभाव—५।१४।२३ तारीख को मिश्र व रजोगुण की प्रधानता तथा ९।१८।२७ को स्वभावतः उग्रता तमोगुण का बाहुल्य रहेगा।

शुभ तत्व—५।१४।२३ तारीख को पृथ्वी तत्व की प्राबल्यता व ९।१८।२७ तारीख को अग्नि तत्व की प्रधानता रहेगी।

ऋतु—५।१४।२३ तारीख की शरद ऋतु ९।१८।२७ को ग्रीष्म फल विशेष शुभ प्रदान करेंगी।

शुभ द्रव्य—५।१४।२३ को काँस्य व सीप एवं ९।१८।२७ को स्वर्ण प्रधानता देगा।

शुभ रत्न—५।१४।२३ को पन्ना व ९।१८।२७ को प्रबाल सर्वाधिक शुभ रहेगी।

शुभ कार्य-स्थल—५।१४।२३ तारीख को क्रीड़ागार जिसका प्रभाव ऋतु पर्यन्त एवं ९।१८।२७ को अग्नि स्थल जिसका प्रभाव

दिन पर्यन्त रहेगा।

शुभतार्थ अध्ययन—५।१४।२३ तारीख को गणित और ९।१८।२७ को युद्धाभ्यास व वीर साहित्य सर्वथा उपयुक्त रहेगा।

कार्य-स्थल—१।१४।२३ को विद्वद ग्राम्य समाज व ९।१८।२७ तारीख को पर्वतीय व वनीय भाग।

सुख व शरीरारोग्य—५।१४।३३ को बहिन बहिन परिवार, वाणी, त्वचा, व हाथ-पाव संबंधी रोग से मुक्ति एवं ९।१८।२७ तारीख को बहिन व उनका परिवार, शक्ति मज्जा व उदर व्याधि से चिन्ता मुक्त होंगे।

भाग्योदयार्थ प्रयास—५।१४।२३ को यदि ३५।३६ वाँ वर्ष चल रहा हो एवं ९।१८।२७ को यदि ३०।३२ वाँ वर्ष है।

शुभ यन्त्र—५।१४।२३ तारीख को—

९	४	११
१०	८	६
५	१२	७

९।१८।२७ तारीख को

		१	
२	८	१०	
	३		
	७	९	४
	५		

शुभ मंत्र—५।१४।२३ को—ओम् ॐ बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृति

त्वमिष्ला पूर्तेस घुं सृजेधामयं च। अस्मिन् सधस्थे अध्यु त्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत ॥

९।१८।२७ को—ओम् अग्निर्मूर्द्धा दिग्व : ककुत्पतिः पृथिव्य अयम। अपा घुं रेता घुं सि जिन्वति ॥

दान—५।१४।२३ तारीख को पन्ना, स्वर्ण, मूंगा, कांस्य पात्र घृत, शंकर, कपूंर, हरा वस्त्र, हाथी दांत व पंच रत्न तथा ९।१८।२७ तारीख को मूँगा, स्वर्ण, गेहूँ, ताम्र, मसूर, गुड़, घी, रक्त वस्त्र, रक्त चंदन, केश रादि।

अंक २।४।७ के साथ सर्वथा शत्रु भाव प्रधान है अतः अंक २।११।२०।२९, ४।१३।२२।३१ व ७।१६।२५ ता:० को खूब सावधान रहें—निम्न सावधानियाँ अपेक्षित हैं—

अशुभ तारीखें—२।११।२०।२९, ४।१३।२२।३१ और ७।१६।२५

अशुभ वार—सोम

अशुभ नक्ष—पुनर्वसु अंतिग चरण, पुष्य व आश्लेषा।

अशुभ प्रथम नामाक्षर—ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो

अशुभ राशि—कर्क।

अशुभ जाति—वैश्य **अशुभ रंग**—सफेद

अशुभ लिंग—स्त्री **अशुभ जाति**—युवा

अशुभ दिशा—वायव्य **स्वभाव**—फिर **गुण**—सत्व गुण

अशुभ तत्व—जल तत्व **ऋतु**—वर्षा **वस्त्र**—नवीन

अशुभ द्रव्य—चांदी **रत्न**—मोती **पशु पक्षी**—सरीसृप

आशुभ कीड़ा स्थल—जलाशय **समय**—क्षणिक **अध्ययन**—ज्योतिष

अशुभ कारक स्थल—पर्वतीय व वनीय भाग

अशुभ सम्बन्ध—माता, मन, रक्त, गले से हृदय तक भाग

अशुभ भाग्योदयार्थ प्रयास—यदि २५वाँ वर्ष चल रहा है।

दान—मोती स्वर्ण, रजत, कपूंर, चावल, मिश्री, दूध, दही श्वेत वस्त्र, शंख, पुस्तकादि।

शुभाशुभ तारीखें

तारीखें	शुभाशुभ	तारीखें	शुभाशुभ
१	नि:कृष्ट	१७	उत्तम
२	अशुभ	१८	सुन्दर
३	शुभ	१९	निकृष्ट
४	अशुभ	२०	अशुभ
५	उत्तम	२१	शुभ
६	सर्वोत्तम	२२	अशुभ
७	अशुभ	२३	उत्तम
८	उत्तम	२४	सर्वोत्तम
९	सुन्दर	२५	अशुभ
१०	निकृष्ट	२६	उत्तम
११	अशुभ	२७	सुन्दर
१२	शुभ	२८	नि:कृष्ट
१३	अशुभ	२९	अशुभ
१४	उत्तम	३०	शुभ
१५	सर्वोत्तम	३१	अशुभ
१६	अशुभ		

अंक नौ (९)

९।१८ और तारीख को आपका भी जन्म हुआ है अतः आपका भी अंक ९ हैं और अंक होने के कारण आप कहीं अधिक भाग्यशाली है और भाग्य बल पर मंगल का प्रभुत्व है, वर्चस्व है।

महेंद्र कपूर, निक्सन, जार्ज स्टीफेंसन, शशि कपूर ओना सीस, काका हाथरसी, प्रेसीडेंट जॉनसन, के० के० शाह, नौशाद, राजा एडवर्ड भी निम्मी, तबस्सुम, अयोध्या सिंह उपाध्याय, जान मिल्टन, रामकृष्ण परमहंस, जया भादुड़ी, बेला बोस, अश्विनी कुमार व गोलवल्कर, ललिता पवार आदि भी आपके ही अंक से प्रभावित जातक हैं। आपको चाहिए कि आप इनके जीवन चरित्र से प्रेरणा लें। सचमुच यह अंक सर्वोच्च अंक है।

आपका यह अंक विविधता, सुदृढता, साहस, तेजस्विता, सम्पन्नता का प्रतिनिधित्व करता है। आप एक ऐसे व्यक्ति हैं जो

मान-सम्मान, इज्जत, मर्यादा पर मर मिटते हैं। महाधुनी, स्वभावतः क्रोधी एवं स्वयं का एक अलग-अलग का व्यक्तित्व लिए रहने वाले प्राणी हैं। हार कर भी हार मानते नहीं, इज्जत पर कभी आँच आने देते नहीं, नीचा देख कर जीना जीते नहीं व घर फूंक तमाशा देखने से चूकते नहीं। विपत्ति रूपी पाठशाला में पढ़ कर बड़े होते हैं। विस्फोटक स्थिति में कहीं अधिक विश्वास करते हैं।

आप का बाह्य शक्ति रूप यद्यपि कमजोर दिखता है। कृश काय पर आंतरिक शक्ति गजब की है। उग्रता, पंचडता, अक्खड़पन में आगे। कोई विरोध आपके आगे टिकता ही नहीं है। प्रभविष्णु दोहरा-मोहरा, चमकदार-पानीदर नेत्र, दोस्ती भरा तेज ऐसा कि लोग स्वतः आपकी ओर खिचते हैं नासिका तीखी, मध्यम कद व गोल चेहरा, मजबूती ऐसी कि देखते बनता है। किसी के आश्रय के हिमायती नहीं, आत्म-विश्वास के बल पर बड़े से बड़ा खतरा उठा लेते हैं।

पुलिस व सैन्य विभाग आपके वास्ते अधिक उपयुक्त है। साहसिक कार्यों में सदैव विजयी रहते हैं। क्रोधाधिक्यता आपको झट आप से बाहर कर देती है और मरने मारने पर उतारू हो जाते हैं। व्यवसाय की दृष्टि से आपके लिए संगठन कार्य, संघ संचालन, नियन्त्रण, चिकित्सा, ज्योतिष, धर्मोपदेशक का कार्य, गोला-बारूद, आतिशबाजी का व्यवसाय, बकालत, धातु कार्य, प्रभुता कार्य प्रमुख हैं।

आप अद्‌भुत व आश्चर्यजनक कार्यों से यश, कीर्ति व धन कमा सकते हैं। सीने पर हाथी चढ़ा लेना, जंगलों दुर्जन घाटियों, थार सम रेगिस्तानों, ध्रुव-प्रदेशों की ठिठुरती ठंड में आप जीवन यापन कर सकते हैं। जीते जी आग में कूदने को तैयार रहते हैं। आपके कार्यों में सुस्ती नहीं चुस्ती है, जल्दीपन पर अपने कार्य के प्रति उचित व सही निर्णय लेने की क्षमता, सही दृष्टिकोण से सोचना व विचारना। धुनी होने के कारण कोई कार्य अधूरा नहीं छोड़ते।

भाषा में तीखापन, बात का तरीका मजबूत व दृढ़ तथा तीव्र,

ऊपर से कठोर क्रूर व तेज भीतर से उतने ही नम्र, कोमल, उदार व परोपकारी। पूर्वजों की चली आई संस्कृति व सभ्यता को आप छोड़ नहीं सकते। पूर्ववत् अनुकरण आपका नियम है। परम्पराओं में जीते व मरते हैं।

अनुशासन आपके जीवन का प्रमुख गुण है, पहली जरूरत है। अनुशासन का उल्लंघन जहाँ स्वयं नहीं करते वहाँ यह भी चाहते हैं कि दूसरे भी अनुशासन का पालन करें। जहाँ आपका कार्यालय है वहाँ आपका वर्चस्व भी इसी कारण बना हुआ है। नेतृत्व करने की अद्भुत कला आपमें है। एकता चाहते हैं समय पर कार्य का आरंभ व समय पर कार्य की पूर्ति भी चाहते हैं।

जहाँ तक परिवार का, गृहस्थ का प्रश्न है विपरीतता बनी रहती है। माता-पिता के स्नेह-भाजक व सेवक पर पत्नी-पति में सदैव तू-तू मैं-मैं बनी रहती है कारण है आप दोनों में वैचारिक मतभेद। झल्लाहट, क्रोध, उद्वेग पर आपको नियन्त्रण रखना चाहिए। पक्के राष्ट्रभक्त झूठे व चापलूसों से घृणा, हेरा-फेरी से चिढ़ रहती हैं। आप स्पष्टवादी हैं अतः झूठ व आडम्बर से, प्रपंचों से नफरत बनी रहती है। इतने पर भी जप, तप, मन्त्र, तंत्र पौराणिक साहित्य, वेद-पुराण, यज्ञादिक कार्यों में पूरा-पूरा विश्वास व श्रद्धा रखते हैं।

प्रबंध-पटुता आपमें दर्शनीय, श्लाघनीय है। परिस्थितियों के अनुकूल न होकर स्वयं परिस्थितियों को अपने अनुकूल बना लेने की क्षमता रखते हैं आप। हर मुश्किल, हर विपत्ति का आप डट कर मुकाबला करते हैं उल्टे विपरीत परिस्थितियों में कार्य करने में आपको अधिक आनंद आता है, व्यक्तित्व निखरता है।

मितव्ययता आप छोड़ नहीं सकते। धन को व्यय करने में, बात करने में, प्रेम व वासना या सेक्स तक में भी मितव्ययता छोड़ नहीं सकते। अधिक व फिजूलखर्ची, ज्यादा बोलना, विषय वासना के पीछे भागना अभीष्ट नहीं। मितव्ययता आपकी कंजूसी नहीं है, इज्जत व मर्यादा की रक्षार्थ आप दोनों हाथ से पैसा उछा-लते हैं। किसी का कष्ट, पर जन का दर्द आप नहीं सहन कर सकते। ऐसों की रक्षा व मदद आप तन-मन-धन से करते हैं।

तड़क-भड़क व आडम्बर का शौक कुछ विशेष रहता है। प्रदर्शन के प्रिय हैं आप। भीतर से खोखले होकर भी ऊपर से तड़क-भड़क व शान-शौकत बनाए रखना चाहते हैं। लोग आपके बारे में कभी भी सही अनुमान लगा ही नहीं सकते!

प्रबंध-पटुता आप में दर्शनीय है। प्रेम पात्र के लिए आप सर्वस्व न्यौछावर कर सकते हैं। यदि कोई विपरीत लिंगी आपसे प्रेम प्रसंग जोड़े तो आपको खूब बेवकूफ बनाया जा सकता है। अपने भाग्य के स्वयं आप निर्माता हैं। किसी की सहायता के मोहताज नहीं। अपने स्वभाव पर नियन्त्रण कर लें तो आप दर्शनीय उन्नति कर सकते हैं। दुर्घटनाओं से सदैव सावधान रहें।

आवारापन, व्यर्थ खर्च, नशीली वस्तु का सेवन, अश्लील साहित्य पठन, गलत संगत, मद्यपान, फैशनपरस्ती, सेक्सी फिल्में देखना, गंदी बात करना आपको पसंद नहीं।

आप नारी हैं तो हैं प्रशंसा की पात्र, जीवन में कदम-कदम पर संघर्ष झेला है, कठिनाइयों से जूझी हैं पर कभी हारी नहीं, टूटी नहीं। धैर्य व कठिन संघर्ष को साथी माना है। व्यक्तित्व का ऊपरी खोल कठोर हो चुका है पर भीतरी भाग आज भी कोमल है।

परिस्थितियों को अनुकूल बनाना कोई सीखे आपसे। सही व त्वरित निर्णय लेने की अद्भुत क्षमता आपमें है। जिम्मेदारी आप से अधिक तो कोई निभा नहीं सकता। सलाह आपकी मूल्यवान है। सिद्धान्त आपके सुदृढ़ है। टूटना आपके लिए संभव है पर झुकना नहीं। आपके जीवन में विविधता में एकता है। बाह्याडम्बर व प्रदर्शन-प्रिय रहता है। समाज में मान, सम्मुनत जीवन, मर्यादा की इच्छा रहती है। कार्य की गति अति तीव्र कदम, हर कदम पर अनुशासन रहता है।

सब कुछ होकर भी आपका अंक ९ होने के कारण आपमें कुछ दोष हैं उन्हें दूर करने का प्रयास करें। वे दोष हैं—

(१) बात-बात में रूखेपन की आदत अच्छी नहीं, इसे छोड़ दें कारण आपके भीतर कुछ नहीं पर लोग गलत सोच व समझ बैठते हैं। व्यवहार-कुशलता व नीतिज्ञता को अपनाना आवश्यक है।

(२) क्रोध व झुँझलाहट पर भी नियन्त्रण करें, इससे व्यर्थ आप शत्रु बना लेते हैं। घर के लोग आप से भयभीत व खिंचे-खिंचे से रहते हैं।

(३) अनावश्यक खतरा उठाने व लापरवाही के कारण आप बार-बार दुर्घटनाओं के शिकार हो जाते हैं। अनेक बार आर्थिक हानि सहनी पड़ती है। कई बार आत्मसम्मान पर ठेस लगती है।

(४) अधिक स्पष्टवादिता लोग पचा नहीं सकते। समय के अनुसार स्वयं को बदलें एवं अधिक धुनी होना भी ठीक नहीं।

(५) व्यर्थ दिखावा व प्रदर्शन-प्रियता पर भी अंकुश रखें। मेष व वृश्चिक आपकी राशि है फलतः उक्त राशि वालों के साथ आपकी बहुत अच्छी निभेगी। वे भाग्योदय में धन देने, साझीदार के रूप में या मित्र, प्रणय साथी या अधिकारी रूप में अच्छे सहायक होंगे। साथ ही में वे व्यक्ति जिनका जन्म अश्विनी-भरणी-कृतिका के प्रथम चरण या विशाखा के अंतिम चरण अनु-राधा या ज्येष्ठा नक्षत्र में जन्म हैं वे या चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू, नामाक्षर वाले व्यक्ति भी श्रेष्ठ फलदायक होंगे। उनसे आप मनमाना काम ले सकते हैं। क्षत्रिय वर्ग के लोग आपको शुभ रहेंगे। लाभ देंगे। इनके साथ प्रेम-प्रसंग बढ़ायें या व्यापारिक गठबंधन करें, अच्छे सहायक सिद्ध होंगे।

घर के पर्दे, कमरें की दीवारे, जालियाँ, वस्त्र बैडशीट, दैनिक उपयोग की वस्तुएँ, पेन-पेंसिल-मोजे-तकिये के गिलाफ आदि गौरवर्ण युक्त, चाकलेटी, पीले या लाल रखें तो अति शुभ होगा। पुरुष जातक एवं वे भी बालक आपके लिए सफलतामूलक रहेंगे।

अंक ८ आपके लिए उच्चता का द्योतक है अर्थात् शनि के साथ आपकी खूब निभती है। इस प्रकार ८।१७।२६ तारीख श्रेष्ठतम फल देती हैं वहीं कर्क रशि से शत्रुता का व्यवहार है अतः कर्क राशि वालों के साथ भूल कर भी अधिक अपना व्यव-हार न बढ़ाएँ। इस प्रकार ७।१६।२५ २।११।२०।२९, ४।१३। २२।३१ तारीखें सर्वथा-सर्वथा अशुभ फल प्रदान करेंगी। अंक १

व ३ मित्र होने के नाते तारीख १।१०।१६।२८, ३।१२।२१।३० मित्रता रूप फल प्रदान करेंगी। इन तारीखों से आपको लाभ अवश्य उठाना चाहिए। अंक ५ से शत्रुता है अतः ५।१४।२३ तारीख दुःखदायी, कष्टप्रद रहेंगी। ३।१२।२१।३० तारीख से सात्विक भाव, १।१०।१६।२८ से राक्स व ५।१४।२३ से शत्रु भाव प्रधान रहेगा।

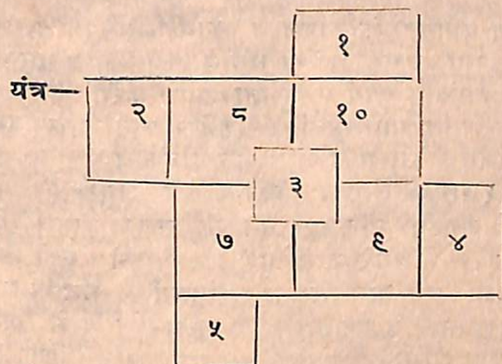
६।१८।२७ तारीख जो दैनिक कार्य के लिए मिलने-भेंटने, साक्षात्कार, सम्पर्क बढ़ाने, यात्रा आदि के लिए दक्षिण दिशा का लाभ अवश्य लेना चाहिए। स्वभाव में उग्रता के कारण वीरोचित कार्य अधिक सफलता प्रदान करेंगे। तमोगुण की प्रबलता रहेगी, यश व मान बढ़ेगा उससे। यश के भागी व शत्रुओं को नीचा दिखाते हुए धन लाभ प्राप्त करेंगे। अग्नि तत्व की प्रधानता के कारण ज्वलनशील पदार्थ, ईंधन, विद्युत, तेल, धातु, भूमि, मशीनी कार्य, वाहन आदि से सर्वाधिक लाभ पायेंगे। ग्रीष्म ऋतु सौभाग्य सूचक रहेगी।

आपको चाहिए कि आप ६।१८।२७ तारीख को स्वर्णाभूषण धारण करें एवं प्रवाल युक्त स्वर्ण मुद्रिका पहनें, इससे आपका व्यक्तित्व निखरेगा, वर्चस्व बढ़ेगा, आधे-अधूरे कार्य पूर्ण कर लाभान्वित होंगे। पशु जगत् से भी अधिक लाभ की संभावना रहती है। पशु के क्रय-विक्रय से खूब लाभ उठायेंगे। युद्धाभ्यास, वीरोचित्त साहित्य का अध्ययन व शक्ति सामर्थ्य के कार्य पूर्ण करना चाहिए। पर्वतीय व वनीय स्थान मदद देंगे। वहीं भाग्य का निपटारा हो सकता है।

बहिन व बहिन का परिवार, शक्ति-साहस व सामर्थ्य, मज्जा व उदर रोगादि से छुटकारा मिलेगा। यदि ३० से ३२ वर्षायु के मध्य आयु है तो भाग्योदय के लिए आप मनचाहे प्रयास कर सकते हैं। प्रार्थना पत्र देना, साक्षात्कार यात्रा आदि शुभ रहेगी।

आप निम्न वीशा यन्त्र प्रातः नित्य कर्म से निवृत्त होने के बाद १०८ बार भोज-पत्र पर लिख कर उसे जल में प्रवाहित करना अत्यन्त शुभ रहेगा।

यंत्र—



मंत्र—यंत्र निर्माण के साथ-साथ निम्न मंत्र का निरन्तर जाप होना चाहिए। यों आपको नित्य ही निम्न मंत्र का जाप अति शुभ रहता है।

ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपा घुं रेता घुं सि जिन्वति ॥

दान—मूँगा, स्वर्ण, गेहूँ, ताम्र, मसूर, गुड़, घृत, रक्त वस्त्र, कनेर पुष्प, रक्त चंदन, केशरादि।

आपको ध्यान है अंक ८ के साथ श्रेष्ठ सम्बन्ध है। अतः तारीख ८।१७।२६ व शनिवार सर्वोत्तम फलदायी रहेगा अतः इन तारीकों का सदुपयोग येन-केन अवश्य करना चाहिए। आपके लिए मकर व कुम्भ राशि, उत्तराषाढा नक्षत्र के अंतिम तीन चरण, श्रवण, घनिष्ठा, शतभिषा, व पूर्वाभाद्र पद के चरण, भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी, गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा नाम के प्रथमाक्षर वाले व्यक्ति आपको हितकारी रहेंगे एवं भाग्योदय में सहायता प्रदान करेंगे। इनसे व्यावसायिक यथेष्ठ लाभ रहेगा। अच्छे मित्र, अधिकारी व साझेदार सिद्ध होंगे। प्रेम-प्रणय और व्यवहार में श्रेष्ठ तथा सामाजिक सम्मान में उपयुक्त रहेंगे।

आपको यात्रा करना यदि आवश्यक ही हो गया है या किसी से संपर्क सूत्र जोड़ना है या कहीं गमन करना है तो पश्चिम दिशा को आप जरूर प्राथमिकता दें। स्वभाव में तीक्षणता शुभत्व प्रदान

करेगी । तमोगुण प्रधानता के कारण वे कार्य जिसमें जोश, शक्ति रहे, ऐसे कार्य करना उत्तम रहेगा । वायु तत्व की प्रधानता के कारण वायु यात्रा संबंधी कार्य में शुभता प्राप्त करेंगे । यदि वायु रोग हैं तो उससे शांति प्राप्त होगी । शिशिर ऋतु भाग्योदय में सहायक, धनोपार्जन में उत्तम व श्रेष्ठ फल दायक है ।

आपको ८।१७।२६ तारीख को लोहे की अंगूठी या काले घोड़े के नाल की अंगूठी, नीलम पहनने की सलाह दूँगा । ऐसा करने पर समस्त आधे-अधूरे कार्य पूर्ण हो जायेंगे । रुका धन, गया या दिया हुआ धन मिल सकेगा । ऐश्वर्य में वृद्धि होगी । कूड़ाघर, गलत स्थल, जुआखाना व नाच घर आदि से लाभ, मौलिक क्रियाओं में अभिरुचि बढ़ेगी । इस समय प्रारंभ किए कार्य का प्रभाव वर्ष पर्यन्त रहेगा । कानून का अध्ययन, अध्यापन, कोर्ट—कचहरी के कार्य, मुकदमे बाजी आदि में उत्तमोत्तम फल प्राप्त करेंगे । पर्वतीय, पठारी, बनीले भाग जीवन निर्माण में अधिक सहायक होंगे ।

नौकर-चाकरी की व वाहन की समस्या से मुक्ति पायेंगे । भृत्य सहायक होंगे । अन्यान्य दुखों से छुटकार प्राप्त करेंगे । स्नायु संस्थान से बंधी यदि कोई रोग या कष्ट है तो उससे छुटकारा पा सकेंगे या सहायता मिलेगी ।

यदि आय ३६ से ४२ वर्षायु के मध्य हैं तो भाग्योदय के लिए विशेष प्रयास करना चाहिए । साक्षात्कार, मिलना भेंटना या यात्रा, उत्तम, सफलता जन्य रहेगी । प्रातः उठ कर निम्न यन्त्र को भोज पत्र पर निम्न मंत्र का जाप करते हुए १०८ बार लिखें और उन्हें जलाशय में बहा देना उत्तम है ।

यंत्र—

१२	७	१४
१३	११	९
८	१५	१०